राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 जेलेंस्की और पुतिन से नरसंहार रुकवाने के लिए बात करेंगे ट्रंप....

पीएम मोदी ने एशिया कप जीतने पर दी भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम को बधाई.....11

वर्ष : 12 | अंक : 244 | पटना, बुधवार, 18 दिसम्बर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 22.0°C

न्यूनतम तापमान 12.0°C

बाजार

सोना 75,920

चांदी 91,900

सेंसेक्स 83,584

निफ्टी 25,698

सीएम नीतीश 23 दिसंबर से प्रगति यात्रा का करेंगे आगाज

पहले चरण में 23 से 28 दिसंबर तक 5 जिलों की करेंगे यात्रा

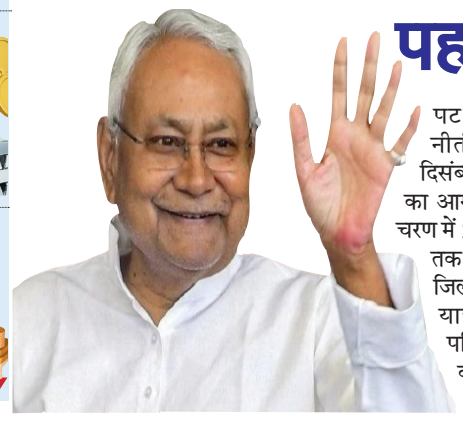

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार 23 दिसंबर से प्रगति यात्रा का आगाज करेंगे। पहले चरण में 23 से 28 दिसंबर तक वो बिहार के 5 जिलों की यात्रा करेंगे। यात्रा का आगाज पश्चिम चंपारण से करेंगे। यात्रा के क्रम में वे क्षेत्र का भ्रमण करेंगे और जिलास्तरीय समीक्षा बैठक करेंगे। जानकारी के अनुसार, मुख्यमंत्री की यह यात्रा महिला संवाद यात्रा से बिल्कुल ही अलग है। प्रगति यात्रा मंत्रिमंडल सचिवालय की तरफ से आयोजित की गई है, वहीं महिला संवाद यात्रा का आयोजन ग्रामीण विकास विभाग की तरफ से किया जा रहा है। इस यात्रा में डिप्टी सीएम सह वित्त मंत्री या ग्रामीण विकास मंत्री शामिल होंगे।

23 दिसंबर से शुरू हो रही प्रगति यात्रा

नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा की शुरूआत 23 दिसंबर से पश्चिम चंपारण से होगी। 24 दिसंबर को नीतीश कुमार पूर्वी चंपारण में रहेंगे। 25 दिसंबर को क्रिसमस की छुट्टी रहेगी। 26 दिसंबर को नीतीश कुमार की प्रगति यात्रा शिवहर और सीतामढ़ी में होगी। 27 दिसंबर को मुजफ्फरपुर में नीतीश की प्रगति यात्रा होगी। 28 दिसंबर को वैशाली में पहले चरण की यात्रा का अंतिम दिन होगा।

सिर्फ प्रभारी मंत्री और स्थानीय मंत्री होंगे शामिल

जानकारी के मुताबिक, मुख्यमंत्री इस यात्रा के दौरान विकास योजनाओं की समीक्षा करेंगे। इस समीक्षात्मक बैठक में संबंधित जिले के प्रभारी मंत्री एवं जिले के निवासी मंत्री उपस्थित रहेंगे। इस बैठक में जिला पदाधिकारी सहित अन्य अधिकारी भी उपस्थित रहेंगे। मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा में जिले के प्रभारी मंत्री मौजूद रहेंगे। वहीं, जिस जिले में मुख्यमंत्री की यात्रा होगी, वहां के स्थानीय मंत्री मौजूद रहेंगे। जिलाधिकारी को मंत्रियों की उपस्थिति को लेकर आग्रह करने का निर्देश दिया गया। प्रगति यात्रा के दौरान होने वाली समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव एवं डीजीपी मौजूद रहेंगे। साथ ही निर्धारित विषयों से संबंधित विभागों के अपर मुख्य सचिव या सचिव बैठक में मौजूद होंगे। संबंधित विभागों के मंत्री एवं अन्य पदाधिकारी इन समीक्षात्मक बैठकों में वीसी के माध्यम से जुड़ेंगे। अन्य विभागों के सचिव भी वीसी के माध्यम से भाग लेंगे। इन समीक्षात्मक बैठकों में स्थानीय सांसद,स्थानीय विधायक, विधान पार्षद स्वेच्छा से भाग ले सकेंगे । लेकिन समीक्षा के बिंदु निर्धारित विषय वस्तु के अंतर्गत ही होंगे। समीक्षा संबंधित प्रपत्र बिहार विकास मिशन से मिलेगा।

संक्षिप्त खबरें

आगरा में यमुना एक्सप्रेस वे पर हादसा, चार मरे

आगरा। उत्तर प्रदेश में आगरा के खंदौली क्षेत्र में यमुना एक्सप्रेस वे पर सोमवार और मंगलवार की रात हुए हादसे में चार लोगों की मौत हो गई जबकि एक अन्य की हालत गंभीर है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हादसे पर दुख जताते हुये शोक संतप्त परिजनो के प्रति संवेदना व्यक्त की है और घायलों के उचित इलाज के निर्देश दिये है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि यमुना एक्सप्रेस-वे के 161वें किलोमीटर पर देर रात करीब डेढ़ बजे ट्रक और कैंटर में भिड़ंत हो गई, जिससे कैंटर गाड़ी एक्सप्रेस-वे के बीच रास्ते में खड़ी हो गई। इस दौरान पीछे से आ रही कार रुकी और उसमें सवार उतरकर कैंटर गाड़ी के चालक और क्लीनर का हाल-चाल जानने लगे। इस बीच पीछे से आई एक अन्य कार ने सड़क पर खड़े लोगों को रौंद दिया। इसमें चार की मौके पर मौत हो गई जबकि एक गंभीर रुप से घायल हो गया। कहा जा रहा है कि ट्रक और टैंकर में टक्कर होने से आगरा से नोएडा की तरफ जाने वाले मार्ग बंद हो गया था। पीछे से आ रही कार के चालक ने रास्ते में टैंकर और ट्रक खड़े होने पर ब्रेक लगाए। कार से चार लोग उतरे और ट्रक में फंसे लोगों की मदद करने के लिए पहुंचे। इसी दौरान आगरा से नोएडा की तरफ आ रही तेज स्पीड कार ने ट्रक चालक को बाहर निकालने के लिए खड़े कार सवार लोगों को चपेट में ले लिया।

एक साथ चुनाव संबंधी विधेयक संविधान और संघवाद के खिलाफ : प्रियंका

नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने मंगलवार को आरोप लगाया कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाला विधेयक संविधान एवं संघवाद के खिलाफ है। उन्होंने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, यह संविधान विरोधी विधेयक है। यह हमारे राष्ट्र के संघवाद के खिलाफ है। हम इसका विरोध कर रहे हैं। सरकार ने देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले विधेयक को विपक्षी दलों के भारी विरोध के बीच मंगलवार को निचले सदन में पेश किया। कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले संविधान (129वां संशोधन) विधेयक, 2024 और उससे जुड़े ह्यसंघ राज्य क्षेत्र विधि (संशोधन) विधेयक, 2024 को निचले सदन में पुर:स्थापित करने के लिए रखा, जिनका विपक्षी दलों ने पुरजोर विरोध किया।

एक देश, एक चुनाव विधेयक लोकसभा में पेश, पक्ष में 269 जबकि विरोध में 198 वोट पड़े

एक देश एक चुनाव : विधेयक को सत्ता पक्ष ने सराहा, विपक्ष ने किया विरोध

- विधेयक को जेपीसी के पास भेजा जाएगा
- इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम से कराई गई वोटिंग

प्रात: किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। सरकार ने देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले विधेयक को विपक्षी दलों के भारी विरोध के बीच मंगलवार को निचले सदन में पेश किया और कहा कि इस पर व्यापक विचार-विमर्श के लिए इसे संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजा जाएगा।कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ कराने के प्रावधान वाले संविधान 129वां संशोधन विधेयक, 2024 और उससे जुड़े संघ राज्य क्षेत्र विधि संशोधन विधेयक, 2024 को निचले सदन में पुर:स्थापित करने के लिए रखा, जिनका विपक्षी दलों ने पुरजोर विरोध किया। सदन में मत विभाजन के बाद संविधान 129वां संशोधन विधेयक, 2024 को पुर:स्थापित कर दिया गया। विधेयक को पेश किए जाने के पक्ष में 269 वोट, जबकि विरोध में 198 वोट पड़े। इसके बाद मेघवाल ने ध्वनिमत से मिली सदन की सहमति के बाद संघ राज्य क्षेत्र विधि संशोधन विधेयक, 2024 को भी पेश किया। दोनों विधेयकों को पुर:स्थापित किए जाने के बाद लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने अपराह्न करीब एक बजकर 55 मिनट पर सदन की कार्यवाही अपराह्न तीन बजे तक के लिए स्थगित कर दी। यह पहली बार था कि नए सदन में किसी विधेयक पर इलेक्ट्रॉनिक मत विभाजन हुआ। विधेयक पर विपक्षी दलों के विरोध के बीच, गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि जब मंत्रिमंडल में चर्चा के लिए विधेयक आया था, तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं मंशा जताई थी कि इसे संयुक्त संसदीय समिति के विचार के लिए भेजा जाना चाहिए। कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों ने विधेयक पेश किए जाने का विरोध करते हुए आरोप लगाया कि यह संविधान के मूल ढांचे पर हमला है तथा देश को तानाशाही की तरफ ले जाने वाला कदम है। उन्होंने यह भी कहा कि विधेयक को संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजा जाना चाहिए। भारतीय जनता पार्टी की प्रमुख सहयोगी तेलुगू देसम पार्टी और शिवसेना ने विधेयक का समर्थन किया। कानून मंत्री मेघवाल ने कहा कि एक साथ चुनाव कराने से संबंधित प्रस्तावित विधेयक राज्यों की शक्तियों को छीनने वाला नहीं है, बल्कि यह विधेयक पूरी तरह संविधान सम्मत है। उन्होंने विधेयक को जेपीसी के पास भेजने की विपक्ष की मांग पर भी सहमति जताई।

विधेयक का विपक्ष ने किया विरोध, कहा- बुनियादी ढांचे पर हमला

विधेयक का विरोध करते हुए कांग्रेस नेता मनीष तिवारी ने कहा कि यह विधेयक बुनियादी ढांचे पर हमला है और इस सदन के विधायी अधिकार क्षेत्र से परे है।

उन्होंने कहा कि भारत राज्यों का संघ है और ऐसे में केंद्रीकरण का यह प्रयास पूरी तरह संविधान विरोधी है। उन्होंने आग्रह किया कि इस विधेयक को वापस लिया जाना चाहिए। विधेयक का विरोध करते हुए समाजवादी पार्टी के धर्मेंद्र यादव ने दावा किया, यह संविधान की मूल भावना को खत्म करने का प्रयास है और तानाशाही की तरफ ले जाने वाला कदम है। यादव ने कहा कि इस विधेयक को वापस लिया जाना चाहिए। तृणमूल कांग्रेस के सांसद कल्याण बनर्जी ने कहा कि यह प्रस्तावित विधेयक संविधान के मूल ढांचे पर हमला है और यह अल्ट्रा वायर्स है। उन्होंने दावा किया कि इस विधेयक को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

आईयूएमएल के नेता ईटी मोहम्मद बशीर ने विधेयक का विरोध करते हुए कहा कि यह लोकतंत्र, संविधान और संघवाद पर हमले का प्रयास है। शिवसेना (उबाठा) के सांसद अनिल देसाई ने भी विधेयक का विरोध किया और कहा कि यह विधेयक संघवाद पर सीधा हमला है और राज्यों के अस्तित्व को कमतर करने की कोशिश है। लोकसभा में कांग्रेस के उप नेता गौरव गोगोई ने कहा कि ये दोनों विधेयक संविधान और नागरिकों के वोट देने के अधिकार पर आक्रमण हैं। एआईएमआईएम के नेता असदुद्दीन ओवैसी ने आरोप लगाया कि यह संघवाद के खिलाफ है। माकपा के नेता अमरा राम ने आरोप लगाया कि यह विधेयक संविधान को तहस-नहस करने के लिए लाया गया है। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) की नेता सुप्रिया सुले ने कहा कि लोकसभा और विधानसभा चुनावों के कार्यकाल को एक दूसरे से जोड़ना उचित नहीं है। आरएसपी के एनके प्रेमचंद्रन ने आरोप लगाया कि विधेयक संविधान में निहित संघवाद के मूल ढांचे पर हमला है।

एनडीए के घटक दलों ने विधेयक का किया समर्थन

केंद्रीय मंत्री और तेदेपा के नेता चंद्रशेखर पेम्मासानी ने विधेयक का समर्थन करते हुए कहा कि इस विधेयक से चुनावी खर्च कम होगा। शिवसेना सांसद श्रीकांत शिंदे ने विधेयक का समर्थन किया और आरोप लगाया कि कांग्रेस को सुधार शब्द से एलर्जी है। उन्होंने आपातकाल का उल्लेख करते हुए कहा कि जिस न्यायाधीश ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को आयोग्य ठहराया था, उसके साथ कैसा व्यवहार हुआ था, पूरा देश जानता है।

देश के संघीय ढांचे को कोई नहीं बदल सकता : मेघालय

कानून मंत्री मेघवाल ने कई विपक्षी सदस्यों की इस दलील को खारिज कर दिया कि यह विधेयक संसद की विधायी क्षमता से परे है। उन्होंने कहा कि संविधान का अनुच्छेद 368 संसद को ऐसे संशोधन की शक्ति देता है। उनका कहना था कि संविधान का अनुच्छेद 327 संसद को विधानमंडलों के चुनाव के संदर्भ में अधिकार देता है। मेघवाल ने कहा कि इस विधेयक से न तो संसद की शक्ति कम होती है और न ही राज्यों की विधानसभाओं की शक्ति कम होती है। उन्होंने बाबासाहेब भीमराव आंबेडकर के एक कथन का उल्लेख करते हुए कहा कि देश के संघीय ढांचे को कोई नहीं बदल सकता। मेघवाल ने कहा, जिस वर्ग से बाबासाहेब आते थे, उसी वर्ग से मैं आता हूं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मुझे यह अवसर दिया है। उन्होंने यह भी कहा कि सरकार का मत है कि इस विधेयक को जेपीसी के विचार के लिए भेजा जाए।

दरभंगा एम्स: आईआईटी-दिल्ली को तकनीकी सर्वे का जिम्मा: सरकार

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा ने मंगलवार को संसद में कहा कि दिल्ली स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान बिहार के दरभंगा में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की स्थापना के लिए स्थलाकृतिक सर्वेक्षण, भू-तकनीकी जांच और संरचनात्मक डिजाइन का सर्वे कर रहा है। राज्यसभा को एक लिखित सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि बिहार सरकार ने अप्रैल 2023 में दरभंगा के बहादुरपुर में एकमी शोभन बाईपास के पास 151.17 एकड़ भूमि की पेशकश की है। उन्होंने कहा कि इससे पहले, राज्य सरकार ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज और अस्पताल परिसर में एम्स की स्थापना के लिए नवंबर 2021 में भूमि हस्तांतरण को मंजूरी दी थी। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि आईआईटी-दिल्ली के विशेषज्ञों की केंद्रीय टीम (तकनीकी) ने एम्स की स्थापना के लिए वैकल्पिक स्थल को व्यावहारिक पाया है, लेकिन स्थान विशेष की स्थितियों के कारण भू-तकनीकी और जल विज्ञान संबंधी जांच के आधार पर संरचनात्मक संशोधन किया जा सकता है।उन्होंने कहा, अब बिहार सरकार ने दरभंगा में एम्स की स्थापना के लिए 187.44 एकड़ जमीन सौंप दी है। मैसर्स एचएससीसी (इंडिया) लिमिटेड को परियोजना के लिए निष्पादन एजेंसी के रूप में नियुक्त किया गया है। आईआईटी दिल्ली स्थलाकृतिक सर्वेक्षण, जल विज्ञान संबंधी जांच, भू-तकनीकी जांच और संरचनात्मक डिजाइन चित्रों के पुनरीक्षण के लिए लगा हुआ है।

भारतीय संविधान गंभीर चिंतन का परिणाम : नड्डा

नई दिल्ली/एजेंसी। राज्यसभा में सदन के नेता जगत प्रकाश नड्डा ने मंगलवार को कहा कि भारतीय संविधान गहन चिंतन-मनन, मंथन और गंभीर विचार विमर्श का परिणाम है।

श्री नड्डा ने सदन में भारतीय संविधान के 75 वर्ष की गौरवपूर्ण यात्रा की चर्चा फिर शुरू करते हुए कहा कि भारतीय संविधान नये देश का नहीं था, बल्कि यह पुरातन संस्कृति वाले देश का संविधान है। संविधान सभा के सदस्य इस तथ्य को भली-भांति जानते थे। उन्होंने कहा कि भारतीय संविधान तमाम कठिनाइयों और मुसीबतों से निकलने की प्रेरणा देता है। संविधान में भारतीय संस्कृति के प्रतीकों की छाप है। उन्होंने कहा कि बुरे तत्व भी प्रारंभ से ही संविधान से इतर काम करने लगे। उन्होंने कहा कि सरदार पटेल ने 562 रियासतों को भारत संघ में शामिल किया, लेकिन एक रियासत जम्मू-कश्मीर का जिम्मा पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लिया। भारत में जम्मू-कश्मीर के एकीकरण की प्रक्रिया में उन्होंने शेख अब्दुल्ला को शामिल किया गया। अनुच्छेद 370 संविधान पर आघात था। जम्मू-कश्मीर को भारत में शामिल करने के लिए डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने बलिदान दिया और उन्होंने श्रीनगर जेल में संदिग्ध परिस्थितियों में अंतिम सांस ली। सदन के नेता ने कहा कि अनुच्छेद 35 ए राष्ट्रपति आदेश के जरिए जोड़ा गया और संविधान की भावना तथा संसद की अवहेलना की गई। इसके जरिये जम्मू-कश्मीर की नागरिकता के प्रावधान तय किए गए। जम्मू-कश्मीर की महिलाओं को राज्य के बाहर शादी करने पर संपत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया। इसके अनुसार राज्य का नागरिक उसी को माना जाएगा जो 1944 के पहले वहां रहा करते थे। संविधान के अनुसार संसद के बने हुए कानून जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं होते थे। अनुसूचित जाति और जनजाति के प्रावधान जम्मू-कश्मीर के लोगों को प्राप्त नहीं थे। पंचायती राज का 73वां संशोधन अधिनियम जम्मू-कश्मीर में लागू नहीं होता था।

पांच साल पहले 5 गुना हो गयी थी किसानों की आय: शिवराज

नई दिल्ली/एजेंसी। कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज संसद में कहा कि केन्द्र सरकार के 2014 के बाद से किसानों की आय में वर्ष 2018-19 तक करीब पांच गुना वृद्धि हो चुकी थी और नये आंकड़े आने पर यह उससे भी दोगुना होने की संभावना है। श्री चौहान ने लोकसभा में आज प्रश्नकाल में किसानों की आय से जुड़े एक सवाल के जवाब में कहा कि वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सरकार के आने के पहले वर्ष 2013-14 में किसानों की औसत आय 2115 रुपए हुआ करती थी जो वर्ष 2018-19 में बढ़ कर 10218 रुपए हो गयी थी। उसके बाद अब तक कोई गणना नहीं हुई है। अगले साल किसानों की आय की गणना की जानी है। उन्हें विश्वास है कि किसानों की आय इस आंकड़े की दोगुनी से अधिक दर्ज की जाएगी। श्री चौहान ने कहा कि सरकार ने 2014 से ही किसानों की आय को दोगुना करने का संकल्प लिया था। इसके लिए छह सूत्रीय योजना पर काम किया गया है जिसमें कृषि उत्पादन बढ़ाना, उत्पादन की लागत कम करना, कृषि पर लागत का डेढ़ गुना न्यूनतम समर्थन मूल्य देना, किफायती वित्तीय सहायता देना, कृषि विविधीकरण और जैविक खेती को बढ़ावा देना शामिल है। उन्होंने कहा कि मोटे अनाज के उत्पादन को भी बढ़ावा दिया गया है।

रसद क्षमता में विशेषज्ञता के लिए नौसेना को प्रशिक्षण देगा गति शक्ति विश्वविद्यालय

सशस्त्र बलों को रसद प्रशिक्षण और सहयोग बढ़ाने के लिए हुआ समझौता

नई दिल्ली/एजेंसी। सेना और वायु सेना के बाद अब भारतीय नौसेना ने भी रसद प्रशिक्षण और सहयोग बढ़ाने के लिए गति शक्ति विश्वविद्यालय के साथ मंगलवार को नई दिल्ली में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। वडोदरा के गति शक्ति विश्वविद्यालय के साथ इस एमओयू के तहत नौसेना को रसद क्षमता में उच्च विशेषज्ञता हासिल करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाएगा। गति शक्ति विश्वविद्यालय अत्याधुनिक रसद शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के साथ सशस्त्र बलों को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण भागीदार के रूप में काम करेगा। इस समझौता ज्ञापन पर नौसेना के रसद नियंत्रक वाइस एडमिरल दीपक कपूर और जीएसवी के कुलपति प्रोफेसर मनोज चौधरी ने हस्ताक्षर किए हैं। सहयोग की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए वाइस एडमिरल कपूर ने कहा कि जीएसवी उन्नत कौशल, मल्टी मॉडल कनेक्टिविटी समझ, अत्याधुनिक रसद शिक्षा और वास्तविक दुनिया की अंतर्दृष्टि के साथ नौसेना को सशक्त बनाने में काम करेगा, जबकि जीएसवी को भारतीय नौसेना के व्यावहारिक परिचालन अनुभवों से लाभ होगा। मोदी ने कहा कि बीते एक वर्ष में राजस्थान के विकास को नई गति, नई दिशा देने में मुख्यमंत्री भजनलाल और उनकी पूरी टीम ने बहुत परिश्रम किया है। उन्होंने कहा कि आज भाजपा की डबल इंजन की सरकारें सुशासन का प्रतीक बन रही हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भाजपा जो भी संकल्प लेती हैं उसे पूरा करने का ईमानदारी से प्रयास करती हैं।

श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा ने महाबोधि मंदिर में पूजा अर्चना की

गया/एजेंसी। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा ने भगवान बुद्ध की पावन ज्ञान भूमि बोधगया के महाबोधि मंदिर के गर्भगृह में विशेष पूजा अर्चना की, साथ ही पवित्र बोधिवृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान लगाया। श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमार गया अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डा पहुंचे, जहां बिहार सके मंत्री डॉ. प्रेम कुमार एवं संतोष कुमार सुमन ने पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया। इसके बाद वे सड़क मार्ग से बोधगया पहुंचे। जहां बोधगया टेंपल मैनेजमेंट कमेटी के सदस्यों ने खादा वस्त्र देकर उनका भव्य स्वागत किया। उनके साथ आए श्रीलंकाई शिष्टमंडल का भी पारंपरिक अंदाज में अभिनंदन किया गया। श्रीलंका के राष्ट्रपति की इस यात्रा को लेकर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। मंदिर परिसर और आसपास पुलिस बल की तैनाती रही। जिलाधिकारी डॉ. त्यागराजन एसएम और वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती खुद मौके पर मौजूद थे।

महाबोधि मंदिर में पूजा एवं ध्यान साधना के बाद अनुरा कुमारा ने बोधगया के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व की सराहना की। उन्होंने पवित्र बोधिवृक्ष के छांव में भी भगवान बुद्ध को नमन किया। इस दौरान श्रीलंका के शिष्टमंडल ने भी मंदिर की परंपराओं और शांति के संदेश को लेकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की।इसके बाद राष्ट्रपति बोधगया स्थित श्रीलंकाई महाविहार पहुंचे, जहां उन्होंने जयश्री महाबोधि महाविहार मंदिर में भगवान बुद्ध के दर्शन किए, साथ ही उन्होंने भगवान बुद्ध के दो परम शिष्य महामोगलान और सारीपुत के अस्थि कलश को भी नमन किया। राष्ट्रपति की इस यात्रा से भारत-श्रीलंका के सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों को मजबूती मिलने की उम्मीद है। बोधगया, जहां भगवान बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था, श्रीलंका के बौद्ध श्रद्धालुओं के लिए हमेशा से आस्था का केंद्र रहा है।

कांग्रेस ने राज्यों के बीच जल विवादों को दिया बढ़ावा : मोदी

कार्यक्रम

पीएम राजस्थान सरकार के कार्यकाल का एक साल पूरा होने पर उत्कर्ष कार्यक्रम को कर रहे थे संबोधित

प्रात : किरण

जयपुर/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए मंगलवार को कहा कि किसानों के नाम पर बड़ी-बड़ी बातें करने वाले न तो खुद किसानों के लिए कुछ करते हैं न ही दूसरों को कुछ करने देते हैं। इसके साथ ही मोदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की नीति विवाद की नहीं संवाद की है और वह व्यवधान में नहीं समाधान में विश्वास रखती है। मोदी राजस्थान सरकार के कार्यकाल का एक साल पूरा होने पर यहां दादिया में आयोजित एक वर्ष-परिणाम उत्कर्ष कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में उन्होंने ऊर्जा, सड़क व रेलवे से जुड़ी 46,300 करोड़ रुपये से अधिक की 24 परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास किया। राजस्थान के लिए महत्वपूर्ण मानी जा रही पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना के कार्यान्वयन में गत कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में विलंब की ओर इशारा करते हुए मोदी ने कहा, ईआरसीपी को कांग्रेस ने कितना लटकाया, ये भी कांग्रेस की नीयत का प्रत्यक्ष प्रमाण है। ये किसानों के नाम पर बातें बड़ी-बड़ी करते हैं लेकिन किसानों के लिए न खुद कुछ करते हैं और न ही दूसरों को करने देते हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे तब उन्होंने राज्य के अलग-अलग हिस्सों में नर्मदा नदी का पानी पहुंचाने के लिए बड़ा अभियान चलाया। मोदी ने आरोप लगाया, ह्वतब उसे रोकने के लिए भी कांग्रेस और कुछ एनजीओ (गैर सरकारी संगठनों) द्वारा तरह-तरह के हथकंडे अपनाए गए। मोदी ने कहा, हमारी नदियों का पानी बहकर सीमा पार चला जाता था, लेकिन हमारे किसानों को इसका लाभ नहीं मिलता था। कांग्रेस, समाधान के बजाय, राज्यों के बीच जल-विवाद को ही बढ़ावा देती रही। ह्वराजस्थान ने तो इस कुनीति के कारण बहुत कुछ भुगता है। उन्होंने कहा कि जैसे ही मध्य प्रदेश व राजस्थान में भाजपा की सरकार बनी तो पार्वती कालीसिंध चम्बल परियोजना एमपीकेसी लिंक परियोजना पर समझौता हो गया। मोदी ने कहा, भाजपा की नीति विवाद की नहीं, संवाद की है। हम विरोध में नहीं, सहयोग में विश्वास करते हैं। हम व्यवधान में नहीं, समाधान पर यकीन करते है। इसलिए हमारी सरकार ने पूर्वी राजस्थान नहर परियोजना को स्वीकृत भी किया और इसका विस्तार भी किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पार्वती, कालीसिंध, चंबल परियोजना से राजस्थान के 21 जिलों को सिंचाई के लिये पानी के साथ-साथ पेयजल भी मिलेगा और इससे राजस्थान और मध्य प्रदेश दोनों राज्यों के विकास में तेजी आएगी।

संक्षिप्त खबरें

फतुहा के लाल ने लहराया परचम

फतुहा। स्थानीय बांकीपुर गोरख निवासी रंजीत तिवारी के पुत्र रोशन राज का चयन बिहार सिविल कोर्ट द्वारा आयोजित परीक्षा में जुडिशियल पर्सनल असिस्टेंट (स्टेनो) के पद पर हुआ है। उसकी प्रारंभिक शिक्षा डेकोरम पब्लिक स्कूल से हुई है। उसने 22 वां रैंक प्राप्त कर अपना परचम लहराते हुए अपने पूरे परिवार और फतुहा का नाम रोशन किया है। अपनी इस सफलता का श्रेय उसने अपने माता-पिता एवं गुरु को दिया है। उसकी इस सफलता पर स्थानीय लोगों ने उन्हें बधाई दी है।

एसकेएमवी कॉलेज की शासी निकाय बैठक में फर्जी हस्ताक्षर से पूरा किया गया कोरम

फतुहा। एसकेएमवी कॉलेज की शासी निकाय बैठक में फर्जी हस्ताक्षर से कोरम पूरा करने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। इस आशय की लिखित जानकारी शिक्षक प्रतिनिधि संत कुमार चौधरी ने पीयू के कुलपति को देते हुए कार्रवाई की मांग की है। वहीं एसकेएमवी कॉलेज के प्रभारी प्राचार्य रघुवंश प्रसाद ने एक बयान जारी कर बताया कि शासी निकाय की बैठक फर्जी तरीके से हुई है जिसमें कोरम पूरा करने के लिए कम से कम चार सदस्यों का होना जरूरी है लेकिन कोरम पूरा करने के लिए शिक्षक प्रतिनिधि संत कुमार चौधरी का फर्जी हस्ताक्षर किया गया। एक ओर 2 दिसंबर को मुझसे स्पष्टीकरण की मांग की गई वहीं दूसरी ओर 2 दिसंबर को ही मेरे मामले को एजेंडे में शामिल कर 4 दिसंबर को बैठक की तिथि तय कर दी गई। इन्होंने फर्जी तरीके से हुई इस बैठक को निरस्त करते हुए शासी निकाय को भंग करने की मांग की है।

चार वारंटी को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

मसौढ़ी !थाना क्षेत्र के श्याम नगर मसौढ़ी से छापेमारी कर चार पुराने मामले में फरार चल रहे वारंटी को पुलिस अधिकारी ने गिरफ्तार किया है।गिरफ्तार किए गए वारंटी श्याम नगर मुहल्ले निवासी सतेंद्र कुमार उर्फ सुरेंद्र कुमार योगेंद्र प्रसाद प्रवेश प्रसाद उर्फ रामप्रवेश प्रसाद व राजेंद्र प्रसाद उर्फ रविंद कुमार है ।सभी अभियुक्तों को मंगलवार को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है ।थानाध्यक्ष विजय कुमार येदुवेंदु ने बताया कि गिरफ्तार अभियुक्त श्याम नगर मुहल्ले में वर्ष 2013 में हुए मारपीट के एक मामले में आरोपी था ।उसपर न्यायालय की ओर से वारंट निर्गत किया गया था ।वारंट निर्गत होने के बाद से अभियुक्त फरार चल रहा था।

कार से 390लीटर शराब बरामद,चालक गिरफ्तार

मसौढ़ी !उत्पाद विभाग की टीम ने थाना क्षेत्र उस्मानचक व नियामतपुर गांव के बीच लग्जरी कार से 390लीटर शराब को जब्त की है ।उसके साथ ही साथ उत्पाद विभाग की टीम ने कार चालक को भी गिरफ्तार कर लिया है ।गिरफ्तार चालक गोपालपर थाना क्षेत्र के मितनचक गांव निवासी बिजेंद्र रविदास के पुत्र विकास कुमार है ।गिरफ्तार चालक को उत्पाद अधिनियम के तहत जेल भेज दिया गया।

प्रशिक्षण में आशा को कालाजार बीमारी व उसके बचाव के बारे में दी गयी जानकारी : एमओआईएस

कालाजार के संभावित मरीजों की खोज व पहचाने के लिए आशा को दिया गया प्रशिक्षण

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। कालाजार नियंत्रण को लेकर सिंथेटिक पैराथायराइड (एसपी) का फोकल स्प्रे तथा कालाजार के संभावित मरीजों की खोज को लेकर मंगलवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, फुलवारीशरीफ में आशा दीदी को एक दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान आशा दीदी को कालाजार बीमारी और उससे बचाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी गयी। इस मौके पर एमओआईसी डॉ राजकिशोर चौधरी ने आशा दीदी को बताया कि कालाजार बीमारी बालूमक्खी के काटने से होता है। क्योंकि अत्यधिक नमी एवं अंधेरे वाले स्थान पर कालाजार की मक्खियां ज्यादा फैलती हैं। लेकिन इससे ग्रसित मरीजों का इलाज आसानी से संभव है। उन्होंने बताया कि संभावित कालाजार मरीज होने के कई लक्षण हैं। जैसे अमूमन दो सप्ताह से अधिक बुखार, पेट के आकार में वृद्धि, भूख नहीं लगना, उल्टी होना और शरीर में खून की कमी होने लगती है। इसके अलावे कई अन्य कालाजार बीमारी के मुख्य लक्षण हैं।ऐसे लक्षण वाले मरीजों को विसरल लीशमैनियासिस (वीएल) कालाजार की श्रेणी में रखा जाता है। ऐसा लक्षण शरीर में महसूस होने पर ग्रसित मरीज को अविलंब जांच करानी चाहिए। उन्होंने बताया कि उपचार के दौरान कालाजार मरीज को डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवा लेनी चाहिए। कभी भी डॉक्टर की सलाह के बिना अपने आप दवा लेना बंद नहीं करना चाहिए। डॉक्टर के द्वारा दिए गए निदेर्शों का पालन करना चाहिए।इसके अलावे उपचार के दौरान किसी प्रकार की परेशानी आने पर नजदीक के स्वास्थ्य केंद्र पर जाना चाहिए या अपने क्षेत्र की आशा कार्यकर्ता को सूचित करना चाहिए। इसका इलाज कराने के बाद भी ग्रसित मरीज को सुरक्षित रहना अतिआवश्यकता होता है। प्रशिक्षण में उपस्थित भीवीडीएस सलाहकार कल्याणी ने बताया कि पोस्ट कालाजार डर्मल लिश्मनिअसिस पीकेडील यह कालाजार का अति गंभीर रूप है। जिसमें कालाजार का परजीवी त्वचा में इकट्ठा हो जाता है। इसमें मरीज के शरीर पर, खासकर चेहरे और गर्दन पर सफेद दाग या गांठ बन जाता है। इसके अलावे भी पीकेडीएल कालाजार के कई अन्य लक्षण हैं। जैसे ही आप आशा दीदी को इस प्रकार के संभावित मरीज मिले तो आप उन्हें सबसे पहले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाकर कालाजार की जांच कराने के लिए उन्हें प्रेरित करें। साथ ही उन लोगों को तत्काल इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाएं। प्रशिक्षण में हेल्थ मैनेजर शिप्रा चौहान, बीसीएम अंबिका प्रसाद और एसआई संतोष कुमार के अलावे दर्जनों आशा दीदी प्रशिक्षण में मौजूद थीं।

सीआरपीएफ मोकामाघाट मे परिवार कल्याण दिवस सह मिलेट महोत्स्व आयोजित

प्रात :किरण संवाददाता

मोकामा। सीआरपीएफ ग्रुप सेंटर मोकामाघाट मे मंगलवार को परिवार कल्याण दिवस और मिलेट महोत्स्व मनाया गया। समारोह अगुआई डीआईजी रबिन्द्र भगत ने की। सीआरपीएफ ग्रुप केंद्र मोकामा घाट के अधिकारी और जवानों के द्वारा दिवंगत शहीद जवानो व कर्मियों के परिवार जनो को सम्मानित किया गया। इसके साथ ही मिलेट महोत्सव के तहत दर्जनों प्रकार के ब्यंजन व पकवान का स्टॉल लगाकर प्रदर्शन किया गया। अतिथियों के बीच बने व्यंजनों को परोसे भी गये। एक एक कर सभी अधिकारियो व आगंतुक विशिष्ट अतिथियों ने मिलेट को भोजन मे शामिल करने के फायदे बताया गया। उल्लेखनीय है की स्वस्थ जीवन शैली के मद्देनजर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मोटे अनाज को भोजन मे शामिल करने पर पुनः बल देते हुये, अन्नश्री योजना की शुरूआत की थी। जिसके बाद से विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा मिलेट को बढ़ावा देने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जाने लगे है। कार्यक्रम को डीआईजी रबिन्द्र भगत, कमानडेंट मुन्ना कुमार सिंह व डिप्टी कमानडेंट एल एन उपाध्याय ने सम्बोधित किया। जबकी विशिष्ट अतिथि के तौर पर मोकामा नगर परिषद के सभापति नीलेश कुमार माधव, आरपीफ इंस्पेक्टर हरिकेश मीणा सहित कई अन्य लोग उपस्थित रहे।

वार्ड 62 में दो स्थानों पर लगा हाई मास्क लाइट, सिटी स्कूल में लगेगा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

पटना नगर निगम के वार्ड संख्या 62 में तीन स्थानों पर हाई मास्क लाइट लगाया जाना है। पटना नगर निगम ने वार्ड पार्षद तारा देवी के द्वारा की गई अनुशंसा के आधार पर तीनों स्थानों पर हाई मास्क लाइट लगाने की स्वीकृति दे दी है। इस संबंध में वार्ड पार्षद के प्रतिनिधि रवि रोशन मेहता ने बताया कि शहीद जगदेव प्रसाद पार्क के पास हाई मास्क लाइट लगाया गया है। इसमें 150 वाट का छह लाइट लगा है। इस लाइट के लग जाने से पार्क के अंदर, बगल में रहा मैदान और श्री रघुनाथ उच्च माध्यमिक विद्यालय के साथ इस परिसर में रहे मध्य विद्यालय के मैदान में भी रोशनी जा सकेगी। इसका ट्रायल मंगलवार की शाम में किया गया। वार्ड पार्षद तारा देवी ने बताया कि दूसरा हाई मास्क लाइट एनएच 30 से लगे महादेव स्थान के पास लगाया गया है। यहां पर स्वर्गीय ओपी साह वॉच टावर बनाया गया है। इसी के पास हाई मास्क लाइट लगाया गया है। इससे भी आसपास का इलाका रोशन होगा और लोगों को इससे इस ठंड और कुहासा में भी राहत मिल सकेगी। तीसरा हाई मास्क लाइट पटना सिटी उच्च माध्यमिक विद्यालय के मैदान में लगाया जाना है। इसे लगाए जाने की प्रक्रिया शुरू की जा रही है। यह तीनों हाई मास्क लाइट पटना नगर निगम के द्वारा वार्ड पार्षद तारा देवी के द्वारा की गई अनुशंसा के आधार पर लगाया जा रहा है।

श्री ढांढ़ण सती दादी जी की दिव्य ज्योति रथ पहुंचने पर किया स्वागत

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

माहरे आंगना में खुशियां बरसाई है दादी आई है। धन्य घड़ी धन भाग्य हमारा दादी जी माहरा घड़ा पधारा करो स्वागत दादी को अखिल भारतीय रजत जयंती बसंतोत्सव के अवसर पर देश के 51 शहरों से होता हुआ मंगलवार को श्री ढांढ़ण सती दादी जी की दिव्य ज्योति रथ पटना सिटी पहुंची। ट्रस्ट के अध्यक्ष प्रभात भरतिया ने बताया कि 11 दिसंबर से ढांढ़ण धाम राजस्थान से निकल कर भारत के विभिन्न शहरों से होते हुए बनारस के रास्ते होते अपराह्न एक बजे के करीब पटना सिटी स्थित गायघाट पहुंचा। यहां शोभायात्रा का स्वागत पुष्प वर्षा के साथ मोटरसाइकिल का काफिला कंगन घाट स्थित भरतिया निवास पहुंचा। यहां दिव्य रथ का भव्य स्वागत ढोल नगाड़ों के साथ भक्त झूमते व नाचते रथ का स्वागत किया। इसके बाद भजन संकीर्तन एवं प्रसाद का भव्य आयोजन हुआ। दादी भक्त राजेश देवड़ा और कोमल देवड़ा द्वारा गणेश वंदना के साथ भजनों की प्रस्तुति की गई। इस अवसर पर रथयात्रा के साथ चल रहे मूलचंद बजाज और मोनू मोर ने भी दादी जी की एक से एक भजन सुना कर भक्तों को भाव विभोर कर दिया। दिव्य रथ यात्रा का स्वागत समाजसेवी रमा भरतिया, राजू भरतिया, अशोक बजाज, उषा भरतिया, डॉ सुशील पोद्दार, ललित अग्रवाल, श्याम भरतिया, अमित झुनझुनवाला, सुनील बंका, संजीव देवड़ा आदि ने किया। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद रथ मुजफ्फरपुर के लिए प्रस्थान कर गया।

एनएमसीएच में भर्ती मरीज का अब 24 घंटा जांच सेंट्रल लेबोरेट्री में

सेंट्ल इमरजेंसी, शिशु व मेडिसिन के पैथो. का अस्तित्व समाप्त

- पैथो., बायो केमिस्ट्री व माइक्रोबायोलॉजी एक साथ

पटना सिटी (आनंद केसरी)

नालंदा मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आउटडोर में इलाज करने आने वाले मरीजों के लिए सेंटर आफ एक्सीलेंस में पैथोलॉजी/ हिमेटोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी और बायोकेमेस्ट्री जांच की सुविधा है। वहीं पहले सेंट्रल इमरजेंसी, शिशु और मेडिसिन में भी अलग से पैथोलॉजी कम कर रहा था, मगर इन तीनों पैथोलॉजी डिपार्मेंट का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया है। अब सेंट्रल इमरजेंसी के ऊपर पहली मंजिल पर इंडोर मरीज के साथ इमरजेंसी के मरीजों की भी जांच के लिए 24 घंटे यहां सुविधा प्रदान की गई है। अब इमरजेंसी से लेकर मेडिसिन, शिशु, गायनी, ऑर्थो सर्जरी, आई, स्कीन वीडी से लेकर अन्य विभाग में भर्ती मरीजों की जांच 24 घंटे मिल सकेगी। यहां बायोकेमेस्ट्री, हेमेटोलॉजी और माइक्रोबायोलॉजी को मिलाकर सेंट्रल लैबोरेट्री (इंडोर) बनाया गया है। इसमें सभी विभाग के इंडोर मरीजों की जांच सैंपल लेकर रिपोर्ट भेजा जाएगा। यहां बायोकेमेस्ट्री के प्रभार में शशि कुमार, हेमेटोलॉजी व पैथोलॉजी के वीरेंद्र कुमार, जबकि माइक्रोबायोलॉजी के प्रभार में संजीव चौधरी हैं। इन तीनों विभागों हेमेटोलॉजी व पैथोलॉजी के विभागाध्यक्ष डॉप्रो सीपी जयसवाल, माइक्रोबायोलॉजी के एचओडी डॉप्रो संजय कुमार और बायोकेमेस्ट्री के एचओडी डॉ राजीव रंजन सिंह हैं। इंडोर में रहे मरीज को जिस जांच की जरूरत है, डॉक्टर पर्ची पर लिखेंगे। संबंधित विभाग के वार्ड की नर्सिंग स्टाफ उसका ब्लड कलेक्शन लेकर सेंट्रल लेबोरेटरी में भिजवाएंगे। यहां जांच की प्रक्रिया पूरी होने के बाद रिपोर्ट भिजवाने की जिम्मेदारी संबंधित विभाग के प्रभारी की होगी। यह सुविधा 24 घंटे उपलब्ध होगी। हालांकि इमरजेंसी में इलाज के लिए आने वाले मरीज व उसके परिजनों के लिए थोड़ी परेशानी है, मगर ब्लड कलेक्शन कर वार्ड अटेंडेंट के माध्यम से भी सैंपल भेजा जा सकेगा। यह सेंट्रल लैबोरेट्री इमरजेंसी के ऊपर प्रथम मंजिल पर स्थित है।

कुसुम राज मनीअम पब्लिक स्कूल के बच्चों ने उठाया शैक्षिक भ्रमण का आनंद

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम : प्रखंड क्षेत्र के मोरीयावां स्थित कुसुमराज मनीअम पब्लिक स्कूल के पहली से दशवें कक्षा तक के बच्चों को बीते दिन शैक्षिक भ्रमण हेतु राजधानी पटना के विभिन्न स्थलों पर ले जाया गया। जहां बच्चों ने पौराणिक व आकर्षक चीजों को देखकर काफी उत्साहित नजर आए। न्यु म्यूजियम में बच्चों ने बिहार के इतिहास से जुड़ी कई जानकारी प्राप्त की। वहीं चिड़ियांघर में भ्रमण के दौरान बच्चे एक दूसरे के साथ साथ यात्रियों एवं अन्य जीव जंतुओं को भोजन पानी देते हुए भी देखे गए। वहां से भ्रमण जत्था तारामंडल पहुंचा जहां जूनियर बच्चे 3 डी चलचित्र के माध्यम से सौरमंडल को समझा साथ ही बिहार संग्रहालय में जाकर बच्चों ने बिहार के इतिहास को भलीभांति जाना। इस शैक्षणिक भ्रमण का आयोजन विद्यालय के अध्यक्ष डॉ. अमरेंद्र कुमार तथा प्राचार्या शिल्पी प्रसाद के नेतृत्व में किया गया। वहीं अध्यक्ष डॉ अमरेंद्र ने बताया कि शैक्षणिक भ्रमण का मुख्य उद्देश्य स्कूल से बाहर के माहौल में शिक्षा प्राप्त करना जिसके जरिए छात्रों को समूह में रहने की आदत, नायक बनाने की क्षमता, आत्मविश्वास और भाईचारे की भावना को बढ़ाना है। मौके पर शिक्षक निशिकांत, ब्रजेश कुमार, महताब फैज, प्रीति कुमारी, दीपू कुमार, रविकांत, सुमन मिश्रा, राजनंदनी कुमारी, शादिया प्रवीण तथा पूजा कुमारी समेत कई अन्य भी मौजूद थे ।

श्री रघुनाथ हिन्दू उच्च माध्यमिक विद्यालय का भवन बनना शुरू

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बेगमपुर स्थित श्री रघुनाथ हिन्दू उच्च माध्यमिक विद्यालय शिक्षा विभाग के द्वारा उपेक्षा का शिकार था। इसके कायाकल्प के लिए लगातार स्थानीय जनप्रतिनिधि प्रयासरत थे। कभी यह शिक्षा का प्रमुख केंद्र हुआ करता था, मगर इसका भवन जर्जर होने के साथ ही यहां वर्ग संचालन करना भी मुश्किल हो गया था। पहले यहां विभिन्न परीक्षा का केंद्र भी बनाया जाता था, मगर वर्षों से यह सब प्रक्रिया बंद है। अब इसके दिन बहुरने वाले हैं। बिहार सरकार के शिक्षा विभाग की नजरे इनायत इस विद्यालय की ओर हुई है। शिक्षा विभाग ने इस उच्च माध्यमिक विद्यालय के अस्तित्व रक्षा के लिए 10 कमरा बनाने की स्वीकृति दी है। इन दस कमरों के अलावा शौचालय का निर्माण भी किया जाएगा। भवन निर्माण को लेकर भूमि पूजन का कार्य भी किया गया। इस दौरान जजमान गणेश सर बने थे। पूरे विधि विधान के साथ पुरोहित ने भूमि पूजन कराने का काम किया। इस दौरान शिक्षक प्रमोद कुमार, संजय पासवान, स्थानीय वार्ड पार्षद तारा देवी के प्रतिनिधि रवि रोशन मेहता के अलावा अन्य लोग भी उपस्थित थे। दरअसल श्री रघुनाथ हिन्दू उच्च माध्यमिक विद्यालय पिछले करीब 20 वर्षों से उपेक्षित था। इसका भवन खासा जर्जर था और एक मंजिला होने के कारण यहां बैठ कर शिक्षकों को पढ़ाना और छात्रों का पढ़ना हादसे को देखते हुए संभव नहीं हो पा रहा था। पहले यहां दशम बोर्ड की परीक्षा का और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं का केंद्र भी होता था। मगर विद्यालय भवन व कमरे की जर्जर स्थिति को देखते हुए यहां परीक्षा केंद्र नहीं बनाया जा रहा था। स्थानीय विधायक नंदकिशोर यादव के सार्थक पहल और वार्ड पार्षद तारा देवी, उनके प्रतिनिधि उमेश मेहता के द्वारा लगातार शिक्षा विभाग के मंत्री, अधिकारी व पदाधिकारी को पत्र लिखे जाने के बाद अंततः इस ओर उनका ध्यान गया और राशि का आवंटन किया गया। इस उच्च माध्यमिक विद्यालय में 10 कमरे का निर्माण होगा। साथ ही शौचालय भी बनेगा। फिलहाल इसके लिए भूमि पूजन हो चुका है। पुराने जर्जर भवन को तोड़ने का काम शुरू कर दिया गया है। इसके बाद जमीन से नया निर्माण शुरू किया जाएगा। इसके पूर्व भी बारिश के दौरान परिसर में खासा जलजमाव हो जाया करता था। इसके पीछे कारण था कि स्कूल का जमीन मैदान नीचा हो गया था और रोड और पीछे से लगे जलाशय ऊपर। नतीजतन स्थानीय वार्ड पार्षद तारा देवी एवं उनके प्रतिनिधि उमेश मेहता के सद्प्रयास से मैदान में मिट्टी का भराव कर ऊंचा किया गया। वहीं मध्य विद्यालय के दक्षिणी छोर की ओर से भी कुछ शरारती तत्व दीवार तोड़कर आ जाया करते थे और उधर से पानी भी स्कूल के अंदर आ जाया करता था। उसे भी ठोस रूप से बनवा दिया गया। अब विद्यालय परिसर में जलजमाव भी न के बराबर हो पाता है। श्री रघुनाथ हिन्दू उच्च माध्यमिक विद्यालय का कमरा और भवन का निर्माण हो जाने के बाद इसकी रौनक बढ़ जाएगी। जब यहां छात्रों और शिक्षकों का जमावड़ा होने के साथ ही पठन-पाठन का दौर शुरू होगा, तो एक अलग ही माहौल शिक्षा का देखने को मिलेगा।

बिहार सरस मेला में पालना घर, फूड जोन, फैन जोन और सेल्फी जोन के प्रति आगंतुकों का बना आकर्षण केंद्र

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। सरस मेला में ग्रामीण महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन की झलक के साथ उन हुनरमंदों द्वारा निर्मित उत्पादों की प्रदर्शनी सह बिक्री हो रही है जो कल तक गुमनामी का जीवन व्यतीत कर रहे थे । लेकिन अब उनके हुनर को स्वरोजगार से जोड़कर स्वावलंबी बनाया गया है। जीविका के सामाजिक विकास विधा द्वारा सामाजिक समावेशन के तहत दिव्यांगों द्वारा निर्मित अगरबत्ती, मोमबत्ती, लाह की चूड़ियां, कागज और कपड़ों के झोले, मुख्यमंत्री भिक्षाटन निवारण योजना के तहत भिक्षावृत्ति छुड़ाकर आत्मनिर्भर बनाए गए हुनरमंदों के द्वारा निर्मित जुट के पर्स, झोले, टेराकोटा के उत्पाद और अगरबत्ती आदि तथा मुक्ति बाजार के अंतर्गत बिहार के काराओ में बंदियों द्वारा निर्मित हस्तशिल्प की प्रदर्शनी सह बिक्री हो रही है। सरस मेला में प्रदर्शित और बिक्री हो रहे शिल्प को देखकर एक तरफ बुजुर्ग हर्षित हो रहे हैं तो दूसरी तरफ युवा पीढ़ी सदियों पुरानी शिल्प, संस्कृति, परंपरा और देशी व्यंजनों से रूबरू हो रही है ।पांच दिनों में 5 सौ से अधिक स्टॉल और ओपेन एरिया में सुसज्जित स्थलों से खरीद -बिक्री का आंकड़ा लगभग 4 करोड़ 95 लाख रूपया है। मेला के पांचवे दिन सोमवार को 81 लाख 81 हजार रुपये के उत्पादों एवं व्यंजनों की खरीद- बिक्री हुई है ' सरस मेला के छठे दिन मंगलवार को अनुमानतः 70 हजार से अधिक लोग आए। सरस मेला परिसर में जन-जागरूकता अभियान, लोक कल्याणकारी योजनाओं से लोगों को लाभान्वित और सुधी दर्शकों को लोक कलाकार राज्य की लोक गीत और लोक नृत्य तथा गजल आदि की संगीतमय प्रस्तुति से झूमा रहे हैं। सेमिनार हॉल में विभिन्न संस्थाओं द्वारा समसामयिक मुद्दों पर परिचर्चा और ज्ञानवर्धन चचाएं जारी है। मंगलवार को सामाजिक विकास विधा , जीविका द्वारा पाक्सो एक्ट -2012 पर उन्मुखीकरण किया गया ' कार्यक्रम के तहत जीविका से सामाजिक विकास प्रबंधकों को बच्चों के साथ होने वाले यौन उत्पीडन एवं उससे सुरक्षा से सम्बधित तथ्यों पर चर्चा हुई ' सी-3 की लैंगिक विशेषज्ञ श्रीमती गुंजन बिहारी ने पाक्सो एक्ट पर विस्तृत चर्चा की बजाओ रेडियो द्वारा ऑनलाइन गीत-संगीत की प्रस्तुति मेला में फिजा को और संगीतमय बना रही है। बिहार सरकार की सतत जीविकोपार्जन योजना के लाभान्वित और जल जीवन हरियाली अभियान के तहत दीदी की पौधशाला से पौधों की बड़े पैमाने पर बिक्री योजनाओं और अभियानों की सफलता की बानगी पेश कर रहे हैं। पालना घर, फूड जोन, फैन जोन और सेल्फी जोन के प्रति आगंतुकों का आकर्षण देखते ही बन रहा है। मुख्य सांस्कृतिक मंच पर जागरण ग्रुप ,पटना के लोक कलाकारों ने झिझिया, जट झजटीन, कजरी आदि की प्रस्तुति की ' ह्लतोहरा से राजी ना रे बलमुआ और ऊँची रे अटरियाह्व जैसे गीतों पर नृत्य की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को झुमाया ' मंच संचालन श्रीमती नाजिश बानो, राज्य प्रबंधक, जीविका ने किया ।

क्रिसमस को ले पादरी की हवेली महागिरजाघर में हो रही तैयारी

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

प्रभु यीशु के अवतरण का पर्व क्रिसमस पर महागिरजा घर पादरी की हवेली चर्च में तैयारी को अंजाम दिया जाना शुरू हो गया है। चर्च के पल्ली पुरोहित फादर प्रवीण लोवों, सहायक पल्ली पुरोहित फादर सुरेश खाका और सुप्रीयिर फादर प्रदीप सोंरग के सहयोग से तैयारी शुरू की गई है। इसी बीच पल्ली पुरोहित फादर प्रवीण लोवों की देखरेख में कैरोल गायन पादरी की हवेली के बिजली ऑफिस गली, पानी टंकी व बेगमा की हवेली मुहल्ला में किया गया। पल्ली पुरोहित फादर ने बताया कि 21 दिसंबर से मदर टेरेसा परिसर में चरनी गोशाला का निर्माण होगा। 24 की रात को प्रभु यीशु के अवतरण पर्व पर मिस्सा बलिदान पूजा और अन्य कार्यक्रम होगा। फादर ने क्रिसमस के दौरान चर्च में सुरक्षा को लेकर एसडीओ सत्यम सहाय से आग्रह किया है। एसडीओ ने बताया कि चर्च में सुरक्षा के लिए मजिस्ट्रेट, पुलिस पदाधिकारी और पुलिसकर्मी की तैनाती 24 व 25 दिसंबर को की जाएगी। 25 दिसंबर को सुबह चर्च में प्रार्थना होगी इसके बाद आम लोगों के लिए गेट दर्शन पूजन के लिए खोल दिया जाएगा मगर अपराह्न चार से पांच के बीच सबों को बाहर कर मुख्य दरवाजा बंद कर दिया जाएगा। इस दिन पादरी की हवेली स्थित मा गिरजाघर के बाहर भी खास भी मरती है ऐसे में विभिन्न खाद्य पदार्थ मसलन उपचार चार्ट से लेकर कैंडल बचने एवं अन्य सामान की अस्थाई दुकानें आवाज हो जाती है यहां वहां खड़ी करना भी समस्या बन जाता है। पानी टंकी मोड़ से लेकर पादरी की हवेली के सोनार टोली मोड़ के बीच वाहनों का गुजरना पूरे दिन खासा मुश्किल हो जाता है चर्च के अंदर भी भीड़ होने के कारण छेड़खानी से लेकर पॉकेट मेरी की घटनाएं भी कम होती है इससे भी निबटना जरूरी होगा।

बैंक ने दी तख्त साहिब में पिकअप वैन

पटना सिटी. यूको बैंक ने तख्त श्री हरिमंदिर जी पटना साहिब में सीएसआर के तहत पिकअप वैन प्रदान की है. अतिरिक्त मुख्य ग्रंथी ज्ञानी दिलीप सिंह ने ग्रंथियों के साथ अरदास की. अरदास के बाद बैंक के अधिकारियों ने प्रबंधक कमेटी के अध्यक्षत जगजोत सिंह सोही को पिकअप वैन की चाबी सौंपी. आयोजित कार्यक्रम में कमेटी के महासचिव इंद्रजीत सिंह, कनीय उपाध्यक्ष गुरविंदर सिंह,सचिव हरवंश सिंह, अधीक्षक दलजीत सिंह, प्रबंधक हरजीत सिंह समेत अन्य उपस्थित थे. प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष व महासचिव ने बैंक अधिकारियों को प्रतीक चिह्न व दुशाला भेंट किया. इससे पहले बैंक अधिकारियों ने दरबार साहिब में मत्था टेका. पदधारकों ने कहा कि पिकअप वैन का उपयोग सामानों को लाने व ले जाने में किया जायेगा।

टीम सेवा ने बांटी कंबल

पटना सिटी. टीम सेवा की ओर से ठंड से ठिठुरते राहगीरों के बीच कंबल का वितरण चंलत दस्ता की ओर से किया गया. टीम के अध्यक्ष सह जदयू नेता सैयद हसन अली के नेतृत्व में पटना सिटी,लोदी कटरा,सदर गली,पाटलिपुत्र व राजा पुल समेत अन्य जगहों पर टीम के सदस्यों ने घूम-घूम कर जरूरतमंदों के बीच कंबल का वितरण किया. इस दौरान टीम सेवा से जुड़े सदस्यों ने ठंड तक राहगीरों के बीच कंबल वितरण का संकल्प लिया।

जिला केंद्र प्रवास कार्यक्रम में कार्यशाला

पटना सिटी. भारती शिक्षा समिति एवं शिशु शिक्षा प्रबंध समिति बिहार के आतिथ्य में रानीपुरचक, मर्चा-मर्ची रोड स्थित केशव सरस्वती विद्या मंदिर सैनिक स्कूल में जिला केंद्र प्रवास कार्यक्रम मुं चार दिनों की कार्यशाला आरंभ हुई. जिसमें उपाध्यक्ष रवीन्द्र कान्हरे ने कहा कि विद्या भारती के पांच आयामों को संयोते हुए विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लायक नागरिक बनाये। कार्यशाला कार्यक्रम में पहले दिन दक्षिण बिहार प्रांत में संचालित समस्त जिला केंद्र के विद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं समिति सदस्यों के साथ तीन सत्र में कार्यशाला हुई. आयोजन में प्रदेश सचिव दक्षिण बिहार प्रदीप कुमार कुशवाहा,विद्या भारती के विशेष आमंत्रित सदस्य नंद कुमार इंदु,सेवा प्रमुख गंगा चौधरी समेत अन्य ने अपनी बातों को रखा. कार्यशाला 20 दिसंबर तक चलेगा. कार्यक्रम का समापन संगठन मंत्री ख्याली राम के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

गलत वसूली करने वालों पर होगी सख्त कार्रवाई : विजय

खान एवं भूतत्व मंत्री ने जिला खनिज विकास पदाधिकारियों तथा खान निरीक्षकों के साथ की समीक्षा बैठक

- कहा-शानदार प्रदर्शन करने वालों को किया जाएगा पुरस्कृत
- बिहार ने पहली बार वृहद खनन के क्षेत्र में रखा कदम

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

उपमुख्यमंत्री सह खान एवं भूतत्व विभाग के मंत्री विजय कुमार सिन्हा ने मंगलवार को जिला खनिज विकास पदाधिकारियों तथा खान निरीक्षकों के साथ विभागीय समीक्षा बैठक की। बैठक में विभाग के प्रधान सचिव सह खान आयुक्त नर्मदेश्वर लाल भी मौजूद थे। बैठक में मंत्री ने राजस्व समाहरण, बालूघाटों की बंदोबस्ती की स्थिति, अवैध खनन के विरुद्ध कार्रवाई सहित अन्य मुद्दों पर चर्चा की। श्री विजय कुमार सिन्हा ने बैठक के बाद एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि समीक्षा के क्रम में यह बात सामने आई की 5 जिलों का काफी खराब प्रदर्शन रहा है। दंड वसूली में लक्ष्य से 120 प्रतिशत अधिक प्राप्त किया जा चुका है। इसमें तय पैमाने के अनुसार जिलों में शानदार प्रदर्शन करने वाले जिला खनिज पदाधिकारियों तथा खान निरीक्षकों को पुरस्कृत किया जाएगा और साथ ही खराब प्रदर्शन करने वालों को दंडित भी किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि माननीय मुख्यमंत्री के नेतृत्व में अवैध खनन तथा ओवरलोडिंग पर काबू पा लिया गया है। बिना नंबर प्लेट के चल रहे ट्रैक्टरों की शिकायत मिलने पर कार्रवाई नहीं करने वाले संबंधित पदाधिकारियों को दंडित किया जाएगा। जिलाधिकारी तथा एसपी सुनिश्चित करें की इस मामले में कोई ढिलाई ना बरती जाए। इसकी निगरानी के लिए समय समय पर ड्रोन से, हेलिकॉप्टर से सर्वे किए जा रहे हैं और जहां से शिकायत आ रही है वहां कार्रवाई की जा रही है। राज्य के बाहर सीमावर्ती जिलों से होने वाले अवैध खनन, बिना कागजात के पत्थर, कोयला का व्यापार करने वालों पर भी कार्रवाई करने की योजना बनाई जा रही है। लोगों से अपील की जाती है पास किए गए ट्रांजिट चालान का उपयोग करें और राज्य सरकार के अंदर सूचीबद्ध हों। उन्होंने आगे जानकारी दी कि विभाग में अवैध खनन से संबंधित प्राप्त परिवादों पर त्वरित कार्रवाई की जा रही है। लौह अयस्क और लाइमस्टोन के लिए किए गए निविदा की समीक्षा की गई है जिसमें यह बात सामने आई है कि इस वित्त वर्ष बिहार ने पहली बार वृहद खनन के क्षेत्र में कदम रखा है। घरेलू मिट्टी के उपयोग के लिए कोई कार्रवाई या दोहन की शिकायत आने पर सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए हैं। गीला बालू के परिवहन पर चालक पर कार्रवाई होने के साथ बंदोबस्तधारी पर भी कार्रवाई होगी। इसके साथ ही विभाग की प्रगति, चुनौतियों के समाधान तथा भविष्य की योजनाओं पर समीक्षा की गई। जिला सर्वेक्षण रिपोर्ट में सामने आई अनियमितताओं को संज्ञान में लेते हुए माननीय उप मुख्यमंत्री ने उनसे स्पष्टीकरण लेने की बात बताई। मंत्री ने वार्ता को अंत करते हुए कहा कि गलत वसूली करने वालों पर सख्त कार्रवाई होगी, राजस्व की वृद्धि होगी, प्रकृति के उपहार को अवैध खनन से अभिशाप के बजाय वरदान बनाया जाएगा। सरकार लोगों के सहयोग के लिए उनका धन्यवाद देती है और अवैध खनन की जानकारी देने वाले बिहारी योद्धाओं के खातों में जल्द इनाम की राशि ट्रांसफर कर दी जाएगी। इनाम की राशि के रूप में ट्रक पकड़वाने वाले बिहारी योद्धा को 5000/- तथा ट्रैक्टर पकड़वाने वालों को 10,000 दी जाएगी।

2025 विस चुनाव में 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य : उमेश

- जदयू प्रदेश अध्यक्ष ने समीक्षात्मक बैठक में पार्टी नेताओं को किया संबोधित

पटना जदयू प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने एक बार फिर मिशन 2025-लक्ष्य 225 को साकार करने पर जोर दिया। प्रदेश कार्यालय तिरुहत-1, तिरुहत-2 एवं पटना-1 प्रमंडल के प्रभारियों, जिलाध्यक्षों, विधानसभा प्रभारियों सहित अग्रिम एवं मॉनिटरिंग टीम के सदस्यों की समीक्षात्मक बैठक में प्रदेश अध्यक्ष श्रप्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत बनाने एवं निचली इकाइयों को सशक्त करने के लिए पार्टी के हर सिपाही को पूरी मुस्तैदी एवं ईमानदारी से काम करना है। हम अपने-अपने बूथ को मजबूत कर लें, पार्टी स्वतः मजबूत हो जाएगी। फिर 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य भी निश्चित पूरा होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि सामाजिक सरोकारों से जुड़े एवं सर्वमान्य नेता श्री नीतीश कुमार के प्रति आस्था रखने वाले लोगों को पार्टी से जोड़ना है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हमारे नेता नीतीश कुमार प्रदेश की 14 करोड़ जनता को अपना परिवार मानते हैं और उनके कल्याण और उत्थान के लिए बिना थके, बिना रुके दिन-रात काम करते हैं, लेकिन विपक्षी दलों का मकसद सिर्फ अपने परिवार को बढावा देना है। आगे उन्होंने कहा कि झूठ फैलाने वाले, दुष्प्रचार करने वाले और बिना काम किए क्रेडिट लेने वाले लोगों को वर्ष 2025 में सबक सिखाना है। साथ ही श्री उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि एनडीए घटक दलों के साथ समन्वय और तालमेल बैठाकर हमें काम करना है। निष्ठावान कार्यकर्ताओं के समर्पण एवं परिश्रम से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में लक्ष्य 225 का संकल्प साकार होगा। बैठक की अध्यक्षता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने की एवं मुख्य रूप से विधानपार्षद ललन कुमार सर्राफ, विधानपार्षद संजय कुमार सिंह उर्फ गांधी जी, प्रदेश उपाध्यक्ष बैद्यनाथ प्रसाद विकल, प्रदेश महासचिव सह मुख्यालय प्रभारी चंदन कुमार सिंह एवं वरीय नेता प्रो0 नवीन आर्य चंद्रवंशी मौजूद रहे। इस दौरान पार्टी को बूथ स्तर तक सशक्त बनाने से संबंधित कई बिंदुओं पर विस्तृत चर्चा हुई। साथ ही 24 नवंबर से 15 दिसंबर तक चलाए गए जदयू जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन की समीक्षा, सभी स्तर के कमिटियों का सत्यापन एवं आगामी 15 जनवरी से शुरू होने वाले एनडीए के प्रदेश अध्यक्षों के संयुक्त जिलावार कार्यक्रम की सफलता हेतु भी कई जरूरी दिशा-निर्देश दिए गए।

एक देश, एक चुनाव ऐतिहासिक और आवश्यक कदम : दिलीप

पटना। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष एवं राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने एक देश, एक चुनाव की अवधारणा को राष्ट्रहित में अत्यंत आवश्यक बताते हुए विस्तार से इसके लाभों और आवश्यकता पर प्रकाश डाला। डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि देश में बार-बार चुनाव होने के कारण विकास की प्रक्रिया बाधित होती है। बार-बार आदर्श आचार संहिता लागू होने से न केवल प्रशासनिक कार्य रुकते हैं, बल्कि सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन भी प्रभावित होता है। साथ ही, चुनाव प्रक्रिया में खर्च होने वाले धन और समय का सदुपयोग राष्ट्र निर्माण के कार्यों में किया जा सकता है। एक देश, एक चुनाव के प्रमुख लाभ को गिनाते हुए डॉ जायसवाल ने कहा कि बार-बार चुनाव कराने से सरकार और निर्वाचन आयोग पर भारी आर्थिक बोझ पड़ता है। एक देश, एक चुनाव से देशभर में चुनाव एक ही समय पर संपन्न होंगे, जिससे समय और पैसे की बचत होगी। बार-बार चुनाव के कारण सरकारी योजनाओं के क्रियान्वयन में देरी होती है। एक ही समय पर चुनाव होने से आचार संहिता बार-बार लागू नहीं होगी और सरकारें बिना किसी रुकावट के विकास कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर पाएंगी। चुनाव के दौरान बड़ी संख्या में सरकारी कर्मचारियों और सुरक्षा बलों को तैनात किया जाता है, जिससे नियमित प्रशासनिक कार्य बाधित होते हैं। एक देश, एक चुनावह्व से प्रशासनिक कार्यों में स्थिरता आएगी। बार-बार चुनाव होने से राजनीतिक दलों और नेताओं का ध्यान विकास कार्यों से हटकर चुनावी राजनीति में लगा रहता है। एक देश, एक चुनाव से इस राजनीतिक अस्थिरता को समाप्त किया जा सकता है। एक ही समय पर चुनाव होने से जनता को बार-बार मतदान की प्रक्रिया से गुजरना नहीं पड़ेगा, जिससे उनकी भागीदारी में उत्साह और विश्वास बना रहेगा। डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक देश, एक चुनाव को साकार करने के लिए गंभीर प्रयास किए जा रहे हैं। यह एक दूरदर्शी पहल है, जो भारत को एक सशक्त लोकतांत्रिक राष्ट्र बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

आरएसएस का एजेंडा लागू करना चाहती है मोदी सरकार : तेजस्वी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने एक देश एक चुनाव प्रस्ताव का विरोध किया है। कहा कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार पूरे देश में आरएसएस का एजेंडा लागू करना चाहती है। बिहार जैसे प्रदेश में चुनाव आयोग एकसाथ चुनाव नहीं करा सकता है तो पूरे देश में एक साथ चुनाव कैसे संभव है। मधेपुरा में मीडिया से बात करते हुए तेजस्वी ने विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार रखे। तेजस्वी ने कहा कि बिहार को देश में अव्वल लाना उनका लक्ष्य है। राज्य में बेरोजगारी और पलायन सबसे बड़ी समस्या है। बिहार के जिलों का दौरा कर कार्यकर्ताओं से संवाद कर रहे हैं और क्षेत्र की समस्या से अवगत हो रहे हैं।

संवाद और यात्रा के नाम पर खर्च हो रहे अरबों रुपये

नेता प्रतिपक्ष ने मुख्यमंत्री की प्रगति यात्रा पर तंज कसा है। नेता प्रतिपक्ष ने मंगलवार को कहा कि मुख्यमंत्री एक पखवाड़े में एक ही यात्रा का कई बार नाम बदल चुके है। पहले महिला संवाद, फिर समाज सुधार और अब प्रगति यात्रा। नेता प्रतिपक्ष ने यात्रा पर निकलने से पहले मुख्यमंत्री से दस सवालों का जवाब मांगा है। तेजस्वी ने पूछा है कि 2023 में समाधान यात्रा के दौरान जनप्रतिनिधियों द्वारा उठाई गयी कितनी समस्याओं का समाधान उनके द्वारा अभी तक किया गया है? समाधान यात्रा में दर्ज की गयी कितनी समस्याएँ अभी भी उनके आश्वासन व निर्देश के बावजूद यथावत है? क्या उन समस्याओं के यथावत रहने के दोषी वो नहीं है? मुख्यमंत्री के जनता दरबार में नागरिकों द्वारा की गयी जन शिकायतों का निवारण अभी तक क्यों नहीं हुआ है? जनप्रतिनिधियों के जन सरोकारों, शिकायतों, जन समस्याओं को दरकिनार कर इन्होंने आखिर में चंद अधिकारियों की ही बातें सुननी है तथा अपनी ही रटी-रटाई, घिसी-पीटी बातें सुनानी है तो एकालाप से परिपूर्ण इस यात्रा का फायदा क्या? जब जनता से संवाद करना ही नहीं तो उड़न खटोले से यात्रा कर अधिकारियों संग चाय-पानी में अरबों रुपए खर्च क्यों कर रहे है? क्या किसी संवाद में गरीब राज्य का 225,7800000 रुपए अल्पाहार और सोशल मीडिया के प्रचार में खर्च करना जायज है? क्या यह यात्रा अधिकारियों को लूट की छूट यात्रा नहीं है? क्या इस यात्रा में वो घर-घर मिल रही शराब, शराबबंदी में पुलिस की मिलीभगत तथा शराबबंदी की विफलता की प्रगति की समीक्षा करेंगे? क्या यह टायर्ड मुख्यमंत्री और रिटायर्ड अधिकारी द्वारा जिलास्तरीय अधिकारियों को तबादले की चेतावनी एवं धमकी देकर उगाही करने संबंधित यात्रा नहीं है? क्या यह मुख्यमंत्री की थानों और ब्लॉक में व्याप्त भ्रष्टाचार की प्रगति को गति देने की यात्रा है?

युद्ध नायकों का अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा : युवा कांग्रेस

पटना। पटना के गर्दनीबाग चौराहा पर 1971 के ऐतिहासिक विजय की विरासत पर हमला और हमारे युद्ध नायकों का अपमान बर्दाश्त नहीं करने के मुद्दों को लेकर बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष शिव प्रकाश गरीब दास के नेतृत्व में प्रदर्शन किया। शिव प्रकाश गरीब दास ने कहा कि मोदी सरकार द्वारा सेना मुख्यालय से पाकिस्तान के आत्मसमर्पण की प्रतिष्ठित तस्वीरों को हटाना हमारे देश के गौरवशाली इतिहास के प्रति उनकी उदासीनता और नकारात्मक दृष्टिकोण को दशार्ता है। यह केवल तस्वीरों का हटाना नहीं, बल्कि हमारे नायकों की वीरता और बलिदान के प्रति अपमान है। युवा कांग्रेस मांग करती है तस्वीर को पुनः स्थापित किया जाए। उन्होंने कहा 1971 में शहीद हुए सैनिकों का तस्वीरों हटाना घोर अपमान है। युवा कांग्रेस का एक- एक कार्यकर्ता एकजुट होकर इस अन्याय के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ेंगे यह तस्वीर हटाना मोदी सरकार की ओछी मानसिकता का प्रमाण है। इस मौके पर राहुल पासवान, सूरज कुमार, अमित सिकन्दर, अमित सूडू, विवेक चौबे, प्रिन्स कुमार आदेश सिंह, बंसत कुमार, सरफराज, मो ताबीज, चौधरी चरण सिंह, भोला सिंह, सोनू अग्रवाल, समेत दर्जनों युवा कांग्रेस के कार्यकर्त्ता उपस्थित रहे।

महागठबंधन में सीट शेयरिंग पर महासंग्राम का हुआ आगाज : प्रभाकर

पटना। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रभाकर कुमार मिश्र ने महागठबंधन पर जमकर तंज कसते हुए कहा कि बिहार विधानसभा चुनाव में अभी महीनों का समय है, लेकिन महागठबंधन में सीट शेयरिंग को लेकर महासंग्राम का आगाज हो चुका है। जितना करीब चुनाव आयेगा, यह संग्राम और विस्फोटक रूप ले लेगा। श्री मिश्र ने मंगलवार को प्रेस विज्ञप्ति जारी कर कहा कि बिहार विधानसभा चुनाव आते-आते महागठबंधन पूरी तरह बिखर जाएगा। घमंडियों के इस जमावड़े में सीट शेयरिंग को लेकर अभी से धींगामुश्ती शुरू हो गयी है। बिहार के चुनाव में हमेशा याचक की भूमिका में रहनेवाली कांग्रेस ने राजद के सामने अपनी हथेली फैला दी है। उसने 70 सीटों के लिए अपना बड़ा मुंह खोला है। लेकिन, राजद कांग्रेस के मुंह में निवाला डालने को तैयार नहीं है। श्री मिश्र ने कहा कि असल में महागठबंधन में शामिल दल अपनी डफली बजाते हुए अपना राग अलाप रहे हैं। सभी का स्वार्थ हमेशा एक-दूसरे से टकराता रहा है। इनके बीच एक ही समानता है कि सभी भ्रष्टाचारी हैं। श्री मिश्र ने कहा कि सीट शेयरिंग में कांग्रेस को राजद उसकी औकात दिखाने के मूड में हैं। इस बार महागठबंधन में बड़े भाई और छोटे भाई को लेकर कुश्ती हो रही है। देखना होगा कि बड़े भाई बनने का दंभ भरने वाली कांग्रेस को राजद बड़ा भाई तो दूर छोटा भाई भी बनाता है या नहीं, या हर बार की तरह इस बार भी अपना अर्दली बनवाकर रखता है।

पटना जीपीओ में नवीनीकृत पोस्ट शॉपी का लोकार्पण

स्टेशनरी, ग्रीटिंग कार्ड व किताबों की कर सकते हैं खरीददारी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पटना जीपीओ के स्वर्णिम एवं गौरवशाली इतिहास में आज एक और अध्याय जुड़ा। मुख्य पोस्टमास्टर जनरल अनिल कुमार ने जीपीओ में नवीनीकृत पोस्ट शॉपी का लोकार्पण किया। बिहार के डाक ग्राहक अब डाक सेवाओं के अलावा स्टेशनरी, ग्रीटिंग कार्ड, मग, छोटी-मोटी लेकिन अत्यंत उपयोगी वस्तुओं के साथ ही साथ किताबें भी इस नवीनीकृत पोस्ट शॉपी के माध्यम से खरीद सकते हैं। पटना जीपीओ का यह पायलट प्रोजेक्ट है जो बिहार में अपनी तरह का पहला है, जिसे मांग के आधार पर अन्य केंद्रों तक बढ़ाया जाएगा। डाक विभाग और उनके कर्मचारियों द्वारा संचालित यह परियोजना, खुद को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए भारतीय डाक विभाग की ओर से विविधीकरण का हिस्सा है। इस अवसर पर अनिल कुमार ने कहा कि जीपीओ अपने पोस्ट शॉप में न केवल डाक टिकट संग्रह सामग्री, बल्कि स्मृति चिन्ह, उपहार सामग्री, पुस्तकें, आदिवासी कला और व्यक्तिगत डाक टिकट आदि भी ग्राहकों को उपलब्ध कराएगा। जहां ये सभी वस्तुएं निजी उपयोग के साथ-साथ मित्रों और रिश्तेदारों को उपहार के रूप में भेजने के लिए भी बेची जाएंगी। साथ ही साथ उन्होंने यह भी कहा की यहाँ अनेक वस्तुएं विक्रय हेतु रखी जाएंगी, ताकि नागरिक न केवल अपने घरों के लिए इन्हें एकत्र कर सकें, बल्कि भारत और विदेश में जिसे चाहें, उन्हें भेज सकें। श्री पवन कुमार, निदेशक डाक सेवाएँ ने बताया कि पोस्टल शॉप पैकिंग, शिपिंग, माल ढुलाई और कार्गो सेवाओं के लिए वन-स्टॉप-शॉप है। यह दर्जनों व्यावसायिक उत्पाद और सेवाएँ प्रदान करता है, ताकि आप उस पर ध्यान केंद्रित कर सकें जिसमें आप अच्छे हैं, जबकि वे उन अन्य चीजों को संभालते हैं जिनकी आपको सफल होने के लिए जरूरत है। इस कार्यक्रम में रंजय कुमार सिंह, मुख्य पोस्टमास्टर, पटना जीपीओ, राजदेव प्रसाद, वरीय अधीक्षक, रेल डाक सेवा, मनीष कुमार, वरीय डाक अधीक्षक, पटना डिवीजन, कुंदन कुमार, अधीक्षक, रेल डाक सेवा, रॉबिन चंद्रा, सहायक निदेशक (फिलाटेली), शंभु कुमार, सहायक निदेशक (वित्त सेवाएँ), प्रणव झा, सहायक निदेशक (स्टाफ), अनिल कुमार, उप मुख्य पोस्टमास्टर (प्रशासन), पटना जीपीओ; नवीन कुमार, सहायक निदेशक (व्यवसाय एवं विपणन), कुमारी सरिता, उप मुख्य पोस्टमास्टर (मेल एवं ट्रेजरी) पटना जीपीओ; अनिल कुमार, डाक निरक्षक (ग्राहक संतुष्टि), पटना जीपीओ, बिहार सर्किल कार्यालय के अधिकारी और कर्मचारी, मीडियाकर्मी और आम जनता इस स्वर्णिम पल के साक्षी बने।

विभागीय पदाधिकारी अंचल कार्यालय का निरीक्षण करना सुनिश्चित करें

पटना। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग के सचिव जय सिंह की अध्यक्षता में विभागीय कार्यालय कक्ष में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में ई मापी, भू अभिलेख पोर्टल, भू समाधान, भू संपरिवर्तन व ऑनलाइन लगान, ऑनलाइन दाखिल खारिज एवं ऑनलाइन परिमार्जन समेत अंचल निरीक्षण की व्यवस्था पर चर्चा की गई। इस दौरान सचिव श्री सिंह ने कहा कि सरकारी भूमि, न्यायालय के आदेश, विधि व्यवस्था एवं लोक शिकायत में पारित आदेशों से संबंधित मामलों में वेबसाइट के ड्रॉपडाउन मेन्यू में इन्हें जोड़ कर उनका मापी कराई जाय। उन्होंने कहा कि परिमार्जन के छोड़े गए जमाबंदी के मामले में बिना जमाबंदी संख्या के भी नापी के आवेदन लेने की व्यवस्था सॉफ्टवेयर में सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि जिलावार प्रति अमीन अभी औसत तीन मापी के मामले निष्पादित किए जा रहे हैं और इसमें सरकारी भूमि की नापी की संख्या को जोड़ा नहीं जा रहा है। ऐसी स्थिति में सरकारी भूमि की नापी के अभिलेखों को भी ऑनलाइन हर हाल में कराया जाय। नापी के मामलों में ससमय फीस का भुगतान नहीं करने वाले आवेदकों के आवेदन को 60 दिन के अंदर निरस्त किए जाने का प्रावधान जरूरी है। रेवेन्यू कोड मैनेजमेंट सिस्टम के तहत ई मापी के अंतर्गत आवेदन करने तथा उसके अंतिम रिपोर्ट को भी उक्त प्रणाली के माध्यम से देखने की व्यवस्था की जाय। ऑनलाइन दाखिल खारिज एवं ऑनलाइन परिमार्जन के मामलों की चर्चा करते हुए सचिव ने कहा कि ऑनलाइन दाखिल खारिज एवं परिमार्जन प्लस के तहत प्राप्त आवेदनों के गुणवत्तापूर्ण निष्पादन की समय समय पर समीक्षा की जाय। कार्यप्रणाली को चुस्त दुरुस्त बनाए रखने के लिए अंचल निरीक्षण की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि विभागीय सभी पदाधिकारी माह में कम से कम दो जिलों के एक भूमि सुधार उप समाहर्ता एवं एक अंचल कार्यालय का निरीक्षण करना सुनिश्चित करेंगे। सचिव श्री सिंह ने कहा कि वैसी जमाबंदी जिसमें रकबा तो अंकित है परंतु लगान अंकित नहीं है। वैसे मामलों में केंद्रीयकृत व्यवस्था के तहत लगान अंकित करने की कार्रवाई की जाए। बसेरा दो अभियान की चर्चा करते हुए सचिव ने कहा कि सहरसा, मधेपुरा, प चंपारण, बक्सर, भागलपुर एवं वैशाली में बसेरा दो के तहत योग्य लाभुकों के चयन हेतु तैयार सर्वेक्षण सूची में गड़बड़ी करने वाले कर्मचारियों पर की गई कार्रवाई का प्रतिवेदन संबंधित समाहर्ता से मांगी जाय। साथ ही पर्चा वितरण के प्रस्ताव में किसी प्रकार की त्रुटि पाए जाने पर सात दिनों के अंदर संबंधित अंचलाधिकारी को भूमि सुधार उप समाहर्ता के कार्यालय में बुलाकर उसका समाधान करने हेतु पत्र प्रेषित किया जाय। सरकारी भूमि की अनुपलब्धता की स्थिति में मुख्यमंत्री गृह स्थल सहायता योजना के तहत भूमि उपलब्ध कराने हेतु सभी समाहर्ता को पत्र प्रेषित किया जाय। सचिव ने कहा कि थानों के निरीक्षण के समय भूमि विवाद के मामलों के गुणवत्ता के साथ निष्पादन की समीक्षा की जाय। इस बैठक में विभाग के सभी वरीय अधिकारी मुख्य रूप से उपस्थित थे।

समाजसेवी एवं शिक्षाविद रामप्रीत राय के निधन पर राजद में शोक

पटना। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी एवं नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने समाजसेवी, शिक्षाविद और रामशरण राय महाविद्यालय महनार के पूर्व अध्यक्ष रामप्रीत राय के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि ग्रामीण स्तर पर लोगों के बीच शिक्षा के प्रसार-प्रचार में श्री राय द्वारा दिए गए योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उनके निधन से समाज और विशेषकर वैशाली जिला को अपूरणीय क्षति हुई है जिसकी भरपाई संभव नहीं है। वैशाली जिला राजद के प्रधान महासचिव प्रो.संजय कुमार राय के पिता श्री राय का निधन कल उनके पैतृक गांव वैशाली जिला के पानापुर मक्कनपुर में हो गया था। आज उनका दाह-संस्कार वैशाली जिला के सरारी घाट पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में शिक्षक, समाजसेवी एवं उनके प्रशंसक उपस्थित थे। जीवन का शतक लगा चुके श्री राय के निधन पर शोक व्यक्त करने वालों में राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी, राष्ट्रीय महासचिव भोला यादव, मोहम्मद फैसल अली, पूर्व मंत्री आलोक कुमार मेहता, प्रदेश उपाध्यक्ष शिवचन्द्र राम, प्रदेश के प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश प्रवक्ता चित्तरंजन गगन, विधायक मुकेश रौशन के साथ हीं अरविन्द सहनी एवं पी के चौधरी शामिल हैं।

एक राष्ट्र एक चुनाव राष्ट्रहित में वपक्ष का रवैया दुर्भाग्यपूर्ण : राजीव

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने कहा कि जनता दल यूनाइटेड की सहमति वन नेशन वन इलेक्शन पर पहले से ही है। इस बिल पर विपक्ष का लोकसभा में रवैया बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। इस फैसले से लोकतंत्र में मजबूती आएगी एवं सरकार की योजनाओं और नीतियों में निरंतरता बनी रहेगी। उन्होंने कहा कि बार-बार चुनाव में होने वाली फिजूल खर्ची पर भी रोक लगेगी। श्री प्रसाद ने कहा कि आजादी के बाद छठे दशक के उत्तरार्ध तक लोकसभा और विधानसभा चुनाव साथ-साथ होते थे। असमय राज्य सरकारों के पतन एवं विधानसभाओं के चुनाव की वजह से हर समय देश के किसी न किसी राज्य में चुनाव होने लगे। उन्होंने कहा कि अगर एक बार फिर से यह लागू होता है तो भारतीय लोकतंत्र की मजबूती और निर्वाचन तंत्र की निष्पक्षता को बनाए रखने में कारगर साबित होगी।

पूर्व मध्य रेल

ई—ऑक्शन सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, समस्तीपुर द्वारा समस्तीपुर मंडल के अंतर्गत झंझारपुर (JJP) एवं निर्मली (NMA) रेलवे स्टेशनों के सर्कुलेटिंग एरिया में स्थित नॉर्मल पे एण्ड यूज शौचालय, मूत्रालय एवं स्नानागार का संचालन तीन वर्षों के लिये किये जाने हेतु ई—ऑक्शन का आमंत्रण भारतीय रेल के वेब पोर्टल आई.आर.ई.पी.एस पर किया जाता है:—

क्र.सं. : 01, **स्टेशन का नाम :** झंझारपुर (JJP) **क्र.सं. :** 02, **स्टेशन का नाम :** निर्मली (NMA), **पे एण्ड यूज का प्रकार :** नॉर्मल पे एण्ड यूज शौचालय, मूत्रालय एवं स्नानागार, **कैटलॉग संख्या :** SPJ-PNU-NOR-45, **अवधि :** ठीका प्रारंभ होने की तिथि से तीन वर्षों के लिए **निविदादाताओं के लिए निर्देश : 01 ऑक्शन प्रपत्र की उपलब्धता :** ऑक्शन प्रपत्र आईआरईपीएस के वेबसाईट पर उपलब्ध है। **02 ई—ऑक्शन की तिथि एवं समय :** दिनांक 23.12.2024 को 13:30 बजे। **03 वेबसाईट का विवरण जिस पर ई—ऑक्शन प्रपत्र उपलब्ध है :** ई—ऑक्शन IREPS के वेबसाईट पर ऑनलाईन डाला जाना है। विस्तृत विवरण के लिए, कृपया वेबसाईट www.ireps.gov.in. का अवलोकन करें। किसी प्रकार के मैनुअल टेंडर स्वीकार नहीं किया जाएगा।

मंडल रेल प्रबंधक (वा.)
पूर्व मध्य रेल, समस्तीपुर

पीआर/01705/एसपीजे/वा./एन/24—25/36

राज्यपाल ने किया स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय की पुस्तक का विमोचन

लोकार्पण

यह पुस्तक सूबे के स्वास्थ्य क्षेत्र की स्थिति का एक दर्पण है

- आरोग्य पथ पर बिहार जन स्वास्थ्य का मंगल काल का हुआ लोकार्पण

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राज्यपाल राजेन्द्र विश्वनाथ आर्लेकर ने मंगलवार को स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय द्वारा रचित पुस्तक आरोग्य पथ पर बिहार जन स्वास्थ्य का मंगल काल का लोकार्पण किया। इस मौके पर राज्यपाल ने स्वास्थ्य क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति को लेकर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय की प्रयासों को सराहा। कहा कि स्वास्थ्य संदर्भ में पुस्तक विमोचन के लिए आज हम एक महत्वपूर्ण अवसर पर एकत्रित हुए हैं। आरोग्य पथ पर बिहार श्री मंगल पाण्डेय के स्वास्थ्य मंत्री के रूप में व्यक्तिगत अनुभवों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह बिहार के स्वास्थ्य क्षेत्र की स्थिति का भी एक दर्पण है। यह पुस्तक दूरदर्शिता, जुनून, साहस और समर्पण के साथ कठिन कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने की यात्रा का एक विवरण है। 29 जुलाई, 2017 से अब तक (बीच में एक संक्षिप्त अंतराल के बाद), बिहार की जनता की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर, इन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के सक्षम नेतृत्व में बिहार की स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में आमूलचूल सुधार करने के लिए जो अथक प्रयास किए हैं, जो मनोयोग और प्रतिबद्धता दर्शाई है, वह सराहनीय है। राजनीतिक जीवन की आपाधापी के बावजूद एकाग्रता, दृढ़ता और निष्ठा से चुनौतियों को स्वीकारते हुए श्री पाण्डेय ने बिहार की स्वास्थ्य प्रणाली को एक नई पहचान दी है। आज बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था के क्षेत्र में जो वांछित परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं, उसका मुख्य श्रेय नेतृत्व के साथ पाण्डेय को जाता है। सबको गुणवत्तापूर्ण इलाज के लक्ष्य के साथ श्री पाण्डेय ने विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं के समाधान के लिए नीतिगत व्यवस्था की नींव डाली है। बिहार के हर व्यक्ति के लिए राज्य में ही उन्नत स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हों और उन्हें इलाज के लिए राज्य से बाहर अन्य राज्यों में न जाना पड़े। श्री पाण्डेय के कार्यकाल में न केवल प्राथमिक स्तर के स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, बल्कि जिला और राज्यस्तरीय संस्थानों, जैसे-चिकित्सा महाविद्यालय और अस्पतालों की संख्या में भी प्रभावी बढ़ोतरी हुई है। नए और आधुनिक संस्थानों की स्थापना के साथ-साथ अनुमंडलीय और जिला अस्पतालों सहित मौजूदा स्वास्थ्य इकाइयों में भी सुविधाओं का विस्तार हुआ है। श्री पाण्डेय जी जानते हैं कि सिर्फ इमारतों से किसी संस्थान का निर्माण नहीं होता है। यही कारण है कि प्रारंभ से ही इन्होंने कुशल और सक्षम व्यक्तियों का चयन, पर्याप्त साधन और उचित तकनीक की उपलब्धता पर जोर दिया है। राज्य में शिशु व मातृ मृत्यु दर के आँकड़े हों या जनसंख्या नियंत्रण, हर मोर्चे पर बेहतर परिणाम मिले। पहली बार करीब 30 हजार डॉक्टरों, पारामेडिकल स्टाफ सहित अन्य स्टाफ की भर्ती की गई। दवाओं की पहुँच व उपलब्धता में सुधार किया गया। आज बिहार दवा पहुँच व उपलब्धता के मामले में पूरे देश में पिछले तीन माह से पहले स्थान पर है। बिहार में मुफ़्त दवा वितरण योजना के अंतर्गत 109 दवा वितरण वाहन की व्यस्था की गई है जिससे राज्य स्तर से लेकर स्वास्थ्य उपकेंद्र स्तर तक सभी दवाओं की उपलब्धता की जा रही है। टीकाकरण के मामले में बिहार लगातार आगे बढ़ रहा है। पिछले माह बिहार प्रथम स्थान पर रहा। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु 1000 नए टीकाकरण केंद्र खोले गए हैं। स्वतंत्र बिहार के इतिहास में पहली बार ऐसा हुआ कि एक साथ 1,000 एंबुलेंस खरीदी गईं, इसमें 534 एडवांस्ड लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस और 466 बेसिक लाइफ सपोर्ट एंबुलेंस थीं। बिहार में 1.55 करोड़ परिवार के लगभग 3 करोड़ 70 लाख लोगों को आयुष्मान कार्ड दिया जा चुका है। यह खुशी की बात है कि आयुष्मान कार्ड बनाने में बिहार पूरे देश में तीसरे स्थान पर है। जो बहुत जल्द दूसरा स्थान पर आ जाएगा। इस योजना के तहत अभी तक बिहार में लगभग 2100 करोड़ रुपए ईलाज पर खर्च हुए। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री आदरणीय नरेंद्र मोदी जी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी का सोच गरीबों की सेवा है, जो अभी तक आयुष्मान योजना के प्रयासों से प्रतिविम्बित हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं नीतीश कुमार के प्रयासों से पूरे देश और राज्य में 70 वर्ष से अधिक आयु वाले सभी वर्गों के लाभार्थियों को उत्कृष्ट स्वास्थ्य सेवा मिले इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा आयुष्मान वय वंदना योजना शुरू की गई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की प्रेरणा, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व और मंगल पाण्डेय के प्रयासों से बिहार की स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था की उत्तरोत्तर प्रगति की यात्रा जारी रहेगी।

भवन निर्माण विभाग

बिहार सरकार

विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0-2, पटना
अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0—30 वर्ष 2024—25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता : विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या—2 भवन निर्माण विभाग, पटना।
2. परिमाण विपत्र की बिक्री की अंतिम तिथि : 02.01.2025 2:00 बजे अप0 तक ।
3. निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय : 02.01.2025 3:00 बजे अप0 तक ।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय : 03.01.2025 (3:30 बजे अप0)
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान : विद्युत कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य प्रमंडल संख्या—2, पटना। विद्युत कार्य अवर प्रमंडल, दानापुर एवं विद्युत अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, विद्युत कार्य अंचल, दक्षिण बिहार, पटना
6. निविदा प्राप्ति का स्थान क्रमांक 5 के अनुरूप।

क्रम सं0	कार्य का नाम	परिमाण विपत्र की राशि	अग्रधन की राशि	परिणाम विपत्र का मुल्य	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Provision of E/W & E/I in Newly Construction One Stop Centre Building Barh Distt Patna.	86656.00	1800.00	250.00	15 Days
2	Provision of E/W & E/I in Newly Construction One Stop Centre Building Patnacity Distt Patna.	68656.00	1800.00	250.00	15 Days

इस निविदा को विज्ञापन वेबसाईट www.state.bihar.gov.in/prdbihar पद पर देखा जा सकता है।

PR. No. 014958(BCD) 2024-25

विद्युत कार्यपालक अभियंता,
विद्युत कार्य प्रमंडल सं0—2, पटना

सुरक्षित जीवन अपनाओ, अपनी नियमित एच.आई.वी. जाँच कराओ।

संक्षिप्त खबरें

स्कॉर्पियो की चपेट में आने से अधेड़ हुआ गंभीर रूप से जख्मी

कल्याणपुर, समस्तीपुर। थाना क्षेत्र के गोपालपुर चौक के समीप कल्याणपुर की ओर से समस्तीपुर की ओर जा रहे एक स्कॉर्पियो पेड़ में ठोकर मार दिया। इसी दौरान अचानक साइकिल सवार व्यक्ति स्कॉर्पियो की चपेट में आने से गंभीर रूप से जख्मी हो गया। प्रत्यक्षदर्शियों का बताना है कि स्कॉर्पियो भी आगे से क्षतिग्रस्त हो गई। वही जख्मी व्यक्ति की पहचान बिरसिंहपुर गांव के 65 वर्षीय नंदन पंडित के रूप में हुई है। लोगों का बताना है कि स्कॉर्पियो का चालक भागने में सफल है। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

25 लीटर विदेशी शराब बरामद

कल्याणपुर, समस्तीपुर। थाना क्षेत्र के तीरा जटमलपुर गांव में एक सरसों के खेत से पुलिस ने 25 लीटर विदेशी शराब बरामद किया है। साथ ही पुलिस ने शराब एक कारोबारी उत्तम सहनी को गिरफ्तार कर लिया है। वहीं थानाध्यक्ष राकेश कुमार शर्मा ने बताया कि उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज करते हुए गिरफ्तार युवक को समस्तीपुर कोर्ट भेज दी गई है।

सोलर स्ट्रीट लाइट चोरी

विभूतिपुर, थाना क्षेत्र में चोरों का मनोबल इन दोनों इतना बढ़ गया है कि चोर किसी भी समय, कहीं भी चोरी की घटना का अंजाम देकर निकल जाता है। प्रशासन को भनक तक भी नहीं लग पाता है। वहीं प्रशासन रात्रि गश्ती के नाम पर खानापूर्ति तो करते हैं। लेकिन इस पर अंकुश लगाने में अभी तक असफल साबित हो रहे हैं। ताजा मामला थाना क्षेत्र की नरहन स्टेट का है। जहां मुख्यमंत्री सोलर स्ट्रीट लाइट योजना के तहत 2 महीने पहले स्ट्रीट लाइट लगाया गया। जहां एक ही वार्ड में प्रहलाद राम और नरहन के पूर्व मुखिया स्वर्गीय विनोद कुमार राय के डेरा के सामने से अज्ञात चोरों ने सोलर प्लेट की चोरी कर ली। मामले की सूचना स्थानीय वार्ड सदस्य एवं वार्ड पंच प्रतिनिधि के द्वारा स्थानीय थाना को दिया गया है।

लोजपा की बैठक में कई मुद्दे पर हुई चर्चा

विभूतिपुर, समस्तीपुर। थाना क्षेत्र के विभूतिपुर पूरब पंचायत आदर्श चौक पर लोजपा कार्यकर्ता की बैठक शेखर प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। बैठक में समस्तीपुर सांसद शांभवी चौधरी द्वारा संसद में भोला टॉकीज एवं मुक्तापुर ओवर ब्रिज निर्माण मामले को उठाए जाने को सराहनीय बताया। साथ ही कार्यकताओं की समस्याओं का निपटारा एवं संगठन की मजबूती पर जोड़ दिया। मौके पर राकेश दास, श्याम कुमार महतो, राम टहल महतो आदि मौजूद थे।

तीन फरार वारंटी को भेजा गया जेल

जमुई [झाझा] अलग अलग मामले में लंबे समय से फरार चल तीन नामजद वारंटी को पुलिस ने अलग अलग जगहों से गिरफ्तार किया है। इस संदर्भ में एसएचओ संजय कुमार ने बताया कि न्यायालय के आदेश पर जारी वारंट के तहत रजला से प्रमोद कुमार यादव, बरमसिया से राजू यादव और तेलियाडीह गांव से ढुकलाल रविदास को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार सभी वारंटी को कागजी कार्रवाई पूरी करने के बाद न्यायिक हिरासत में जमुई भेज दिया गया है।

पीड़ित किसान अगलगी की घटना में थाना में दिया आवेदन

जमुई [झाझा] थानाक्षेत्र के करहरा पंचायत के भेलविंदा गांव में दर्जनों किसान का खलिहान में रखे धान के पुंजर में आग लग जाने की घटना के बाद पीड़ित किसान ने थाना में आवेदन दिया है। अगलगी की घटना में पीड़ित 20 किसानों को लगभग 10 लाख रुपए की हुई आर्थिक क्षति से मर्माहत किसान ने स्थानीय अधिकारी से लेकर जिला के वरीय पदाधिकारी से मदद की गुहार लगाया है। बताते चले कि चुरामन यादव, लौंगी यादव, सुभीत, सौदागर सहित कुल 20 किसानों का धान का पुंजर खलिहान में एक जगह रखा हुआ जिसमें अचानक आग लग गई और अग्निशमन विभाग के कर्मी ने ग्रामीणों की मदद से करीबन 3 घण्टे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया था।

अब आयुष्मान कार्ड से करवा सकेंगे बुखार और डायरिया समेत सामान्य बीमारियों का भी इलाज

डिलीवरी व सिजेरियन केवल सरकारी अस्पतालों में, गड़बड़ी की शिकायतों के बाद निजी अस्पतालों में रोक

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत सम्बद्धता प्राप्त सरकारी और निजी अस्पतालों में अब बुखार, डायरिया जैसी सामान्य बीमारियों का भी इलाज हो सकेगा। सामान्य मेडिसिन विभाग के तहत आने वाली उन सभी बीमारियों का इलाज आयुष्मान भारत योजना के स्मार्ट कार्ड के तहत पांच लाख रुपए तक के दायरे में कराया जा सकेगा। हालांकि, जिले के निबंधित अस्पतालों में ही यह सुविधा उपलब्ध मिलेगी। फिलहाल अभी आयुष्मान कार्डधारकों के इलाज के लिए जिले के जिले में 22 निजी अस्पतालों को अनुबंधित किया गया है। बताते चलें कि पहले लोगों का मानना था कि आयुष्मान कार्ड पर सिर्फ ऑपरेशन वाली बीमारी का ही इलाज हो सकता है। लेकिन जिले के 22 निजी अस्पतालों में सामान्य बीमारी से पीड़ित लोग भी अपना इलाज करा सकते हैं। बता दें कि 20 नवंबर से 16 दिसंबर के बीच जिले में अभियान के तहत 13 हजार 514 लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाया गया है। डिलेवरी और सिजेरियन ऑपरेशन की सुविधा अब सिर्फ सरकारी अस्पतालों में ही उपलब्ध होगी। सदर अस्पताल सहित जिले के सभी सीएचसी को आयुष्मान योजना से निबंधित किया जाएगा। इन सभी सरकारी अस्पतालों में योजना के तहत डिलेवरी व सिजेरियन की सुविधा उपलब्ध होगी। बताया जाता है कि निजी अस्पतालों में कई गड़बडियां सामने आने के बाद सरकार ने इन अस्पतालों में डिलेवरी व सिजेरियन पर रोक लगा दी है। इस संबंध में आयुष्मान भारत योजना की डीपीसी कंचन माला ने बताया कि सिविल सर्जन डॉ एसके चौधरी के निदेर्शानुसार पूरे जोर-शोर से अभियान चलाकर लाभार्थियों का आयुष्मान कार्ड बनाया जा रहा है। इस अभियान में तेजी लाने व लक्ष्य प्राप्ति को लेकर आशा फैसिलिटेटरों को आयुष्मान एप के उपयोग को लेकर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसी के तहत मंगलवार को जिले के 11 प्रखंडों के आशा फैसिलिटेटरों को प्रशिक्षण दिया गया है।

बाबा विद्यापति के नाम पर होगा दरभंगा एयरपोर्ट का नामकरण : सांसद

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। नागर विमानन मंत्री राममोहन नायडू की अध्यक्षता में नागर विमानन मंत्रालय परामर्शदात्री समिति की प्रथम बैठक दरभंगा सांसद सह लोकसभा में भाजपा सचेतक डा गोपाल जी ठाकुर ने सलाहकार समिति के सदस्य के रूप में भाग लिया तथा दरभंगा एयरपोर्ट एवं मिथिला क्षेत्र व बिहार के अन्य प्रस्तावित तथा निमार्णाधीन हवाई अड्डों से संबंधित विभिन्न विषयों पर अपने सुझाव दिए। बैठक में सांसद डा ठाकुर ने सर्वप्रथम देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का हृदयतल से अभिनंदन और आभार प्रकट करते हुए कहा कि मिथिला की हृदयस्थली दरभंगा को उड़ान स्कीम अन्तर्गत जोड़ा गया और आज दरभंगा एयरपोर्ट उड़ान स्कीम से देश में संचालित अन्य सभी एयरपोर्ट से यदि तुलनात्मक अध्ययन किया जाय तो सफलता के क्रम में सबसे ऊपर है और अनवरत सफलता की नई ऊँचाईयों को प्राप्त कर रहा है ।सांसद डा ठाकुर ने इस एयरपोर्ट के नामकरण तथा अन्य मौलिक सुविधाओं पर चर्चा करते हुए कहा कि दरभंगा एयरपोर्ट का नामकरण कवि कोकिल बाबा विद्यापति के नाम से हो यह सम्पूर्ण मिथिलावासी की भावना है इसको लेकर बिहार राज्य के दोनों सदन के माध्यम से बिहार सरकार ने प्रस्ताव भारत सरकार को भेज दिया है। दरभंगा एयरपोर्ट को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा बनाने के लिए हर मानक को पूरा करने जैसे दो दर्जन से उपर अपना सुझाव देते हुए कहा कि आने वाले समय में उड़ान सेवा में भी मैथिली की पहचान देश ही नहीं विदेशों तक स्थापित की जाएगी।

सकरी-हरीनगर रेल खंड पर 4 सप्ताह से परिचालन ठप होने से यात्री परेशान

प्रात : किरण संवाददाता

बेनीपुर(दरभंगा) ।सकरी-हरिनगर रेल खंड पर ट्रेन परिचालन बीते 26 दिनों से ठप रहने से यात्रियों को अधिक खर्च कर जिला सहित अन्य जगहों पर जाने में परेशानी झेलनी पर रही है। दो पाटन के बीच में यात्री पीस रहे हैं। बैगनी एवं नवादा हॉल्ट निर्माण संघर्ष समिति के आंदोलन से मनीगाछी, बेनीपुर, अलीनगर, किरतपुर, घनश्यामपुर, बिरौल, कुशेश्वर पूर्वी-पश्चिमी आठ प्रखंड के यात्रियों को भारी परेशानी झेलना पड़ रहा है। बैगनी हॉल्ट निर्माण संघर्ष समिति ने गत 22 नवंबर को हॉल्ट निर्माण को लेकर रेल का चक्का जाम किया था। उस दिन से सकरी-हरीनगर रेलखंड पर परिचालन पूर्णतः ठप हो गया है। नवादा में रेलवे बोर्ड से हॉल्ट की स्वीकृति मिल गया है। बैगनी रेल संघर्ष समिति के अध्यक्ष रामधनी झा ने कहा कि जगदीशपुर एवं बेनीपुर-बलहा स्टेशन के बीच 5 किलोमीटर पर हॉल्ट बनना चाहिए। राजनीतिक षड्यंत्र से कम दूरी पर नवादा में हॉल्ट बनाया जा रहा है। दैनिक यात्री नवादा, बलहा, महवाटोल, घोंघिया के इंद्र भूषण झा, गौड़ी मिश्र, धूरन पासवान, शिवा सहनी ने बताया कि ट्रेन परिचालन बंद होने से दरभंगा जाने के लिए 50 रुपये बस भाड़ा देना पड़ रहा है। ट्रेन से सिर्फ 10 रुपये में दरभंगा पहुंच जाते थे। बैगनी एवं नवादा के आंदोलनकारियों को यात्रियों की कठिनाई ध्यान रखना चाहिए। आंदोलन करने के लिए रेल लाइन पर नहीं बल्कि रेलवे के समस्तीपुर एवं हाजीपुर कार्यालय पर धरना-प्रदर्शन करना चाहिए। बार-बार सकरी-हरीनगर रेल खंड पर आंदोलन पर रेल परिचालन को बंद करने से क्षेत्र के विकास में अवरोधक नहीं बनना चाहिए। समस्तीपुर रेल मंडल के डीआरएम विनय कुमार श्रीवास्तव ने रेल परिचालन के संबंध में पूछने पर बताया कि लोकल प्रशासन के सहयोग से चलेगा। उनसे यह पूछने पर क्या प्रशासन अपेक्षित सहयोग नहीं कर रही है, तो उन्होंने कहा कि दरभंगा के डीएम इसमें पहल कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि आंदोलनकारी को रेल लाइन पर आंदोलन नहीं करना चाहिए। रेलवे कार्यालय पर आंदोलन करें। रेल बंद होने से यात्रियों को परेशानी झेलनी पड़ रही है। डीआरएम श्रीवास्तव ने कहा कि जगदीशपुर-बेनीपुर-बलहा के बीच 5 किलोमीटर पर हॉल्ट बनाने का प्रावधान है। बहुत जल्द रेल परिचालन शुरू किया जाएगा। उन्होंने कहा कि बैगनी आंदोलनकारियों की मांग का प्रस्ताव रेलवे के उच्चाधिकारी को भेजा गया है। बैगनी रेल संघर्ष समिति के अध्यक्ष रामधनी झा ने कहा 28 नवंबर को उच्च अधिकारियों के साथ वार्ता संतोषजनक हुई और सुचारू ढंग से ट्रेन परिचालन करवाना रेल प्रशासन का काम है।

छापेमारी में गुदरी बाजार से विदेशी शराब के साथ दो कारोबारी गिरफ्तार

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

नगर थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर थाना क्षेत्र के गुदरी बाजार स्थित मछली हट्टा के पास छापेमारी कर तीन टेटरा पैक का विदेशी शराब व दो केन बीयर के साथ दो शराब कारोबारियों को गिरफ्तार किया है। जिनकी पहचान मुजफ्फरपुर जिले के झपहा थाना क्षेत्र के अमर साह के पुत्र व शहर के नीम गली के रामदेव साह के पुत्र जम्मन के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार रोहित गुदरी बाजार में अपनी नानी के यहां रह रहा था और यहीं सब्जी आदि बेचने का काम करता था। घटना के संबंध में नगर थानाध्यक्ष आशुतोष कुमार ने बताया कि नगर थाना में पदास्थापित एसआई हरि लाल प्रसाद यादव थाना के सिपाही झूलन पासवान व इंदल कुमार के साथ संध्या गश्ती में मगरदही घाट के पास चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान मिली गुप्त सूचना के आधार पर उन्हें छापेमारी कर सत्यापन करने का निर्देश दिया गया। वहीं पुलिस को देख दो लोग भागने का प्रयास करने लगे, जिसे बल के सहयोग से पकड़ लिया गया। तलाशी के दौरान उनके जेब से विदेशी शराब बरामद किया गया और उन्हें गिरफ्तार कर थाने ले जाया गया। उनके विरुद्ध मद्य निषेध अधिनियम के उल्लंघन के तहत मामला दर्ज कर उन्हें न्यायिक हिरासत में भेजा जा रहा है।

सशस्त्र सीमा बल जयनगर ने अवैध तरीके से नेपाल ले जाए जा रहे रेडिमेंट कपड़े को पकड़ा

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी सशस्त्र सीमा बल48वी वाहिनी जयनगर के कार्यक्षेत्र अंतर्गत वाहय सीमा चौकी पिपरौन के जिम्मेवारी के इलाके मे एसएसबी के जवानो को एक बड़ी कामयाबी मिली है । जवानो द्वारा रात्रि नाके के दौरान 284/31 के 50 मीटर दूर भारतीय क्षेत्र में कुछ लोग सर पर बोरो में सामान ले जाते दिखाई दिये उनकी नजर एसएसबी के जवानो पर पड़ते ही सामान गिराकर बार्डर नजदीक होने का फायदा उठाकर नेपाल भाग गए । पकड़े गए माल को खोलकर जांच की गयी तो उसमें रेडिमेंट कपड़े निकले जब्त किए गए सामान को सीमा शुल्क कार्यालय पिपरौन को अग्रिम कार्यवाही हेतु सुपुर्द कर दिया गया है। भारत नेपाल सीमा पर तस्करी रोकने के लिए सशस्त्र सीमा बल लगातार अभियान चला रही है। आने वाले समय में भी इसी प्रकार के अभियान चलाकर सीमा पर होने वाली अवैध गतिविधियों को रोका जाएगा ।श्री गोविंद सिंह भंडारी कमांडेंट 48वीं वाहिनी सशस्त्र सीमा बल जयनगर ने बताया कि भारत नेपाल सीमा पर होने वाली तस्करी और अन्य अपराधो की रोकथाम के लिये विशेष अभियान के माध्यम से निरन्तर प्रयासरत है और अवैध गतिविधियो को रोका जा रहा है।

पोखर के बंटवारे को लेकर बड़े भाई ने छोटे भाई पर किया हमला

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी बेनीपट्टी थाना क्षेत्र के मनपौर पंचायत के दुगौली गांव में पोखर को लेकर बड़े भाई ने अपने ही छोटे भाई और भतीजी को लाठी डंडो से पीटकर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल व्यक्ति को इलाज के लिए अनुमंडल अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डाक्टर ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए लिए मधुबनी सदर अस्पताल रेफर कर दिया ।घायल व्यक्ति की पहचान राम कुमार राय और उनकी बेटी अनु कुमारी के रूप में हुई है। और बेटी का इलाज गांव में ही किया जा रहा है ।घायल राम कुमार राय ने बताया कि हमारे पिता के नाम से पोखरा है। हम तीन भाई है लेकिन मेरा बड़ा भाई पोखरा को नही बाट कर उसपर अकेले दबंगई दिखा रहा है। उन्होने बताया कि जब हमारे भाई राम सागर यादव गांव के मल्लाह से मछली मरवा रहा था। हमने मल्लाह को मछली पकड़ने से मना करते हुए कहा कि इस पोखरे पर विवाद चल रहा है। इतना कहकर हम अपने घर वापस चले गए कुछ देर बाद मेरे भाई रामसागर यादव और उनके लड़के रंजित यादव और गौतम यादव लाठी डंडा से लैस होकर मेरे ऊपर हमला कर दिया। इस दौरान बचाने आई मेरी बेटी अनु कुमारी को भी मारपीट कर गंभीर कर दिया ।उन्होने कहा कि इस विवाद को लेकर न्यायालय में मामला चल रहा है। नगर थाना की पुलिस ने बयान दर्ज किया है।

चार अपहरण करता गिरफ्तार, दो फरार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी मामला बाबूबरही थाना क्षेत्र का है उक्त मामले में खजौली सदर एसडीपीओ 2 मनोज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया उनके नेतृत्व में गठित टीम बाबूबरही थानाक्षेत्र के हनुमाननगर गांव से अपहरण कर फिरौती मांगने के मामले का उद्भेदन किया। एसडीपीओ ने इस संबंध में खजौली थाना पर प्रेस क्रॉफिंस कर बताया कि बाबूबरही थानाक्षेत्र के हनुमाननगर गांव निवासी दिलीप कुमार ने उमेश कुमार दास एवं उमेश कामत का अहपरण कर फिरौती मांगने के संबंध में केस दर्ज किया। अहपरणकर्ता द्वारा उनके परिजनो से फिरौती की मांग की। परिजनो ने अपरहणकर्ता के मोवाईल पर फिरौती के नामपर 2 लाख 17 हजार रुपए दिया। शेष राशि की मांग करने पर उन्होने बाबूबरही थाना को इसकी सूचना दी। सूचना पर गठित टीम ने तकनीकी सेल के सहयोग से पंडौल थानाक्षेत्र से चार अपहरणकर्ता को गिरफ्तार किया। इसमे संलिप्त दो आरोपी भागने में सफल रहे।

मुखिया,पंचायत सचिव व तकनीकी सहायक से गवन की राशि 15 दिनों में जमा करने का आदेश

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। उप विकास आयुक्त दरभंगा ने बहेड़ी प्रखंड के सुसारी गांव के दो पीसीसी सड़क निर्माण में प्राक्कलन अनुसार कार्य नहीं कराये जाने की जांच मनरेगा के कार्यपालक अभियंता से कराकर उनके जांच प्रतिवेदन के आलोक में प्राक्कलन के अनुरूप कार्य नहीं करने वाले सुसारी तूर्की के मुखिया, पंचायत सचिव एवं तकनीकी सहायक से गवन की गई 7 लाख37 हजार152 रुपये 15 दिनों के अन्दर वसूली कर बिभागीय खाते में जमा करने का आदेश दिया है। मनरेगा के कार्यपालक अभियंता ने अपने जांच प्रतिवेदन में अंकित किया है कि वित्तीय वर्ष 2022/23 का योजना सं.04 ,पंचायत के वार्ड नं. 13 में मुख्य सड़क से शोभाकांत के गाछी तक पीसीसी कार्य का प्राक्कलित राशि 8 लाख 14 हजार 958 रुपये में कार्य की मापी 8 लाख 8 हजार 483 रुपये दर्शाकर 7 लाख 85 हजार रुपये की निकासी की गई है ।इस योजना में प्राक्कलन के अनुसार कार्य 6 इंच की जगह महज तीन इंच ही पीसीसी ढलाई पाया गया ।वहीं प्राक्कलन के अनुरूप लोकल सैण्ड से सड़क की भराई तथा इंट सोलिंग नहीं किया गया। कतिपय जगह मिट्टी पर पीसीसी ढलाई किये जाने का साक्ष्य पाया गया ।इसके अलावे वित्तीय वर्ष 2022/23 का योजना सं.05 ,ग्राम सुसारी में रामजानकी मंदिर से विनय ठाकुर के घर तक पीसीसी सड़क निर्माण का प्राक्कलित राशि 6 लाख 84,हजार879 रुपये में मापी पुस्तिका पर 5 लाख 50 हजार ,125 रुपये अंकित कर 5 लाख 32 हजार ,305 रुपये की निकासी किया गया है ।इस योजना में ढलाई 6 ईंच की जगह 2 ईंच पाया गया ।दोनों योजनाओं में क्रमशः4 लाख 71 हजार और 2 लाख 62 हजार 152 रुपये,कूल 7 लाख 37 हजार 152 रुपये गवन की गई राशि की वसूली का आदेश दिया है ।सुसारी गांव के हरेकृष्ण झा ने उपरोक्त योजनाओं में प्राक्कलन के अनुसार, काम नहीं किये जाने की शिकायत जिला पदाधिकारी सह द्वितीय अपीलीय प्राधिकार के समक्ष अपील दायर किया था ।इसमें पारित निर्णय के अनुपालन में जिला लेखा पदाधिकारी एवं कार्यपालक अभियंता मनरेगा ने जांचोपरांत प्रतिवेदन समर्पित किया ।इसी के आलोक में डीडीसी ने सुसारी तूर्की के मुखिया ज्योति देवी से 2 लाख 45 हजार 717,पंचायत सचिव आलोक कुमार झा से 2 लाख, 45 हजार,717,और तकनीकी सहायक नितीश कुमार से 2 लाख 45 ,हजार,717 रुपये वसूली कर बिभागीय खाता में जमा करने का आदेश पारित किया है।

स्टेशन स्थित बाइक स्टेण्ड संवेदक पर 84 हजार का जुमार्ना

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर मंडल रेल प्रबंधक ने बाइक स्टेण्ड संवेदक मां तारा इन्टरप्राइजेज को यात्रियों से बाइक के निर्धारण शुल्क से तीनगुना वसूली के विरुद्ध कारवाई करते हुये 84 हजार 370 रुपए जुमार्ना लगाया है। डीसीएम के पत्रांक सी 536 जयनगर डी डब्लू 22 के अनुसार इंटरप्राइजेज की संवेदक रेखा पुर्वे पर जयनगर बाइक स्टेण्ड पर यात्रियो से बाइक के निर्धारित शुल्क 10 रुपए की जगह 30 रुपए वसुली तथा विरोध करने पर यात्री के साथ बदसलुकी मामले में कारवाई किया है। इस मामले में स्टेशन अधीक्षक रमेश चंद्र दासकॉमर्सियल मनेजर के द्वारा यात्री के शिकायत पर जांच किया गया था। उक्त मामले में तीसरी बार इसीतरह के शिकायत के बावत जीएसटी समेत 84 हजार 370 रुपए जुमार्ना लगाते हुये शख्त चेतावनी दिया गया। डीसीएम ने स्टेण्ड संचालको को शख्त चेतावनी देते हुये कहा फिर गलती होने पर जुमार्ना की राशि बढ़ाने के साथ साथ नविदा को रद्द किया जाऐगा।

नागेंद्र झा स्टेडियम में शुरू हुई चयन प्रतियोगिता, तीस महाविद्यालयों ने लिया भाग

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय अंतर्गत लहेरियासराय स्थित नागेंद्र झा महिला कॉलेज द्वारा 17 और 18 दिसंबर 2024 तक चलने वाली दो दिवसीय विश्वविद्यालय अंतर महाविद्यालय एथलेटिक्स (पुरुष एवं महिला) चयन प्रतियोगिता का शुभारंभ हुआ। मंगलवार को डॉ नागेंद्र झा स्टेडियम में उद्घाटन समारोह का आयोजन हुआ जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में विश्वविद्यालय के खेल पदाधिकारी प्रो अजय नाथ झा की गरिमामयी उपस्थिति रही। प्रो झा ने सनातन परंपरा के अनुसार नारियल फोड़ कर इस प्रतियोगिता का शुभारंभ करते हुए कहा कि खेल ही वह विधा है, जिसमें बहुत कुछ पाने को है पर खोने के लिए कुछ भी नहीं है। उन्होंने कई खिलाड़ियों के जीवंत उदाहरण देकर बताया कि कैसे एक खिलाड़ी जीवन के हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा से बेहतर कर सकता है ।आयोजन समिति के सचिव डॉ सरोज राय ने जानकारी साझा करते हुए बताया कि इस प्रतियोगिता में कुल 30 महाविद्यालयों ने भाग लिया जिसमें कुल 95 प्रतिभागियों ने पुरुष वर्ग में एवं 70 प्रतिभागियों ने महिला वर्ग में भाग लिया। पहले दिन पुरुष एवं महिला वर्ग में 100, 200, 400, 800, 1500 मीटर दौड़, ऊँची कूद, लम्बी कूद, भला फेंक, गोला फेंक तथा चक्का फेक इवेंट का आयोजन हुआ। बता दे, आज को 5000 और 10000 मीटर दौड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। । ज्ञातव्य हो कि चयनित खिलाड़ियों को आगामी 23 दिसंबर को भुवनेश्वर में आयोजित होने वाली अखिल भारतीय अंतर विश्वविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता में शिरकत करने का मौका मिलेगा।

पुलिस वैन पोखर में पलटी, जमादार की मौत, दो घायल

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। सिमरी थाना का डायल 112 वैन सोमवार की देर रात गश्त के दौरान पोखर में पलट गई। इसमें जमादार शेखर पासवान की मौत हो गई। जबकि चालक और महिला सिपाही घायल हो गई। घटना रात के करीब 11.30 बजे की बताई जाती है ।घटना में मृत जमादार की पहचान बहादुरपुर थाना क्षेत्र के रघेपुरा गांव निवासी स्व महेंद्र पासवान के पुत्र शेखर पासवान(59) के रूप में हुई है। वहीं घायल पुलिसकर्मियों में चालक जीके झा केवटी एवं सिपाही अर्चना कुमारी पूर्णिया के सदर थाना के नीलगंज कोठी की हैं। इनका इलाज डीएमसीएच के इमरजेंसी विभाग में चल रहा है। बताया जाता है कि डायल 112 की पुलिस वैन पेट्रोलिंग करके सढ़वारा से सिमरी थाना की ओर वापस आ रही थी। इसी दौरान बिरदीपुर चौक के पास वैन के सामने एक कुत्ता आ गया। उसे बचाने के क्रम में गाड़ी सड़क के बगल के तालाब में पलट गई। घटना की जानकारी मिलते ही सिटी एसपी ने डीएमसीएच पहुंच कर घटना की जानकारी ली और घटना स्थल का भी निरीक्षण किया।

बैंक प्रबंधकों के साथ श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी ने किया बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

बरियारपुर (मुंगेर)। बरियारपुर प्रखंड मुख्यालय के अंम्बेदकर भवन के सभागार मे बैंक प्रबंधकों के साथ बैठक आहुत किया गया।अध्यक्षता श्रम प्रर्वतन पदाधिकारी दिलिप कुमार झा ने किया। इस अवसर पर वरीय बैक प्रबंधक राजीव कुमार के कहा कि बिहार राज्य के 38 जिले में हमारी कार्यशैली 38 बै स्थान पर है इस कार्य के लिए हमे 100 के संख्या मे आये हुए तमाम लोगों को एक ही नजरीये से देखने से कार्य नही बढेगी। हमे सौ से 10 लोगों के साथ विश्वास पात्र चयन करनी होगी तभी बरियारपुर प्रखंड के बिकास के गति प्रदान किया जा सकेगा। इस अवसर पर उपस्थित थे वरीय शाखा प्रबंधक राजीव कुमार ने तमाम प्रबन्धकों को निर्देशित कर कहाँ की दिसम्बर माह के 24 तारिख निर्धारित किया जा रहा है उस शिविर के माध्यम से मत्स्य पालन,कुकुर्ट पालन, बकडी पालन,मबेशीपालन, कृषि यंत्र के क्षेत्र मे सरकारी राशियों का उपयोग कर स्थानिय लोगों के लिये बैंक मील के पत्थर साबित हो सकती है इस कार्य के लिये समय सीमा के भीतर कार्य को निस्पादन करने की प्रक्रिया मे अभी से लगनी होगी तभी प्रखंड का उत्थान हो सकेगी। इस मौके पर यूके बैंक प्रबंधक निशा रानी नाबार्ड सुजीत कुमार स्टेट बैंक ऑफ इंडिया शाखा रामपुर कलान प्रबंधक शैलेश कुमार दक्षिण बिहार क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक शाखा बरियारपुर बाजार प्रबंधक धीरज कुमार इंडियन बैंक शाखा प्रबंधक संजय कौडा बी पी एम संजय कुमार दिवाकर उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

खलिहान का धन लूटकर पुआल में लगाया आग

हवेली खड़गपुर (मुंगेर) श्यामपुर थाना क्षेत्र के गौरा गांव में खलिहान में तैयार एवं पुआल में आग लगाने की घटना प्रतिवेदन हुई है। श्यामपुर थाना क्षेत्र के गौरा गांव में खलिहान में धान की फसल तैयार था । गौरा गांव के जमीन मलिक मोहम्मद गुड्डू जावेद सहित दो अन्य लोगों द्वारा मारपीट कर तैयार किए गए धन को लूट लिया गया है और उनके द्वारा पुआल को आग के हवाले कर दिया गया है उपायुक्त घटना की प्राथमिक की खड़िया कटहरा के फूलों यादव पिता विष्णु देव यादव ने लिखित आवेदन शामपुर थाना प्रभारी को दिया है। थाना प्रभारी द्वारा आवेदन देने की पुष्टि की गई है। पुलिस आगे की कार्यवाही शुरू कर दिया है।

कौशल रथ को हरी झंडी दिखाकर किया गया रवाना

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)।अनुमंडल कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोमवार को रोजगार सह मार्गदर्शन मेला को लेकर अनुमंडल पदाधिकारी राजीव रोशन प्रखंड विकास पदाधिकारी प्रियंका कुमारी प्रखंड परियोजना प्रबंधक अंजू कुमारी ने संयुक्त रूप से हरी झंडी दिखाकर कौशल रथ को दो दिनों तक प्रखंड के सभी पंचायत में भ्रमण करने के लिए रवाना किया है इस संबंध में अनुमंडल पदाधिकारी ने कहा कि बेरोजगार युवाओं को 18 दिसंबर को होने वाले रोजगार मेला से मार्गदर्शन मिलेगा।

18 दिसंबर से 21 दिसंबर तक साक्षात्कार लिए जाएंगे : सचिव

मुंगेर। जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर में करीब 100 अधिकार मित्रों (पारा विधिक स्वयं सेवकों) का चयन किया जाना है। चयन के लिए माह नवंबर 2024में आवेदकों से आवेदन आमंत्रित किए गए थे सभी आवेदकों का साक्षात्कार लिया जाना है। साक्षात्कार दिनांक 18 दिसंबर से दिनांक 21 दिसंबर 2024 तक अपराह्न 4:00 बजे से एडीआर भवन जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर में प्रारंभ होना सुनिश्चित है इसके लिए सभी आवेदकों को कार्यालय द्वारा सूचना दी जा रही है सभी आवेदकों को सूचित किया जाता है कि वह जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के कार्यालय में आकर अपने साक्षात्कार संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसकी जानकारी जिला विधिक सेवा प्राधिकार मुंगेर के सचिव ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर प्रेस को सूचना दिया है।

पहल : जिले के लाखों छात्र-छात्राओं को दिया जाता है मध्याह्न भोजन

मिड डे मील में फोर्टिफाइड चावल से बच्चे बनेंगे तंदुरुस्त

प्रात : किरण, संवाददाता

गिद्धौर। जिले के सरकारी प्रारंभिक विद्यालयों के रसोई घर अब फोर्टिफाइड चावल की खुशबू से महकेंगे। विद्यालय में बनने वाले मध्याह्न भोजन में फोटीर्फाइड चावल का उपयोग किया जाएगा।ताकि पढ़ाई करने वाले छात्र-छात्राओं को अच्छा पोषण मिल सके। इसके लिए रसोइयों,शिक्षकों व बच्चों को जागरूक किया जाएगा,ताकि फोटीर्फाइड चावल के बारे में जानकारी हासिल कर सकें। यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो जल्द ही विद्यालयों में विद्यार्थियों को यह चावल खाने को मिलेगा। इस चावल के खाने से छात्र- छात्राओं को पोषक तत्वों की प्राप्ति होगी। यह पोषक युक्त चावल बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अहम होगा।बता दें कि जिले में 1702 प्रारंभिक विद्यालय हैं। जहां लाखों छात्र- छात्राओं को मध्याह्न भोजन दिया जाता है। इसको लेकर मध्याह्न भोजन योजना के निदेशक ने डीपीओ एमडीएम को पत्र जारी कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।इसके लिए विद्यालयों में रसोइयों,शिक्षकों व बच्चों को फोटीर्फाइड चावल के उपयोग के प्रति जागरूक किया जाएगा। फोटीर्फाइड चावल के बारे में विद्यालयों के रसोइयों को जानकारी का अभाव है। इसके लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाया जाएगा। शिक्षकों व विद्यार्थियों को भी इसके प्रति जागरूक किया जाएगा। इसके साथ ही चयनित स्कूलों में इस चावल का पोस्टर लगाया जाएगा। बच्चों में कुपोषण से लड़ने के लिए फोटीर्फाइड चावल जरूरी है। क्या है फोर्टिफाइड चावल फोर्टिफाइड चावल में कई पोषक तत्व पाए जाते है।इसमें आयरन,फोलिक एसिड,विटामिन बी-12 जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व मिलाए जाते है।ये पोषक तत्व एनीमिया और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से बचाता है।आयरन एनीमिया से बचाव करता है।वही फोलिक एसिड खून बनाने में सहायक होता है।विटामिम बी 12 नर्वस सिस्टम के सामान्य कामकाज में सहायक होता है।फोर्टिफाइड चावल की पहचान के लिए चावल की बोरी पर प्लस एफ का मार्क होगा।जिससे चावल की आसानी से पहचान हो सकेगी।

आनंदपुर पंचायत में "प्रशासन आपके द्वार" कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [लक्ष्मीपुर] मंगलवार को प्रखंड क्षेत्र के आनन्दपुर पंचायत में ह्यप्रशासन आपके द्वारह्न कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा के द्वारा पंचायत वासियों की समस्या के समाधान को लेकर चलाये गए प्रशासन आपके द्वारह्न कार्यक्रम जिसका उद्घाटन बीडीओ प्रेम प्रकाश, अंचलाधिकारी रविकांत, कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा कौशलेंद्र कुमार,श्रम प्रवर्तन अधिकारी विकास कुमार, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी एवं अन्य पदाधिकारी, पंचायत मुखिया प्रतिनिधि उपेन्द्र यादव के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। इस दौरान प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी, पर्यवेक्षक, पंचायत स्तरीय कर्मी अपने अपने विभाग की योजनाओं का फ्लेक्स एवं बैनर लगाकर विभागों का काउंटर लगाया । जहां पंचायतवासियों के द्वारा अपनी अपनी समस्या को आवेदन के माध्यम से रखने की समुचित व्यवस्था किया गया। कार्यक्रम में बीडीओ प्रेम प्रकाश ने पंचायतवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम हर पंचायत में किया जा रहा है। जिससे उस पंचायत की जो समस्या है उसका समाधान किया जाए। बीडीओ ने बताया कि कार्यक्रम में राशनकार्ड, जमीन विवाद की समस्या, आवास योजना, पेंशन योजना का लाभ नही मिलने सहित अन्य कई तरह की समस्या को लेकर आवेदन मिला है । जिसके समाधान को जिस विभाग से जुड़ी समस्या है उस विभाग के पदाधिकारी को समस्या समाधान करने के लिए कहा गया है। कार्यक्रम में राशनकार्ड, आवास, पेंशन योजना से वंचित लोगों ने पदाधिकारी के समक्ष समस्या समाधान करने की गुहार लगाया जिसपर पदाधिकारी ने पंचायतवासी को समस्या का पूर्ण समाधान का आश्वासन दिया।

उत्पात विभाग ने टेम्पो के गुप्त तहखाने से किया भारी मात्रा में विदेशी शराब बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई सोनो : सोनो चकाई मुख्य मार्ग के डुमरी चेकपोस्ट पर उत्पात विभाग जमुई द्वारा चलाए गए वाहन चेकिंग अभियान में एक टेम्पो वाहन के नीचे बना गुप्त तहखाने से छुपाकर ले जा रहे तकरीबन चार दर्जन से अधिक विदेशी शराब की बोतल बरामद कर जप्त कर लिया है ।टेम्पो वाहन मे बने गुप्त तहखाने की जब विभाग कर्मियों ने जांच की तो यह उपलब्धि हासिल हुई है । शराब की जप्ती के बाद टेम्पो चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है । गिरफ्तार शराब कारोबारी बटिया बाजार निवासी कालु साह का पुत्र रविंद्र साह के रूप में की गई है । उत्पात अधिक्षक सुभाष कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि टेम्पो वाहन के चेचीस के अंदर शराब छुपाने के लिए एक गुप्त तहखाना बनाई गई थी जहाँ पर संदेह के आधार पर स्कैनर मशीन द्वारा जांच के बाद तकरीबन 25 लीटर से अधिक विदेशी शराब बरामद कर जप्त कर लिया गया है । उन्होंने बताया कि गिरफ्तार रविंद्र साह को उत्पात अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर उसे जेल भेज दिया गया है ।

जिले के 96 पंचायत के पंचायत सरकार भवन निर्माण में अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों के मनमानी से निर्माण कार्य अधर में लटका

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। मुंगेर जिले में 96 पंचायत सरकार भवन निर्माण अधर में लटका हुआ है कई पंचायत में निर्माण अधीन पंचायत सरकार भवन हैं और कहीं पूर्ण हो पाया है जिला विकास कार्यालय सूत्रों के अनुसार 96 में 12 पंचायत सरकार भवन का निर्माण 12 पंचायत में ही हो पाया है महात्मा गांधी का सपना था की पंचायत में स्थानीय स्तर पर सत्ता का विकेंद्रीकरण हो यह सपना आजादी के 75 वर्ष होने के बावजूद भी गांव की सत्ता गांव के लोगों के हाथों में नहीं सौंपा जा सका है।गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए देश में पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई लेकिन दो दशक बाद भी सही रूप में ग्राम ग्राम पंचायत में कामकाज नहीं हो रहे हैं पंचायती राज अधिनियम के मुताबिक सभी पंचायत में ग्राम सभा कर योजनाओं की स्वीकृति दिए जाने का प्रावधान है लेकिन मुंगेर जिले में ही नहीं बल्कि पूरे बिहार में 90 से 95% पंचायत में मुखिया द्वारा कागज पर ग्राम सभा कराकर और मनमानी करते आ रहे हैं पंचायती राज अधिनियम में मुखिया को यह अधिकार दिया गया है कि काम का अभाव दिखाकर योजनाओं को पारित कर सके जो पंचायत में ढिंढोरा पीट कर आमसभा की सूचना दिए जाने का है लेकिन जिले के किसी भी पंचायत में मुखिया द्वारा ढिंढोरा पीट कर ग्रामीणों को ग्राम सभा की सूचना नहीं दी जाती है इसका मुख्य कारण है की मुखिया द्वारा मनमानी तरीके से अपने लाभ की योजनाओं को ही ग्राम सभा में कागज पर करके और उसे पारित किया जाता है जाता है कई मुखिया का रोना रो कर सरकार को और अधिकारी को सुनते हैं कि आम सभा करने का स्थल नहीं है राज्य सरकार ने सभी पंचायत में पंचायत सरकार भवन बनाने का निर्णय दिया था और कुछ पंचायत में पंचायत सरकार भवन बनकर जिले में तैयार भी है लेकिन उन पंचायत भवनों का इस्तेमाल आज भी नहीं हो पा रहा है जिले में पंचायत सरकार भवन की वर्तमान स्थिति यह है कि पंचायती राज विभाग की ओर से कुल 96 पंचायत में से 12 पंचायत सरकार भवन का निर्माण कराई गई कई वर्षों पहले से किया जा चुका है जबकि 9 ग्राम पंचायत में पंचायत सरकार भवन निर्माण अधीन है वहीं भवन निर्माण विभाग की ओर से 18 पंचायत सरकार भवन का निर्माण करने के लिए निविदा भी निकल गया है योजना विभाग के एल ई ओ द्वारा भी 51 पंचायत सरकार भवन निर्माण के लिए निविदा निकल गया है पंचायत सरकार भवन के लिए जमीन उपलब्ध हो गया है दो के लिए जमीन की खोज की जा रही है सूत्रों ने बताया कि जहां पंचायत सरकार भवन निर्माण हो गया है वहां ग्राम कचहरी का आयोजन किया जा रहा है लेकिन जहां नहीं बना है वहां ग्राम कचहरी का संचालन में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है पंचायत सरकार भवन में मुखिया सरपंच के अलावा उप मुखिया तथा उप सरपंच का भी चैंबर रहता है।

पीजी समेत अन्य मुद्दों को लेकर अनशन पर बैठे छात्र राजद के नेता

प्रात : किरण संवाददाता

तारापुर(कोर्ट)।आरएस कॉलेज तारापुर में छात्र राजद के द्वारा पी जी की पढ़ाई एवं अन्य मुद्दों को लेकर छात्र अनशन पर बैठ गए हैं।इसकी अध्यक्षता आरएस कॉलेज के अध्यक्ष अंकित कुमार ने किया। उन्होंने कहा कि हमने अनशन पर बैठने से पहले आर एस कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास को एक लिखित एप्लीकेशन दिया गया है। अपनी तमाम मुद्दों को अवगत कराया गया है लेकिन कोई भी कार्रवाई नहीं हुआ। जिस कारण मुझे अनशन पर बैठने की जरूरत पड़ा मेरा मांग है कॉलेज में पीजी की पढ़ाई प्रारंभ किया जाए मेरा मांग है कॉलेज में स्वच्छ जल की व्यवस्था की जाए मेरा मांग है एक बॉय कॉमन रूम बनवाया जाए सही ढंग से वर्ग संचालित किया जाए मेरा मांग है कॉलेज में आसामाजिक तत्वों को भ्रमण करने पर रोका जाए इस संबंध में हमने कॉलेज के प्राचार्य डॉक्टर यू एस दास से पूछा तो उन्होंने बताया कि छात्रों की मांगों का हमने गंभीरता से लिया और इस पर हम लोग सही ढंग से काम कर रहे हैं छात्र राजद के दुबारा कॉलेज में आज पढ़ाई संचालित होने से रोका गया और कॉलेज में मुख्य द्वार से लेकर वर्ग एवं प्रिंसिपल चैंबर तमाम जगह जगह कॉलेज के गेट पर ताला को लगा दिया गया है ।

छापा पंचायत में प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम के तहत 150 लोगों ने रखी अपनी अपनी समस्या

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] मंगलवार को प्रखंड क्षेत्र के छापा पंचायत में आयोजित किया गया। जिलाधिकारी अभिलाषा शर्मा के द्वारा पंचायतवासियो की समस्या के समाधान को लेकर चलाये गए प्रशासन आपके द्वार कार्यक्रम जिसका उद्घाटन बीडीओ रविजी, झाझा अंचल कार्यालय का प्रभार सम्भाली गिद्धौर सीओ आरती भूषण एवं अन्य पदाधिकारी, पंचायत मुखिया पप्पू यादव के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। इस दौरान अलग अलग विभागों का काउंटर लगाया गया जहां पंचायतवासियों के द्वारा अपनी अपनी समस्या को आवेदन के माध्यम से रखने का काम किया। कार्यक्रम में कई पंचायतवासियों की समस्या भी उपस्थित पदाधिकारियों द्वारा सुलझाने का कार्य किया गया। बीडीओ ने पंचायतवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम हर पंचायत में किया जा रहा है जिससे उस पंचायत की जो समस्या है उसका समाधान किया जाए। बीडीओ ने बताया कि कार्यक्रम में राशनकार्ड, जमीन विवाद की समस्या, आवास योजना का लाभ नही मिलने सहित अन्य कई तरह की समस्या को लेकर कुल 150 आवेदन मिला है जिसके समाधान को जिस विभाग से जुड़ी समस्या है उस विभाग के पदाधिकारी को समस्या समाधान करने के लिए कहा गया है। कार्यक्रम में राशनकार्ड, आवास, पेंशन योजना से वंचित लोगों ने पदाधिकारी के समक्ष समस्या समाधान करने की गुहार लगाया जिसपर पदाधिकारी ने पंचायतवासी को समस्या का पूर्ण समाधान का आश्वासन दिया।

एएनएम और जीएनएम को मातृत्व देखभाल को लेकर दिया गया प्रशिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] झाझा रेफरल अस्पताल के संवादकक्ष में ममता हेल्थ इंस्टीट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड जमुई एवं जागृति संस्था के द्वारा सम्मानजनक मातृत्व देखभाल को लेकर एएनएम और जीएनएम के बीच एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षक ने बताया कि अगर कोई महिला प्रसव के लिए अस्पताल पहुंचता है तो उसकी देखभाल अच्छी तरह से करे और उन्हें सभी सुविधा मुहैया करवाये और उन्हें सम्मान पूर्वक प्रसव करवाए। प्रसव के दौरान उन महिला से दोस्ती करे ताकि उन्हें प्रसव के दौरान अकेलापन महसूस न हो। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रभार चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर नबाब सहित अन्य लोगों ने दीप प्रज्वलित कर किया। संस्था के प्रशिक्षक डॉक्टर विपिन कुमार ने एएनएम, जीएनएम को प्रोजेक्टर के माध्यम से सम्मानजनक मातृत्व की परिभाषा को लेकर विस्तारपूर्वक जानकारी दिया कार्यक्रम में अस्पताल प्रबन्धक नवनीत कुमार, स्वास्थ्य प्रबन्धक सुभाषचंद्र, बीसीएम पंकज कुमार, संस्था के सदस्य सुखदेव, करन कुमार, नीतीश कुमार , मैराज खान, राजेश, एवं अन्य मौजूद थे।

केकेएम कॉलेज में एबीपी का वार्षिक चुनाव संपन्न

जमुई नगर मंत्री पुनः बने अमन व अध्यक्ष आशुतोष कुमार छात्रों में खुशी की लहर

- छात्र नेतागण भाजपा के वरिष्ठ नेता विकास सिंह के घर पहुंच कर लिया आशीर्वाद

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई / सोनो : विगत दिनों केकेएम कॉलेज मे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की वार्षिक चुनाव मे छात्रों के बीच संघ का चुनाव किया गया , जिसमे छात्र नेता अमन कुमार को पुनः नगर मंत्री एवं नगर अध्यक्ष के रूप मे आशुतोष कुमार सिंह का चयन किया गया । काफी दिनों बाद केकेएम कॉलेज मे छात्र संघ का हुई इस चुनाव मे विद्यार्थी परिषद के छात्र नेता सभी पदों पर ऐतिहासिक जीत दर्ज किया था । चुनाव मे नगर मंत्री नियुक्त होने पर भाजपा के वरिष्ठ नेता विकास सिंह के आवास पर पहुँचकर छात्र नेताओं ने आशीर्वाद लिया । भाजपा नेता श्री विकास ने सभी नव नियुक्त छात्र नेताओं को मिठाई खिलाकर जीत कि बधाई दिए । श्री सिंह ने कहा कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद आज विश्व के सबसे बड़े छात्र का संगठन है , जिस तरह जमुई मे भी आप सब छात्र कि समस्याओं को लेकर लगातार संघर्षशील रहते हैं इससे संघ के प्रति छात्र छात्राओं का विश्वास और भरोसा जीतते चले जा रहे है । हम सबकी परिषद को इसी तरह संघ के कार्यों को छात्रों से सीधे जोड़े रखने के लिए शुभकामना देता हूँ । परिषद के नगर अध्यक्ष एवं मंत्री सहित अन्य पदों पर छात्रों की नियुक्ति पर एबीभीपी के पूर्व नेता व पूर्व सिनेट सदस्य शैलेश भारद्वाज , भाजयुमो प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ठाकुर डुगडुग सिंह , युवा मोर्चा के पूर्व जिलाध्यक्ष राहुल राठौर , कुंदन यादव तथा अखिलेश कुमार सिंह सहित अन्य कई गणमान्य लोगों ने बधाई दिया है ।

विधि-व्यवस्था : सरकारी स्कूलों में पढ़ाई को सुधारने के लिए विभाग का निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। शिक्षा विभाग लगातार विद्यालयों की विधि-व्यवस्था को सुदृढ़ करने को लेकर नए-नए फैसले ले रहे हैं। अक्सर शिक्षकों द्वारा फर्जी तरीके से अधिक बच्चों का अटेंडेंस बनाना,शिक्षक द्धारा अपनी उपस्थिति ऑनलाइन दर्ज कर विद्यालय से गायब होने की शिकायतें आती है। इसपर शिक्षा विभाग पूरी तरह अंकुश लगाने की तैयारी कर चुका है। जिसके तहत विद्यालय से गायब रहने वाले और विभाग को गलत रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले शिक्षकों की अब खैर नहीं है। शिक्षा विभाग ने सभी डीईओ को निर्देश दिया है कि विभागीय मोबाइल नंबर 91 5346 8895 से विद्यालय अवधि के दौरान प्रदेश के किन्ही 10 विद्यालयों के शिक्षकों को वीडियो कॉल करेंगे। इस वीडियो कॉल को उठाने अनिवार्य है। 14 बिंदुओं पर होगी स्कूलों की लाइफ जांच,एमडीएम भी इनमें हैं शामिल विद्यालय में छात्र-छात्रा नामांकन के विरुद्ध भौतिक उपस्थिति एवं कम उपस्थिति का कारण शिक्षकों के पद स्थापना के विरोध भौतिक उपस्थिति एवं उपस्थित नहीं रहने वाले शिक्षकों की नियामनुकूल सूचना संधारण की जानकारी एवं वीडियो कॉल आने पर तत्क्षण शिक्षक-शिक्षिका की उपस्थिति मध्याह्न भोजन संचालन की स्थिति की जांच की जानी है। आधारभूत संरचना जिसमें शौचालय की सफाई,चारदीवारी की स्थिति, रनिंग वाटर सुविधा आदि की स्थिति, प्रथम एवं द्वितीय घंटी में क्रमशः बेसिक गणित एवं रीडिंग क्लास का विभागीय निर्देश के आलोक में प्रारंभिक एवं मध्य विद्यालयों में अनुपालन की स्थिति भी देखनी है। मानक समय सारणी के अनुसार कक्षा संचालन की स्थिति, विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्री की स्थिति, शिक्षकों द्वारा एफएलएन कीट के उपयोग की स्थिति एवं बच्चों को उपलब्ध कराए गए एफएलएन- एलईपी किट के उपयोग की स्थिति की जानकारी लेनी है। बच्चों को गृह कार्य देने एवं उसे जांच करने की स्थिति,मूल्यांकन की स्थिति एवं संबंधित पंजी के संधारण की स्थिति, शिक्षक अभिभावक बैठक की स्थिति एवं संबंधित पंजी के संधारण की स्थिति,आईसीटी लैब संचालन आदि का पड़ताल करनी है। अपर मुख्य सचिव की जांच में मिलीं थीं कई खामियां,करवाया था निरीक्षण दरअसल शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव एस सिद्धार्थ ने बीते दिनों प्रदेश के कई ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी विद्यालयों का अपने विभागीय पदाधिकारियों के माध्यम से निरीक्षण करवाया था। इस निरीक्षण के बाद कई बातें निकलकर सामने आई है। जिसमें मुख्य रूप से स्कूल में बच्चों की संख्या कम रह रही है और फर्जी तरीके से प्रधानाध्यापक और शिक्षक अधिक बच्चों का अटेंडेंस बना रहे थे। इतना ही नहीं शिक्षक भी अपनी उपस्थिति ऑनलाइन दर्ज कर विद्यालय से गायब रहते थे। पुनः छुट्टी के बाद गायब रहने वाले शिक्षक विद्यालय पहुंचकर प्रस्थान होने पर अपनी उपस्थिति दर्ज करते थे। जिसपर नया निर्देश जारी करते हुए बड़ा फैसला लिया गया है। वीडियो कॉल नहीं उठाने पर की जाएगी प्रधानाध्यापक पर कार्रवाई प्रधानाध्यापक,प्रभारी प्रधानाध्यापक को वीडियो कॉल को बिना देरी किए उठाने का निर्देश दिया है। ऐसा नहीं करने वाले पर कार्रवाई की जाएगी।

कोचिंग संस्थान के शिक्षकों को भगत सिंह की पहली गिरफ्तारी कब हुई इसकी नहीं थी जानकारी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] दरअसल कोचिंग संस्थान में पढ़ने वाले छात्र छात्राओं के बीच कोचिंग संस्थान की ओर से बच्चों का टेस्ट परीक्षा लिया गया जिसमें प्रश्न संख्या 12 में यह पूछा गया कि भगत सिंह की पहली गिरफ्तारी कब हुई थी जिसमे अक्टूबर 1923 में, अक्टूबर 1924 में, अक्टूबर 1925 में, अक्टूबर 1926 में ऑप्शन दिया गया था। जब टेस्ट परीक्षा दे रहे छात्र छात्राओं में ऑप्शन में सही जबाब 1927 नही होने की बात की तो कोचिंग संस्थान के शिक्षक जबरन उन्हें 1926 को सही जबाब बताते हुए उसमें टिक लगाने का निर्देश दे दिया। जिससे बच्चे भी आश्चर्यचकित हो उठा। शिक्षा सफलता की कुंजी है और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा गुरु की कृपा से शिष्य को प्राप्त होता है लेकिन जब शिक्षक के द्वारा ही बच्चों को शिक्षा गलत दे तो वैसे बच्चों का भविष्य कैसे उज्ज्वल हो पायेगा। क्योंकि बच्चों को स्कुल के साथ साथ कोचिंग संस्थान पर भी पूर्ण भरोसा रहता है कि सही और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल जाएगा। परन्तु नगर क्षेत्र के एक ऐसे कोचिंग संस्थान का मामला सामने आया जहां भगत सिंह की पहली गिरफ्तारी कब हुई है यह मालूम ही नही और जब कोचिंग संस्थान में पढ़ने वाले बच्चे शिक्षक से सवाल का जबाब गलत होने की बात की तो शिक्षक उलटे अपने छात्रों पर भड़क गया। मामला नगर क्षेत्र के पिपराडीह में संचालित हो रहे द मिशन कोचिंग संस्थान का है। नाम प्रकाशित नही करते हुए कोचिंग संस्थान में पढ़ने वाले छात्र ने भी बताया की अगर गैस पेपर से प्रश्न पत्र तैयार करना और शिक्षा देने का कार्य किया जाता है तो ऐसे में छात्र छात्रा रटे रटाये ही शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। छात्र ने बताया कि इस तरह से टेस्ट परीक्षा में जब बच्चे को सही ऑप्शन नही मिल पायेगा तो आगे में यही सवाल जब कभी जॉब या अन्य प्रतियोगिता परीक्षा में रहेगा तो पूर्ण जानकारी के अभाव में परीक्षार्थियों को काफी परेशानी होगी। क्योंकि एक प्रश्न का जबाब गलत रहने पर कोई टॉपर बनने वाला या परीक्षा में एक नम्बर से पास होने वाले परीक्षार्थियों को जीवन मे बड़ा झटका लग सकता है। इस संदर्भ में जब कोचिंग संस्थान के सहायक शिक्षक सचिन कुमार से पूछा गया तो उसने गैस पेपर से प्रश्न को टेस्ट परीक्षा में टेस्ट परीक्षा में प्रश्न उतारने की बात की । कोचिंग संस्थान के संचालक बाबा सर से पूछे जाने पर उन्होने बताया कि गैस पेपर से प्रश्नपत्र तैयार किया जाता है वही एनसीआरटी पुस्तक को द्वितीय श्रेणी में रखते हुए कहा कि उससे भी प्रश्न पत्र हमलोग तैयार करते है। संचालक ने कहा कि बच्चों को टेस्ट परीक्षा में कुछ प्रश्न पत्र जानबूझकर गलत दिया जाता है ताकि बच्चे सही जबाब हमेशा मन मे रखे। छात्र नेता सूरज बरनवाल ने कोचिंग संस्थान के द्वारा टेस्ट परीक्षा में सवाल का गलत जबाब और गैस पेपर से प्रश्न पत्र बनाने पर रोष जताया और कहा कि जब कोचिंग संस्थान गैस पेपर का ही सहारा लेते हैं तो फिर कोचिंग संस्थान का सहारा क्यो ले, क्योकि कोचिंग संस्थान पर बच्चों को यह भरोसा रहता है कि बच्चें वहां पर अच्छी तरह से अपने कोर्स को सही रूप से पूरा कर सके। अगर कोचिंग संस्थान के द्वारा महापुरुष के सवालों को संदिग्ध घेरे में रखता है तो ऐसे में अभाविप संगठन मांग करती है कि छात्रों को गलत शिक्षा देने वाले वैसे कोचिंग संस्थान पर शिक्षा विभाग कड़ी से कड़ी कार्रवाई करे। इस मामले को लेकर झाझा बीडीओ रविजी ने बताया कि मामला संज्ञान में नही आया है।

यूजीसी नेट में सफलता पाई सारडोनिक्स स्कूल झाझा की पूर्ववर्ती छात्रा नेहा को किया गया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] नगर क्षेत्र स्थित सारडोनिक्स स्कूल के वर्ष -2009-2010 -10ॅ बैच की छात्रा नेहा ने यूजीसी नेट में इंग्लिश में सफलता प्राप्त करने में सफल रही जिसको लेकर मंगलवार को स्कूल में सम्मान समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यालय द्वारा नेहा के माता-पिता को भी अंगवस्त्र से सम्मानित किया। इस अद्भुत अवसर पर नेहा व उसके माता-पिता ने इस सफलता के लिए समग्र विद्यालय परिवार को दिया। नेहा ने उपस्थित अपने जूनियर्स को कई ऐसे गुर बताते हुए कहा कि इसका अनुकरण-अनुसरण आज की पीढ़ी यदि कर ले तो निश्चय ही बहुत आगे निकल सकती है।धैर्य, कठिन परिश्रम,एकाग्रता, लक्ष्य के प्रति निष्ठा- समर्पण रहने की बात की। विद्यालय निदेशक एम अख्तर ने कहा नेहा ने इस विद्यालय सहित पूरे क्षेत्र का नाम रौशन किया। विद्यालय की ओर दी गई गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उन्हें मंजिल की ओर आगे बढ़ा रही है। मौके पर प्राचार्य विष्णु शर्मा सहित शिक्षक शिक्षिकाएं और स्कूली बच्चे मौजूद थे।

गिद्धौर के पूर्वी गुगुलडीह में प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। प्रखंड के पूर्वी गुगुलडीह पंचायत भवन में जिला प्रशासन द्वारा आमजनों की जनहित से जुड़ी समस्याओं के निदान एवं निष्पादन को ले प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया गया।इस अवसर पर प्रखंड विकास पदाधिकारी सुनील कुमार,मनरेगा पदाधिकारी बिपिन कुमार सहित संबंधित विभिन्न विभाग के पदाधिकारियों एवं कर्मियों ने कार्यक्रम में मुख्य रूप से भाग लिया। इस अवसर पर प्रसासन आपके द्वार कार्यक्रम में बीडीओ सुनील कुमार ने कहा कि सरकार ग्रामीण इलाकों में जनहित से जुड़ी योजनाओं से आम जनों को जोड़े रखने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है, ताकि इसका अक्षरसः लाभ आम जनमानस को मिल सके। कार्यक्रम को बीडीओ सुनील कुमार, पीओ बिपिन कुमार ने भी संबोधित किया व कहा कि जिला प्रसासन के निर्देश पर ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के हर मानक से पंचायत वासियों को जोड़ने का विभागीय स्तर पर हर संभव प्रयास जारी है, आप अपनी समस्याओं एवं जन शिकायतों को स्थानीय स्तर पर रखें, ताकि उनका निदान किया जा सकें। इस मौके पर पंचायत सचिव संदीप कुमार,मुखिया सुनीता देवी,उप मुखिया संजय यादव,पूर्व मुखिया बबलू यादव,ग्रामीण अजित तांती, पप्पू यादव,प्रकाश यादव,बिपिन यादव,डब्लू कुमार के अलावे दर्जनों की संख्या में ग्रामीण एवं विभागीय कर्मी कार्यक्रम में मौजूद थे।

नीतीश कुमार की यात्रा समाधान या सियासत, पर्दा उठ गया..!

जब नीतीश केबिनेट ने 225 करोड़ राशि मुख्यमंत्री के महिला संवाद यात्रा के लिए स्वीकृत किया तब से ये डिबेट शुरू हो गई की इन यात्राओं से किसे क्या मिलेगा. इस यात्रा के पहले भी नीतीश कुमार 14 यात्राएं कर चुके हैं. उनका लोगों के जीवनस्तर पर कितना असर हुआ. इन सभी सवालों का जवाब खोजा जा रहा था इसी बीच नीतीश कुमार ने अपनी पंद्रहवीं यात्रा महिला संवाद यात्रा स्थगित कर दी. अब इस बात को लेकर राजनीतिक गलियारे एयर मिडिया जगत में अलग अलग क्यास और संभावनाओं पर चर्चा छोड़ गई है. 2023 में नीतीश कुमार ने बिहार में अंतिम यात्रा समाधान यात्रा किया था. 5 जनवरी 23 को नीतीश ने पश्चिमी चंपारण जिले से शुरू किया था, जो पटना में खत्म हुई. इस दौरान सीएम ने 28 दिन तक राज्य के विभिन्न जिलों का दौरा किया और विकास कार्यों का जायजा लिया था. नीतीश की इस यात्रा से जेडीयू कार्यकताओं का जोश आया तो वहीं महागठबंधन में भी उत्साह बढ़ा. सीएम नीतीश कुमार जहां-जहां गए, वहां जेडीयू नेताओं और कार्यकताओं ने नीतीश के 2024 लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री का दावेदार बनने के लिए नारे लगाए और पूरा माहौल बना दिया था. हालांकि, सीएम खुद को पीएम कैंडिडेट मानने से बचने की कोशिश करते दिखे थे. लेकिन जैसे ही नीतीश कुमार ने अपनी पंद्रहवीं यात्रा महिला संवाद का घोषणा किया. पिछली यात्राओं के नफा नुकसान पर डिबेट होने लगा है. आइये जानते हैं नीतीश कुमार की समाधान यात्रा से बिहार की जनता, महागठबंधन, जदयू, भाजपा, एनडीए किसे कितना लाभ हुआ और 2024 के चुनाव में जेडीयू, महागठबंधन, भाजपा या एनडीए को कितना फायदा हुआ. सीएम नीतीश कुमार 2024 के लोकसभा चुनाव से पहले देशभर के विपक्षी दलों को एकजुट करने में लगे रहे. कई राज्यों का दौरान किए और गैरभाजपा दलों को एक छत के निचे लाने में सफल रहे. वही इसके ठीक विपरीत यात्रा पर जेडीयू नेताओं का कहते रहे कि समाधान यात्रा का 2024 चुनाव से कोई लेना-देना नहीं है. मगर इस यात्रा से पार्टी ने नीतीश कुमार की छवि को सुधारने की कोशिश की. कुछ महीने पहले ही जेडीयू ने बीजेपी का साथ छोड़कर आरजेडी-कांग्रेस और अन्य दलों के साथ सरकार बनाया था. उसके बाद फिर से कानून व्यवस्था, शराबबंदी समेत अन्य मुद्दों पर सवाल उठने लगे थे. भाजपा लगातार बिहार में जंगलराज की वापसी के आरोप लगा रही थी. हलांकी कुछ महीने राजद के साथ सरकार चलाने के बाद छवि बदलने और लोगों को भरोसा दिलाने के लिए ही प्लान किया गया समाधान यात्रा निकालने का. जेडीयू कुछ हद तक इस अभियान में सफल भी हुई. वहीं इसका लोकसभा चुनाव में भी जबरदस्त फायदा हुआ. नीतीश ठीक एक साल के बाद फिर से एनडीए के साथ चले गए. हालांकी उससे पहले नीतीश कुमार ने एक सफल रणनीति का बीजारोपण जरूर कर दिया था जो इंडिया गठबंधन का रूप लिया. जिस अभियान में कई नेताओं ने प्रयास करने के बाद थक हार कर उम्मीद छोड़ दिया था उसे नीतीश ने सच कर के दिखाया. नीतीश कीमार की समाधान यात्रा से जनता को कितना फायदा हुआ इस बात से ज्यादा चर्चा यात्रा मे जुटने वाली भीड़ और उसमें बड़ी संख्या में महिलाओं की उजस्थिति की थी. क्योंकि इस भीड़ में नीतीश कुमार और जदयू के भविष्य को स्थायित्व देने वाला वोट दिख रहा था. हर जगह महिलाओं की लंबी कतार और दीवारों पर जीविका योजना के बैनर और पोस्टर बता रहे थे कि नीतीश कुमार के लिए यह योजना काफी अहम है।

सिर उठाता परिसीमन का प्रश्न, आकार-प्रकार में क्या कोई बदलाव जरूरी है?

देश में चुनावों पर चर्चा होती है, लेकिन चुनाव इकाइयों अर्थात निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन पर चर्चा नहीं होती। प्रत्येक जनगणना के बाद परिसीमन कराने का प्रविधान है। संविधान (अनु.327) संसद को परिसीमन का अधिकार देता है, जिसमें दो बड़े मुद्दे हैं-प्रथम, लोकसभा और विधानसभाओं में कितने-कितने जनप्रतिनिधि होने चाहिए? दूसरा, लोकसभा और विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं, उनके आकार-प्रकार में क्या कोई बदलाव जरूरी है? संविधान संसद को अधिकार देता है कि वह उपरोक्त दोनों मुद्दों के समाधान हेतु अभिकरण बनाए और परिसीमन प्रक्रिया निर्धारित करे। प्रथम लोकसभा और विधानसभा चुनावों हेतु परिसीमन राष्ट्रपति कार्यालय ने किया। संसद ने 1952 में प्रथम परिसीमन आयोग का गठन किया, जिसने 1957 के चुनावों हेतु परिसीमन किया। उसके बाद 1962 और 1972 में द्वितीय और तृतीय परिसीमन आयोगों ने 1971 एवं 1972 की जनगणना के आधार पर परिसीमन किया। 1975 में इंदिरा गांधी ने आपातकाल लगाकर 42वें संविधान संशोधन द्वारा अगले 25 वर्ष तक परिसीमन पर रोक लगा दी। फलतः 1981 और 1991 में परिसीमन नहीं हो सका। संसद द्वारा 2002 में चतुर्थ परिसीमन आयोग का गठन हुआ, लेकिन 84वें संविधान संशोधन (2001) द्वारा लोकसभा और विधानसभाओं में सांसदों और विधायकों की संख्या बढ़ाने पर 2026 के बाद होने वाली जनगणना तक इस आधार पर प्रतिबंध लगा दिया गया कि 2026 तक देश में जन्मदर और मृत्युदर बराबर हो जाएगी, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। फलतः चतुर्थ परिसीमन आयोग केवल आंशिक परिसीमन कर सका। 1972 के बाद पचास वर्षों से अधिक समय से पूर्ण परिसीमन नहीं हुआ है। आज देश की जनसंख्या चीन से ज्यादा हो गई है, पर सांसदों और विधायकों की संख्या नहीं बढ़ी। इससे सांसद और विधायक अत्यधिक जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। एक सांसद औसतन 25 लाख और विधायक पांच-सात लाख लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहा है, जबकि इंग्लैंड के सांसद एक लाख और अमेरिका के सात लाख लोगों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। अतः आगामी परिसीमन आयोग द्वारा सांसदों और विधायकों की संख्या बढ़ाने का प्रतिवेदन जरूरी है। जनप्रतिनिधियों की संख्या न बढ़ने से दूसरी समस्या यह है कि प्रतिनिधित्व की समानता का सिद्धांत ध्वस्त हो गया है। ज्यादा जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसद के मत का मूल्य वही है, जो कम जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले सांसद का। यदि केवल जनसंख्या को परिसीमन और सीटों के आवंटन का आधार बनाया जाएगा, तो वे राज्य दंडित होंगे, जिन्होंने जनसंख्या नियंत्रण में अच्छा काम किया है। आगामी परिसीमन में अनुमानतः कर्नाटक में 8, तेलंगाना और आंध्र में 3-3, तमिलनाडु में 2 सीटें बढ़ेंगी, जबकि केरल में एक लोकसभा सीट घट सकती है। वहीं मध्य प्रदेश में 18, राजस्थान में 19, महाराष्ट्र में 20, बिहार में 30 और उत्तर प्रदेश में 48 सीटें बढ़ सकती हैं। आगामी परिसीमन में जनसंख्या नियंत्रण और ह्यप्रतिनिधित्व की समानताह्न में संतुलन चुनौतीपूर्ण होगा। इस पर आश्चर्य नहीं कि दक्षिण के राज्य परिसीमन को लेकर आशंका जताने लगे हैं। गृहमंत्री अमित शाह ने संसद को सूचित किया था कि लोकसभा चुनाव बाद जनगणना और परिसीमन कराया जाएगा। परिसीमन में लोकसभा की सीटें बढ़ना तय हैं। मोदी सरकार ने दूरदर्शिता से नई संसद का निर्माण कराया, जिसमें 888 लोकसभा सीटें हैं, लेकिन राज्यों ने इस पर अभी ध्यान नहीं दिया है। लोकसभा में करीब डेढ़-दो सौ सीटें बढ़ना तय है। युवाओं को इसका लाभ लेना चाहिए। पीएम मोदी ने युवाओं से राजनीति में आने का आह्वान भी किया है। नारीशक्ति वंदन अधिनियम से महिलाओं हेतु लोकसभा और विधानसभाओं में एक तिहाई सीटें आरक्षित की गई हैं। लोकसभा की वर्तमान सदस्य संख्या पर 181 महिला सीटें आरक्षित होंगी और यदि परिसीमन से न्यूनतम 150 लोकसभा सीटें भी बढ़ती हैं, तो लोकसभा में 231 महिला सीटें आरक्षित होंगी, जिसका लाभ महिलाओं को मिलेगा। अनुसूचित जाति-एससी और अनुसूचित जनजाति-एसटी की आरक्षित सीटों में भी वृद्धि होगी, क्योंकि अनु. 330(2) के अनुसार प्रत्येक राज्य को आवंटित सीटों में एससी और एसटी के लिए उसी अनुपात में सीटें आरक्षित होंगी, जो अनुपात उनका राज्य की आबादी में होगा। जब 2006 में आंशिक परिसीमन हुआ था, तब लोकसभा सीटों के बढ़ने पर तो प्रतिबंध था, पर एससी की आरक्षित सीटें 79 से बढ़कर 84 और एसटी की सीटें 41 से बढ़ कर 47 हो गई थीं। अगले परिसीमन में यह संख्या और बढ़ेगी। आगामी परिसीमन आयोग को या तो लोकसभा में अधिकतम सीटों की संख्या तय कर उन्हें राज्यों को आवंटित करने का फामूर्ला बनाना होगा या यह तय करना होगा कि 2026 में भारत की अनुमानित जनसंख्या एक अरब 42 करोड़ में कोई सांसद अधिकतम कितनी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करेगा।

अल्पसंख्यक के नाम पर राजनीति ज्यादा खतरनाक

विशिष्ट भारतीय समुदायों की सांस्कृतिक रूप से विविध पहचान को केवल अल्पसंख्यकों के हितों की सुरक्षा सुनिश्चित करके ही बरकरार रखा जा सकता है। भारतीय सामाजिक प्रथाओं में प्रत्येक संस्कृति और धर्म के प्रति सहिष्णु और सर्व-समावेशी रवैया शामिल है। भेदभाव, जबरन आत्मसातीकरण एवं धर्म-परिवर्तन समुदायों को खतरे में डालता है और भारतीय समाज के समग्र सार एवं उसके मूल स्वरूप को प्रभावित करता है। भेदभाव नफरत का सबसे खराब एवं वीभत्स रूप है। लोगों के एक समूह के खिलाफ उनकी भाषाई या सांस्कृतिक मान्यताओं के आधार पर हिंसक कार्रवाई करना किसी व्यक्ति के विवेक के लिए हानिकारक है।

ललित गर्ग
लेखक

अल्पसंख्यक अधिकार दिवस पहली बार 18 दिसंबर 1992 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अल्पसंख्यक समुदायों के अधिकारों की रक्षा, राष्ट्र निर्माण में योगदान के रूप में चिन्हित कर अल्पसंख्यकों के क्षेत्र विशेष में ही उनकी भाषा, जाति, धर्म, संस्कृति, परंपरा आदि की सुरक्षा को सुनिश्चित करने एवं समाज को जागृत करने हेतु मनाया जाता है। इस साल थीम ह्यविविधता और समावेश का जश्न मनानाह्न है। इसका उद्देश्य भारत के अल्पसंख्यकों की समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देना है। यह थीम इस बात पर जोर देती है कि अल्पसंख्यक के अधिकार सिर्फ. आकांक्षाएं नहीं हैं, बल्कि बेहतर भविष्य के लिए लोगों और समुदायों को सशक्त बनाने का एक व्यावहारिक तरीका भी हैं। संयुक्त राष्ट्र ने अल्पसंख्यकों की परिभाषा दी है कि ऐसा समुदाय जिसका सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से कोई प्रभाव न हो और जिसकी आबादी नगण्य हो, उसे अल्पसंख्यक कहा जाएगा। भारत में, इस दिन राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग (एनसीएम) द्वारा राष्ट्रीय अल्पसंख्यक अधिकार दिवस व्यापक स्तर पर मनाया जाता है। यह दिवस राष्ट्रीय या जातीय, धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों से संबंधित व्यक्तियों के अधिकारों की घोषणा को जीवंतता प्रदान करने का दिवस है। भारत में केंद्र सरकार अल्पसंख्यकों के गैर-भेदभाव और समानता के अधिकारों की गारंटी के प्रयास सुनिश्चित करने के लिये प्रतिबद्ध है। इस दिन, देश के अल्पसंख्यक समुदायों के सामने आने वाली चुनौतियों और मुद्दों पर ध्यान खींचा जाता है। लोग धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई और जातीय अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने की बात करते हैं। भारत ह्यलोकतंत्र की जननीह्न कहलाता है, यहां के लोकतंत्र को खुबसूरती प्रदान करने के लिये भारत का संविधान सभी नागरिकों को समान अधिकार प्रदान करता है और भाषाई, जातीय, सांस्कृतिक और धार्मिक अल्पसंख्यकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई उपक्रम एवं प्रयोग करता है। सरकार उन लोगों का गंभीरता एवं समानता से ख्याल रखती है जो अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के लोगों सहित उनकी जाति, संस्कृति और समुदाय के बावजूद आर्थिक या सामाजिक रूप से वंचित लोग हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रत्येक राष्ट्र में अलग-अलग जातीय, भाषाई और धार्मिक अल्पसंख्यक समूह होते हैं। भारत में अनेक अल्पसंख्यक समुदाय है। आंध्र प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, दिल्ली, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, मणिपुर, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल जैसे विभिन्न राज्यों ने अपने-अपने राज्यों में राज्य अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की, जो संविधान और संसद और राज्य विधानमंडलों द्वारा अधिनियमित कानूनों में दिए गए अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा और संरक्षण करते हैं। अल्पसंख्यक अधिकार दिवस अल्पसंख्यकों के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव को खत्म करने के मकसद से मनाया जाता है। हालांकि, कानूनी रूप से भारत के संविधान में अल्पसंख्यक की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं है लेकिन अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा के लिए संविधान के कई प्रावधान अनुच्छेद 29, 30 आदि हैं। अल्पसंख्यक शब्द अल्प और संख्यक दो शब्दों से बना है। जिसका मतलब दूसरों की तुलना में कम संख्या होना है। भारत में अल्पसंख्यकों में मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और पारसी शामिल हैं। जरूरत है कि अल्पसंख्यकों को नहीं बाटें और सत्य को नहीं ढकें। लोकतंत्र भारत की आत्मा है और उसकी रगों में लोकतंत्र रचा-बसा है। यहां सभी को समानता से जीने का अधिकार है, जाति, पंथ एवं धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव का कोई सवाल ही नहीं है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के कल्याण एवं अधिकारों पर बल दिया है तभी उनकी सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के सिद्धांत पर चलती है। अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव के आरोप पर मोदी ने कहा कि भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों में धर्म, जाति, उम्र या भू-भाग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं है। हमारी सरकार लोकतंत्र के मूल्यों के आधार पर बने संविधान के आधार पर चलती है तो पक्षपात का कोई सवाल ही नहीं उठता है। ह्यसबकाह्न शब्द में सभी अल्पसंख्यक वर्ग को सम्मिलित करने का भाव है, मोदी सरकार ने अपने नए नारे के साथ ये एहसास दिलाने का प्रयास किया है कि अल्पसंख्यक समुदाय का भी विश्वास अर्जित करने के भरपूर प्रयास किए जा रहे हैं। तीन तलाक के विरुद्ध कानून लाकर अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाओं को बहुसंख्यक समाज के महिला के बराबर बताने की कोशिश ऐसा ही प्रयास है। भारत की माटी ने ह्यवसुधैव कुटुम्बकमह्न का उद्घोष करके सभी प्राणियों के सुखी एवं समृद्ध होने की कामना की है। यहां अल्पसंख्यकों के साथ इसी उद्घोष की भांति उदात्तता बरती जाती है। महात्मा गांधी ने कहा भी है कि किसी राष्ट्र की महानता इस बात से मापी जाती है कि वह अपने सबसे कमजोर नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है। ह्न इस दृष्टि से आजादी के बाद की सभी सरकारों ने अल्पसंख्यकों के साथ उदात्त एवं कल्याणकारी दृष्टिकोण अपनाया है। लेकिन कुछ राजनीतिक दलों ने अपने स्वार्थों के लिये अल्पसंख्यकों को गुमराह किया है, साम्प्रदायिक उन्माद पैदा किया है। जिससे भारत के लोकतंत्र पर लाल और काले धब्बे लगते गये हैं। इन्हीं संकीर्ण एवं साम्प्रदायिकता की राजनीति करने वाले दलों ने अल्पसंख्यकों के कल्याण की बजाय उनको वोट बैंक मानकर उनके वास्तविक अधिकारों की अनदेखी की है। ऐसे राजनेताओं ने अल्पसंख्यकों का जीवन खतरे में है, कहकर उन्हें उकसाया है, राष्ट्र की मूलधारा से अलग-थलग करने की कोशिश की है, लेकिन मोदी सरकार ने अल्पसंख्यकों के कल्याण की अनेक बहुआयामी योजनाओं एवं नीतियों को लागू कर इन तथाकथित नेताओं की जुबान पर ताला लगा दिया है। सच कहा जाये तो देश में अल्पसंख्यक खतरे में नहीं हैं, अल्पसंख्यकों के नाम पर राजनीति करने वाले खतरे में हैं। भारत विविध संस्कृतियों और समुदायों का देश है, यही इसका सौन्दर्य है। एक या अधिक अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव और जबरन आत्मसात करने से समृद्ध और ऐतिहासिक संस्कृतियों, भाषाओं और धर्मों का नुकसान हो सकता है जिन्होंने सदियों से भारत में अपनी विरासत संभाली है।

कभी टोले से डरती है, कभी झोले से डरती है

हाल के दिनों में आपने देखा होगा कि पहले राहुल गाँधी ने भाजपा की सरकार को संविधान के मुद्दे पर अपने पाले में खींचा और अब फिलिस्तीन के मुद्दे पर प्रियंका वाड्रा ने महज एक झोला लटकाकर भाजपा और भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार को कटघरे में खड़ा कर दिया है। संविधान के मुद्दे पर तो प्रधानमंत्री जी लोकसभा में एक भाषण देकर फारिग हो गए लेकिन फिलिस्तीन के मुद्दे पर अभी तक सरका र ने चुप्पी साध रखी है

राकेश अचल
लेखक

आजकल जैसे संसद में मुद्दों पर काम नहीं हो रहा उसी तरह मुझे भी लिखने के लिए ऐसे मुद्दे मिल रहे हैं जिनके बारे में लिखने में मुझे तकलीफ होती है। आज मै फिर उस गैर जरूरी मुद्दे पर लिख रहा हूँ उसके बारे में लोकसभा का कीमती वक्त तो अभी बर्बाद नहीं हुआ लेकिन भाजपा का कीमती वक्त जरूर बर्बाद हो गया। मुद्दा था कांग्रेस संसद प्रियंका वाड्रा का झोला। जी हाँ झोला। हमारी प्रिय भाजपा के पास किसानों के मुद्दों पर बहस के लिए वक्त नहीं है लेकिन प्रियंका के झोले को लेकर पूरी सरकारी पार्टी बहस में उलझ गयी। किस्सा यूं है कि प्रियंका वाड्रा लोकसभा में जो झोला लटका कर गयीं उसके ऊपर फिलिस्तीन अंकित था और फिलस्तीन का खरबूजा वाला ध्वज भी। बस यही भाजपा को खटक गया। इस कदम की भाजपा ने आलोचना की और उनके इस कदम को तुष्टिकरण करार दिया. बीजेपी सांसद संबित पात्रा ने प्रियंका गांधी पर निशाना साधते हुए कहा, गांधी परिवार तुष्टिकरण का झोला ढो रहा है. उन्होंने कहा, इसी तुष्टिकरण की वजह से उन्हें (कांग्रेस) चुनावों में हार मिली है। भाजपा द्वारा की गयी झोले की आलोचना के बाद प्रियंका भी कहाँ चुप रहने वाली थीं। उन्होंने पलटवार करते हुए कहा कि यह आलोचना पितृसत्ता है, जहां उन्हें बताया जा रहा है कि क्या पहनना है और क्या नहीं पहनना है. उन्होंने कहा, मैं पितृसत्ता का समर्थन नहीं करती. मैं वही पहनूंगी जो मैं चाहती हूं। आपको याद होगा की इससे पहले केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री भाई किरेन रिजिजू प्रियंका के भाई राहुल गांधी की टीशर्ट पर आपत्ति कर चुके है। वे कह चुके हैं कि राहुल टीशर्ट पहनकर संसद का अनादर करते हैं। दरअसल भाजपा राहुल गांधी से तो पहले से डरी हुई थी और अब प्रियंका के लोकसभा में आने के बाद भाजपा का डर दोगुना हो गया है। तभी तो कभी भाजपा को राहुल के टीशर्ट के बाहर झांकते टोले परेशान करते हैं तो कभी प्रियंका के कंधे पर लटका झोला। संविद पात्रा के बाद भाजपा आईटी सेल के प्रमुख अमित मालवीय ने प्रियंका को राहुल गांधी से भी बड़ी आपदा कहा है। उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, इस संसद सत्र के अंत में, कांग्रेस में सभी के लिए दो मिनट का मौन रखें, जो मानते थे कि प्रियंका वाड्रा लंबे समय से प्रतीक्षित समाधान थीं, उन्हें पहले ही इसे अपना लेना चाहिए था। वह राहुल गांधी से भी बड़ी आपदा हैं, जो सोचते हैं कि संसद में फिलिस्तीन के समर्थन में बैग लेकर चलना पितृसत्ता से लड़ना है। यह सही है. मुसलमानों को सांप्रदायिक सद्गुणों का पैगाम देना अब पितृसत्ता के खिलाफ रुख के रूप में सामने आ रहा है! कोई गलती न करें, कांग्रेस नई मुस्लिम लीग है। आपको याद हो या न हो किन्तु मै बता दूँ कि पिछले सप्ताह नई दिल्ली स्थित फलस्तीनी दूतावास के चार्ज.डिअफेयर्स ने प्रियंका गांधी से मुलाकात कर उन्हें वायनाड से सांसद निर्वाचित होने पर बधाई भी दी थी. पूर्व में कांग्रेस नेता गजा में इसराइली बमबारी की निंदा भी कर चुकी है। भाजपा के ही सांसद अनुराग ठाकुर जो पहले कभी केंद्र में मंत्री होते थे वे भी प्रियंका के फिलिस्तीनी झोले से आतंकित हैं। उन्होंने कहा की प्रियंका केवल फैशन स्टेटमेंट बनाने में लगी रहती हैं। उन्होंने बांग्लादेश में हिन्दुओं के ऊपर हो रहे अत्याचार के बारे में तो कुछ नहीं बोला। भाजपा के तमाम छोटे-बड़े नेता प्रियंका के झोले को लेकर प्रियंका को कोस रहे हैं। दरअसल प्रियंका के झोले ने भारत सरकार को फिलस्तीन के मामले में कटघरे में ला खड़ा किया है। भारत सरकार अभी तक ये तय नहीं कर पायी है कि वो भारत के पुराने मित्र फिलिस्तीन के साथ है या इजराइल के साथ? फिलस्तीन के मामले में नेहरू और इंदिरा गाँधी के युग में जो नीति थी उसे अटल जी के युग में भी दोहराया गया, लेकिन मोदी युग में फिलिस्तीन को लेकर भारत की नीति अचानक बदल गय। भारत अब फिलिस्तीनियों के संघर्ष और उनके मानवीय अधिकारों का दमन करने वाले इजराइल के साथ खड़ा है। भारत ने इजराइल के फेर में फिलिस्तीन को एकदम भुला दिया है क्योंकि फिलिस्तीन में इजराइली बर्बरता का शिकार हो रहे लोग मुसलमान हैं।

मुमकिन है कि कांग्रेस की संसद प्रियंका वाड्रा ने एक झोले के जरिये फिलिस्तीन मुद्दे को जिस ढंग से उठाया है उसके बारे में आज नहीं तो कल संसद में भी बहस हो। संसद में बहस हो या न हो लेकिन संसद के बाहर तो ये बहस शुरू हो गयी है। बहस इस बात पर भी हो रही है की क्या अब विपक्षी सांसदों को भाजपा यानि भाजपा सरकार से पूछना होगा की वे कौन से कपड़े पाहणकर संसद में आएं और कौन से कपड़े न पहने? कौन सा झोला लटकाएं और कौन सा नहीं? आपको याद होगा कि भाजपा पहले भी लोगों के खान-पान और पहनावे को लेकर सवाल खड़े करती रही है। कभी उसके निशाने पर हिजाब रहता है तो कभी हलाल और गैर हलाल किया हुआ भोजन। असम में भाजपा की डबल इंजिन की सरकार होटलों में गौमांस बेचने पर प्रतिबन्ध लगा चुकी है लेकिन देश से गौमांस बाहर भेजने पार कोई प्रतिबन्ध नहीं है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की सरकार को हलाल के मुद्दे पर तकलीफ रही है। कर्नाटक में भाजपा और उसके सहयोगी हिजाब पार तेजाबी रुख अख्तियार कार चुके हैं। लेकिन किसानों, मजदूरों के मुद्दे पर भाजपा का कोई प्रवक्ता, कोई नेता या संसद अपना मुंह नहीं खोलता। राहुल की टीशर्ट और प्रियंका के झोले से बौखलाई भाजपा का डर लोकसभा में इस जोड़ी की वजह से दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है। भाजपा ने राहुल गांधी को पप्पू साबित करने में अपनी तमाम ताकत झौंक दी थी लेकिन आम चुनाव में राहुल की अगुवाई में विपक्षी गठबंधन ने जो शानदार कामयाबी हासिल की थी उसे कोई भूला नहीं है। अब प्रियंका के लोकसभा में आने के बाद भाजपा को भय है कि कहीं प्रियंका भाजपा को बेनकाब करने में राहुल से भी आगे न निकल जाएँ, इसलिए अब भाजपा प्रियंका के पहनावे के साथ ही उनके झोले पर भी निगाह रखने लगी है।

हताश-निराश विपक्ष को ममता से आस क्यों

राजेश कुमार पासी

कभी-कभी हम ऐसी समस्या से घिर जाते हैं जिससे निकलने का कोई अच्छा रास्ता नहीं सूझता तो हम हताश होकर एक नए रास्ते पर चलने लगते हैं। हालात कैसे भी हों लेकिन बिना सोचे समझे उठाया हुआ कदम नुकसान पहुंचाता है। आज हमारे देश का विपक्ष बहुत हताश और निराश हो चुका है। पिछले दस सालों से वो मोदी से लड़ रहा है लेकिन उनका कुछ नहीं बिगाड़ पाया है। 4 जून को जब लोकसभा के चुनाव परिणाम आये तो विपक्ष में खुशी की लहर दौड़ गई थी क्योंकि भाजपा को अकेले अपने दम पर बहुमत नहीं मिला था। भाजपा बहुमत से 32 सीटें पीछे रह गई थी। विपक्ष को लगा कि अब मोदी का प्रधानमंत्री बनना मुश्किल है क्योंकि उन्होंने कभी अल्पमत की सरकार नहीं चलाई है। उन्हें दूसरी उम्मीद यह थी कि एनडीए के घटक दल मोदी के अलावा भाजपा के किसी दूसरे नेता को प्रधानमंत्री बनाना पसंद करेंगे। विपक्ष की उम्मीदों के विपरीत मोदी तीसरी बार देश के प्रधानमंत्री बन गए और किसी भी घटक दल ने उनको प्रधानमंत्री बनाने का विरोध नहीं किया बल्कि पूरे एनडीए ने उन्हें अपना नेता मान लिया। मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद विपक्ष में यह उम्मीद पैदा हो गई कि जब सरकार का गठन होगा तो मंत्री पद के लिए एनडीए के घटक दलों में जबरदस्त संघर्ष होगा। उन्हें लगा कि भाजपा कमजोर हो गई है तो घटक दल मोदी को ब्लैकमेल करके ज्यादा से ज्यादा मंत्रीपद लेने में सफल हो जाएंगे। विपक्ष की उम्मीदों के विपरीत कैबिनेट में सभी महत्वपूर्ण मंत्रालय भाजपा ने अपने पास रख लिए और घटक दलों ने कोई एतराज भी जाहिर नहीं किया। विपक्ष को नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू से बहुत उम्मीद थी कि वो मोदी को फ्रीहैण्ड नहीं देंगे और सरकार में दखलंदाजी जरूर करेंगे। सरकार को बने 6 महीने बीत गए हैं लेकिन मोदी सरकार वैसे ही चल रही है जैसे पिछले दस सालों से चल रही थी। नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पूरी तरह से मोदी के समर्थन में खड़े दिखाई दे रहे हैं। 6 महीने जैसे सरकार चली है, उसको देखकर ऐसा लग ही नहीं रहा है कि ये गठबंधन की सरकार है। मोदी सरकार ऐसा आभास पैदा कर रही है जैसे वो एक पार्टी की बहुमत वाली सरकार है। जो विपक्ष इस सरकार के जल्दी गिरने की संभावना देख रहा था, वो अब बहुत निराश हो चुका है क्योंकि उसे अहसास हो गया है कि ये सरकार पांच साल तक कहीं जाने वाली नहीं है। लोकसभा में कांग्रेस की सीटें 54 से बढ़कर 99 हो गई हैं तो राहुल गांधी आत्मविश्वास से भरे हुए दिखाई दे रहे हैं। उन्हें लग रहा है कि बेशक इस बार मोदी सरकार बनाने में कामयाब हो गए हैं लेकिन अब वो दोबारा मोदी को सत्ता में नहीं आने देंगे। लोकसभा के गठन के बाद संसद के मानसून सत्र में राहुल गांधी बेहद आक्रामक अंदाज में दिखाई दे रहे थे। उनके अलावा विपक्ष के दूसरे दल भी भाजपा पर जबरदस्त तरीके से हमलावर थे क्योंकि उन्हें लग रहा था कि अब भाजपा पहले से बहुत कमजोर हो गई है। शीतकालीन सत्र में तस्वीर बदल चुकी है क्योंकि हरियाणा और महाराष्ट्र में बड़ी जीत हासिल करके भाजपा पूरे आत्मविश्वास से संसद में आई है। दूसरी तरफ इन दो राज्यों में मिली करारी हार ने विपक्ष को पस्त कर दिया है। अब विपक्ष में भाजपा से लड़ने का माद्दा ही नहीं बचा है। अब उसकी प्राथमिकता भाजपा से लड़ने की दिखाई नहीं दे रही है। अब विपक्ष पहले यह फैसला करना चाहता है कि भाजपा से किसके नेतृत्व में लड़ा जाएगा। ऐसा लग रहा है कि विपक्षी दलों को यह अहसास हो गया है कि वो राहुल गांधी के नेतृत्व में मोदी का मुकाबला नहीं कर सकते। वैसे देखा जाए तो विपक्ष राहुल गांधी के नेतृत्व में मोदी का मुकाबला कर ही नहीं रहा था। विपक्ष ने राहुल गांधी को कभी अपना नेता नहीं माना है, राहुल गांधी सिर्फ कांग्रेस का नेतृत्व कर रहे थे। इंडिया गठबंधन ने पूरे चुनाव के दौरान किसी को अपना नेता नहीं माना था। वास्तव में इंडिया गठबंधन को अपनी जीत पक्की लग रही थी। उसके नेताओं को लग रहा था कि गठबंधन का नेता ही प्रधानमंत्री का स्वाभाविक उम्मीदवार होगा इसलिये वो किसी को नेता मानने को तैयार नहीं हुए। गठबंधन के नेता चाहते थे कि प्रधानमंत्री का फैसला चुनाव परिणाम आने के बाद किया जाए क्योंकि प्रधानमंत्री पद के लिए घटक दलों में चुनाव से पहले ही खींचतान शुरू हो जाती।

संक्षिप्त खबरें

विशेष अभियान में 30 अभियुक्तों को किया गया गिरफ्तार

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय।पुलिस अधीक्षक द्वारा दिये गये निर्देश के आलोक में असामाजिक तत्वों / अपराधकर्मियों की गिरफ्तारी एवं शराब के सेवन / बिक्री/भण्डारण / निर्माण/परिवहन आदि पर पूर्ण रूप से पाबंदी लगाने तथा देशी शराब भट्ठी ध्वस्त करने हेतु कार्रवाई को दृष्टिगत रखते हुए दिनांक-16.12.2024 को विशेष अभियान चलाया गया। इस अभियान में कुल 30 अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया, जिसमें शराब कारोबार में-11, शराब सेवन-5, वारंट में 7, चोरी में-02, आर्म्स एक्ट में-03 एवं अन्य में 02 अभियुक्त शामिल हैं। जिले में अपराध नियंत्रण एवं यातायात सुरक्षा के दृष्टिकोण से कुल 82 वाहनों से 2,16,000 रु0 जुर्माना राशि वसूली गई। साथ ही जिला अंतर्गत देशी शराब-140 ली0, स्प्रीट-6188 ली0, मोटरसाइकिल-03, हाइवा 01, चार पहिया वाहन-02, मोबाइल-02, देशी कट्टा-01, कारतूस-06, पिस्टल-01, मैग्जीन-02, लॉकेट-01, अपह्रता 01 एवं चाकू-02 बरामद किया गया है।

इसुआपुर में ठंड लगने से अधेड़ व्यक्ति की मौत की आशंका

इसुआपुर । स्थानीय थाना क्षेत्र के बजरहियां गांव के 65 वर्षीय सामाजिक कार्यकर्ता ब्रज किशोर ओझा की मौत सोमवार की देर शाम हो गई। स्वजन मौत का कारण ठंड लगना बता रहे हैं। स्वजनों ने बताया कि वे कल देर संध्या करीब 8 बजे पेशाब करने के लिए घर से निकले थे। इसी बीच वे ठंड की चपेट में आ गए तथा अचेत होकर गिर पड़े। जिन्हें स्वजनों के द्वारा आनन फानन में इसुआपुर के एक निजी अस्पताल में ले जाया गया। जहां डॉक्टरों के जांचोपरांत उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मृतक के बड़े भाई नवल ओझा ने बताया कि वे सामाजिक व मिलनसार व्यक्ति थे। उनके असामयिक निधन से परिवार को अपूर्णीय क्षति हुई है। मृतक की विधवा ललिता देवी, दो विवाहिता पुत्रियां, दो पुत्रों का रो-रो कर हाल बुरा था। उप प्रमुख मुन्नी देवी तथा पति डब्लू ओझा, राकेश ओझा, अधिवक्ता मदन ओझा, रजनीश रंजन तिवारी, अमिताभ नीरज,अशोक ओझा समेत दर्जनों लोग शोक संतप्त स्वजनों को सांत्वना दे रहे थे।

दालान में आग लगने से समान और गाय झुलसी

मकेर (सारण), प्रखंड के तारा अमनौर पंचायत के तारा अमनौर गांव में बीती रात सर्द हवाओं के साथ रात्रि में अचानक बिरेन्द्र रजक के दालान में आग लग गई ,इसकी भनक लगते ही ग्रामीण इकठ्ठा हो आग पर काबू पाया तबतक हजारों रुपये की समान के साथ गाय झुलस गई । सुबह इस घटना की जानकारी से मकेर अंचल अधिकारी को अवगत कराया गया तत्पश्चात सीओ निर्मला कुमारी ने गाय को इलाज हेतु पशु चिकित्सक को आदेशित कर इलाज के लिए तत्क्षण भेजा ।व-ही आग लगने की जानकारी होने पर समाजसेवी रवि प्रकाश शांडिल्य ने पीड़ित परिवार से मिलकर हर सम्भव सहायता करने की बात कही।

अधिवक्ताओं को दी गई ई फाइलिंग की ट्रेनिंग

छपरा कोर्ट । स्थानीय व्यवहार न्यायालय के प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश पुनीत कुमार गर्ग के निर्देश पर जिला जज के सभागार में अधिवक्ताओं को ई फाइलिंग की ट्रेनिंग दी गई। जिसमें अधिवक्ता रजिस्ट्रेशन ,केस फाइलिंग ,डॉक्यूमेंट अपलोड,ऑनलाइन कोर्ट फी पेमेंट करके दिखाया गया। ट्रेनिंग के दौरान नोडल अधिकारी आरव जैन न्यायिक दंडाधिकारी प्रथम श्रेणी, मुसिफ 3 अनूप रावत, अधिवक्ता मास्टर ट्रेनर कुमार गौरव, सिस्टम ऑफिसर सतेन्द्र तिवारी ने अधिवक्ताओं के प्रश्नों के उत्तर दिए. ट्रेनिंग के दौरान अधिवक्ता राज किशोर सिंह, डॉ पंकज कुमार सिंह, पंकज कुमार, सुमंत द्विवेदी, जनार्दन कुमार द्विवेदी, बबुआ नंद द्विवेदी, दिलीप कुमार मृत्युंजय कुमार पाण्डेय, अंकुर प्रकाश सिंहा, अजय कुमार आर्य, उमेश कुमार मिश्र, सुरेन्द्र महतो, दुर्गेश प्रकाश बिहारी, नरेन्द्र कुमार पांडेय अंकित वर्मा, दीपक कुमार, दीपक कुमार सिंहा, प्रभात रंजन इत्यादि अधिवक्ता उपस्थित थे। अगली ट्रेनिंग पुनः 24 दिसंबर को रखी गई है।

टेलकम दुकान से दिन दहाड़े पैतालिस हजार की चोरी,घटना सीसी टीवी कमरे मे हुई कैद

बनियापुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के हंसराजपुर मोड पर आलोक टेलकम दुकान से दिन दहाड़े एक चोर ने दुकान के गल्ले मे रखे पैतालिस हजार नगद राशि निकाल कर चल दिया,जिस चोरी की घटना सीसी टीवी कमरे मे कैद हो गयी है,जिसमे स्पष्ट नजर आ रहा है,घटना मे दुकानदार द्वारा 112 नंबर पर पुलिस को सूचित कर प्राथमिकी हेतु आवेदन भेजा गया है। घटना के संबंध मे दुकान स्वामी आलोक कुमार दुबे ने एक युवक दुकान मे घुस कर बच्चे को बहला फुसला कर बाहर कर दिया

जिलास्तरीय टीम ने की मटियार हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का एनक्यूएएस की तैयारियों की समीक्षा

राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत किया जाना है सर्टिफाइड

- असेसमेंट के दौरान पायी गयी कमी को दुरुस्त करने का दिया मार्गदर्शन
- राज्य स्तरीय टीम जल्द करेगी असेसमेंट

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत प्रमाणीकरण को लेकर जिला स्तरीय टीम ने सारण जिले के मांझी प्रखंड के मटियार स्थित हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर का आंतरिक मूल्यांकन और समीक्षा किया गया। सारण के क्षेत्रीय कार्यक्रम प्रबंधक प्रशांत कुमार, जिला स्वास्थ्य समिति के डीपीसी सह इंचार्ज डीसीक्यूए रमेश चंद्र कुमार के द्वारा असेसमेंट किया गया। इस दौरान आरपीएम प्रशांत कुमार ने एनक्यूएएस के चेकलिस्ट के अनुसार व्यवस्था को सदृढ करने का मार्गदर्शन दिया। मटियार हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर को राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत तैयार कर लिया गया है। जल्द राज्य स्तरीय टीम द्वारा इसका मूल्यांकन किया जायेगा। इसकी तैयारी अंतिम चरण में चल रहीं है। आरपीएम के द्वारा कई बिंदुओं पर गहनता से जाँच की गयी। साथ डाक्यूमेंट्स का भी असेसमेंट किया गया, जो कमी पायी गयी है उसे पूरा करने को कहा गया।

एनक्यूएएस से प्रमाणीकरण से मिलेगी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं

आरपीएम प्रशांत कुमार ने कहा कि एचडब्ल्यूसी को एनक्यूएएस का प्रमाणीकरण मिलने से स्थानीय स्तर पर मिलने वाली 12 तरह की स्वास्थ्य सेवाओं पर दिखता है। लेकिन एएनसी, टीकाकरण, ओपीडी, परिवार नियोजन, आउटरीच में होने वाले कार्यक्रम का विस्तार होगा। मरीजों को दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवाओं का मूल्यांकन होने से उक्त संस्थान पर उपलब्ध सेवाओं का विस्तार होगा। साथ ही केंद्र पर व्यवस्थाओं में सुधार होगा। जिसका सीधा असर स्वास्थ्य सुविधाओं पर पड़ेगा।स्थानीय स्तर पर क्लीनिकल सर्विस, क्वालिटी इंप्रूवमेंट सर्विस व डॉक्यूमेंटेशन का कार्य किया जा चुका है। एनक्यूएएस प्रमाणीकरण के बाद गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधाएं बढ़ने से स्वास्थ्य केंद्र पर मरीजों के लिए मिलने वाली सुविधाओं से स्थानीय लोगों का विश्वास भी बढ़ेगा।

उच्च गुणवत्ता के साथ उचित सलाह और उसका सही उपचार मिले

डीपीसी रमेश चंद्र कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक के तहत, स्वास्थ्य सेवाओं के सभी पहलुओं जैसे- चिकित्सा, नर्सिंग, और रोगी देखभाल की गुणवत्ता को मानक के अनुरूप तैयार किया जाता है। ताकि स्वास्थ्य संस्थानों में आने वाले सभी मरीजों को उच्च गुणवत्ता के साथ उचित सलाह और उसका सही उपचार मिल सकें। राष्ट्रीय गुणवत्ता आश्वासन मानक का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह भी है कि मरीजों और स्वास्थ्य संस्थानों के बीच विश्वास का निर्माण करता है। जब मरीजों को यह विश्वास हो जाता है कि वह उच्च गुणवत्ता वाली सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं, तो उनकी संतुष्टि बढ़ती है।

हेल्थ वेलनेस सेंटर पर उपलब्ध है ये सुविधाएं

मांझी के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ रोहित कुमार ने बताया कि हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर 151 प्रकार का दवा, 14 प्रकार के जाँच की सुविधाएं, टीकाकरण, प्रसव पूर्व जाँच, परिवार नियोजन की सेवा, ओपीडी, संचारी रोग, गैर संचारी रोग, मानसिक स्वास्थ्य, पीने का पानी, हर्बल गार्डन, शौचालय, अग्निशमन यंत्र के साथ स्वच्छ वातावरण में गुणवत्ता पूर्ण सुविधाएं उपलब्ध करायी जा रहीं है। इस मौके पर सीएचओ प्रियंका, बीएचएम राम मूर्ति, आरपीएमयू से मनोज कुमार, सिफार के डीपीसी गनपत आर्यन, बीएमएनई, एएनएम वंदना समेत अन्य मौजूद थे।

आक्रोशित ग्रामीणों ने बीडीओ को दिया ज्ञापन

- पंचायत सरकार भवन निर्माण में घटिया सामग्री लगाने का आरोप

प्रातः किरण, संवाददाता

परसा।प्रखंड के अन्याय में पंचायत सरकार भवन निर्माण में घटिया सामग्री से निर्माण कार्य कराने से नाराज ग्रामीणों ने बीडीओ राकेश कुमार को लिखित आवेदन देकर कार्रवाई करने की मांग किया गया है।आवेदन में ग्रामीणों ने बताया है कि पंचायत के मुखिया तथा पंचायत सचिव के द्वारा पंचायत सरकार भवन का निर्माण कराया जा रहा है।जिसमें घटिया किस्म का ईंट,बालू तथा गिट्टी का प्रयोग किया जा रहा है। आवेदन में बताया गया है कि ग्रामीणों द्वारा पंचायत सचिव व मुखिया प्रतिनिधि से शिकायत करने पर कुछ भी मानने को तैयार नही हुआ।और घटिया सामग्री से निर्माण कार्य जारी रखा गया।जिससे ग्रामीणों ने बीडीओ से लिखित शिकायत कर जांच कर अच्छी समान से काम कराने की मांग करने की बातें बताया गया है। आरोप के संबंध में मुखिया प्रतिनिधि सत्येंद्र सिंह से पूछे जाने पर कुछ भी बताने से इंकार किया। इस संबंध में बीडीओ राकेश कुमार ने बताया कि ग्रामीणों से लिखित शिकायत मिली है। जिस पर पहल करते हुए कर्मचारी को जांच करने का निर्देश देने की बातें कही। शिकायत आवेदन पर मंतोष कुमार ,संबोध कुमार,सोनू कुमार,उपेंद्र शर्मा,सुरेश शर्मा,मेघनाथ शर्मा,विधान शर्मा,दीपक कुमार,शुशीला देवी बिट्टू यादव,बीरेंद्र कुमार राय,रवि कुमार शर्मा,शंभु भगत,संतोष कुमार,विक्की कुमार,अनिता देवी,राखी देवी, समेत दर्जनों ग्रामीणों का हस्ताक्षर अंकित है।

विशेष कैम्प का आयोजन कर लोगों को जनकल्याणकारी योजनाओं से किया गया लाभान्वित

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। जिलाधिकारी दिनेश कुमार राय के निर्देश के आलोक में आज मझौलिया प्रखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत राज-धोकराहा अवस्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय, शिकारपुर तथा बगहा-02 प्रखंड के ग्राम पंचायत राज-संतपुर सोहरिया अंतर्गत ग्राम घोटवा टोला में विशेष कैम्प का आयोजन किया गया। विशेष कैम्प में सभी विभागों के अंतर्गत संचालित विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं से आमजनों को आच्छादित/ जानकारी प्रदान करने एवं समस्याओं का निराकरण किया गया है। इस कैम्प में शिक्षा, स्वास्थ्य, मनरेगा, राजस्व पशुपालन, आरटीपीएस, कृषि, महिला हेल्पलाइन, उद्योग विभाग, जिला अल्पसंख्यक कल्याण, आयुष्मान कार्ड, खाद्य आपूर्ति, बाल विकास परियोजनाओं आदि समस्याओं से संबंधित लोगों का समस्या का निपटारा किया गया।

23 दिसंबर को मुख्यमंत्री आएंगे घोटवा टोला

घोटवा टोला में लगा है विभिन्न विभागों के निपटारे का शिविर

प्रातः किरण, संवाददाता

बगहा। 15 दिसंबर को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के वाल्मीकिनगर दौरे पर आने की अटकलों को विराम मिल गया है अब 23 दिसंबर को सूबे के मुखिया वाल्मीकिनगर आएंगे ।ऐसा मंत्रिमंडल सचिवालय विभाग अपर सचिव डॉ एस सिद्धार्थ ने सभी अपर मुख्य सचिव,प्रधान सचिव,सचिव व जिलों के सभी प्रभारी सचिवों को पत्र लिखकर इस बाबत जानकारी दी है। पत्र द्वारा दी गई जानकारी के ।मुताबिक मुख्यमंत्री अपने पहले चरण में 23 दिसंबर से 28 दिसंबर तक बिहार यात्रा पर रहेंगे। बतादें की अपने पहले चरण के यात्रा 23 दिसंबर सोमवार को बेतिया में और रात्रि विश्राम वाल्मीकिनगर करेंगे। 24 दिसंबर मंगलवार को मोतिहारी 26 दिसंबर को शिवहर और सीतामढ़ी और 27 दिसंबर को मुजफ्फरपुर जाएंगे।25 दिसंबर को बड़ा दिन क्रिसमस का छुट्टी रहेगी। फिर 28 दिसंबर को वैशाली की यात्रा पर रहेंगे।

जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री के महिला संवाद यात्रा का नाम बदल दिया गया है ।अब इस यात्रा को प्रगति यात्रा नाम दिया गया है। अपने पहले चरण के यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री सम्भवतः वाल्मीकिनगर स्थित घोटवा टोला आएंगे ।जहां से प्रगति यात्रा की शुरूआत करेंगे।

विवादों के निपटारे के लिए विभिन्न विभागों ने घोटवा टोला में अपने शिविर खोल दिए है। जिसमे लोगों के समस्याओं का निपटारा किया जा रहा है। अधिकारी दिन रात एक कर तोड़ मेहनत कर रहे है। ताकि कहीं कोई कमी न रह जाए। इसके लिए अधिकारी घोटवा में कैम्प किए हुए हैं

मढ़ौरा एएनएम स्कूल के प्राचार्या के विरुद्ध आउटसोर्सिंग कर्मचारी ने खोला मोर्चा,रिश्वत लेकर दुकान खोलवाने फिर पैसा नही देने पर बन्द करवाने का लगाया आरोप

अमनौर।स्थानीय थाना क्षेत्र के खोरी पाकर खरग गांव के सरपंच पुत्र सुरजीत कुमार सिंह ने मढ़ौरा के ए एन एम स्कूल के प्राचार्या व उनके पति के विरुद्ध कई गम्भीर आरोप के साथ स्वास्थ्य विभाग के निदेश के पास लिखित शिकायत किया है।इनका आरोप है कि दोनों पति पत्नी स्कूल के प्रांगण में पचास हजार अग्रिम राशि लेकर जेनरल स्टोर का दुकान खुलवाया,मुझे ऑफिस बॉय के रूप में योगदान कराया।दुकान जबरदस्ती बन्द करा दी गई।लेकिन दिया गया राशि नही लौटाया गया।पैसा मांगने पर आफिस बॉय से मुझे हटवा दिया।मेरे साथ कई युवा को नौकरी को स्थायी करवाने के नाम पर पैसा ली गई है बिरोध करने पर अंकित कुमार जयेश कुमार डाटा ऑपरेटरको नौकरी से निकाल दिया गया।उन्होंने आरोप लगाया है कि प्राचार्या शैलवी ने अपनी सासु माँ पुष्पा देवी को ऑफिस गर्ल के रूप में नियुक्ति कराई है।ये एक दिन भी कम करने नही आती इनका फर्जी हस्ताक्षर कराकर लाखो रुपया बिभाग का निकासी की हुई है।शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी जाती है।इनके विरुद्ध अमनौर थाना में लिखित शिकायत किया है।इनका आरोप है कि मैं उस बिद्यालय में आउटसोर्सिंग कर्मचारी के रूप में आफिस बॉय के पद पर काम करता था।एएनएम स्कूल के प्रभारी प्राचार्या शैलवी तथा उनके पति ने दुकान खोलने के लिए तथा नौकरी को स्थायी करने के नाम पर मोटी रकम लिया गया।पैसा मांगने पर जान से मारने तथा गलत तरीको से फसाने का आरोप लगाया है।

एएनएम स्कूल के प्राचार्या शैलवी ने कहा कि ये आरोप बेबुनियाद व निराधार है।वे कम्पनी द्वारा बहाल कर्मी थे,कम्पनी ने हटा दिया है।इसी को लेकर इस तरह का गलत बिरोध किया जा रहा है।

एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित

छपरा कार्यालय। खरीफ विपणन मौसम वर्ष 2024-25 अंतर्गत जारी धान अधिप्राप्ति प्रक्रिया में तेजी लाने के उद्देश्य से मंगलवार को श्री भिखारी ठाकुर प्रेक्षा गृह, छपरा में सारण जिला के सभी पैक्स एवं व्यापार मण्डल के अध्यक्ष/प्रबंधकों की एक दिवसीय कार्यशाला का अयोजन किया गया।

जिलाधिकारी अमन समीर ने अपने संबोधन में कहा कि सभी चयनित पैक्स/व्यापार मंडल किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए धान अधिप्राप्ति के कार्य को पूरी पारदर्शिता के साथ तेजी से सुनिश्चित करें। अधिप्राप्ति कार्य में सभी पैक्स/व्यापार मंडल को अपेक्षित सक्रिय सहयोग देना होगा।

कार्यशाला में अधिप्राप्ति की प्रक्रिया एवं लक्ष्य के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला आपूर्त्ति पदाधिकारी, जिला सहकारिता पदाधिकारी, जिला प्रबंधक राज्य खाद्य निगम सहित अन्य पदाधिकारी मौजूद थे।

भिखारी ठाकुर जयंती पर इप्टा करेगी रश्मिरथी की प्रेक्षागृह में प्रस्तुति

- भोजपुरी नवजागरण और भिखारी ठाकुर पर राष्ट्रीय परिसंवाद

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय सारण जिला प्रशासन, भिखारी ठाकुर लोक साहित्य एवं सांस्कृतिक महोत्सव, पाटलिपुत्रा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साईंस और इप्टा छपरा द्वारा बुधवार को भिखारी ठाकुर प्रेक्षागृह में भिखारी ठाकुर जयंती समारोह का आयोजन दोपहर 1 बजे से किया गया है जिसमें भोजपुरी नवजागरण और भिखारी ठाकुर पर राष्ट्रीय परिसंवाद तथा दोपहर 4 बजे से सांस्कृतिक सत्र में जातीय विद्वेष और युध्द की विभिषिका के खिलाफ रामधारी सिंह दिनकर की रश्मिरथी का मंचन किया जाएगा।

वरिष्ठ रंगकर्मी प्रो० लालबाबू यादव ने बताया कि राष्ट्रीय परिसंवाद में देश के प्रख्यात अधिकारी विद्वान भोजपुरी नवजागरण और भिखारी ठाकुर विषय पर संवाद कायम करेंगे जिनमें एम एस कालेज के पूर्व प्राचार्य प्रो० हरिनाथ ठाकुर, जेएनयू के डॉ० जितेंद्र यादव, शिक्षाविद, भिखारी ठाकुर ग्रंथावली के संपादक एम एल सी प्रो० वीरेन्द्र नारायण यादव, सुरेन्द्र नाथ त्रिपाठी, डॉ दिनेश पाल, डॉ० अमित रंजन मुख्य है। उन्होंने आगे बताया कि दोपहर 4 बजे से सांस्कृतिक सत्र में भिखारी ठाकुर के गीतों की प्रस्तुति मंगलाचरण, लोक एवं शास्त्रीय नृत्य और रामधारी सिंह दिनकर की कालजयी रचना रश्मिरथी, नाट्यांतरण निर्देशन और रंग परिकल्पना डॉ० अमित रंजन, संगीत कंचन बाला और टुन्नू तनहा, की प्रस्तुति होगी। नाटक में कथानायक कर्ण की भूमिका में मनोरंजन पाठक, कृष्ण की भूमिका में डॉ० राकेश कुमार, परशुराम की भूमिका में डॉ० अमित रंजन, कुंती की भूमिका में कंचन बाला, इन्द्र की भूमिका में शैलेंद्र कुमार शाही, दुर्योधन की भूमिका में पंकज कुमार, अर्जुन की भूमिका में मृणाभ कुमार, भीम की भूमिका में अमितेश, समय की भूमिका में अभिलाषा मिश्रा, नटी की भूमिका में आयुषी परासर तो कोरस की भूमिकाओं में सागर कुमार, प्रिया श्रीवास्तव, आशीष कुमार सिंह, प्रियंका श्रीवास्तव, शुभम राज सिंह, आदर्श और अभिनव आदि हैं।

संघ के सचिव ने टीम को किया रवाना

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। बिहार राज्य कबड्डी संघ के तत्वावधान में मुंगेर जिला कबड्डी संघ द्वारा जे एस ए मैदान पूर्व मध्य रेल जमालपुर मुंगेर में 18 से 20 दिसंबर तक 50वीं स्वर्ण जयंती बिहार स्टेट जूनियर बालक कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है ।उक्त प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु सारण जिले की कबड्डी टीम को सारण जिला कबड्डी संघ के सचिव पंकज कश्यप ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया.। टीम को संघ के संरक्षक डॉ हरेंद्र सिंह, सुरेश सिंह, सभापति बैठा, देव कुमार सिंह, अमरेंद्र सिंह सहित सभी कबड्डी प्रेमियों ने अपनी शुभकामनाएं दीं हैं।संघ के सचिव ने बताया कि राज्य स्तरीय जूनियर बालक प्रतियोगिता में भाग लेने वाली टीम में अनिकेत कुमार ,अंश राज सिंह , आयुष रंजन,देव राज सिंह ,अनुराग गुप्ता ,सुमित सिंह , मुन्ना राय ,मोनू कुमार ,निर्भय कुमार,निखिल कुमार,ज्योतिष प्रकाश ,मंटू कुमार शामिल है जबकि कोच के रूप में सौरभ कुमार सिंह है।

पुलिस को देख बाइक छोड़ तस्कर हुआ फरार, डिक्की में मिला 10 लीटर देसी शराब

बगहा। बगहा के वाल्मीकिनगर थाना पुलिस ने शराब कारोबारियों में हड़कंप मचा रखा है। इसी क्रम में वाल्मीकिनगर थाना अंतर्गत चंपापुर चौक पर वाहन चेकिंग पुलिस कर्मियों द्वारा किया जा रहा था। इसी दौरान एक व्यक्ति पुलिस को देख बाइक छोड़कर फरार हो गया जिसके बाइक के डिक्की से 10 लीटर देसी शराब बरामद किया गया है ।थानाध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने बताया कि मैं दलबल के साथ गश्ती के क्रम में चंपापुर चौक पर वाहन जांच कर रहा था तभी दूसरी तरफ से बाइक पर एक व्यक्ति आता दिखाई दिया लेकिन वह व्यक्ति पुलिस को देख बाइक घुमाकर भागने लगा ।साथ के सहयोगी कर्मियों ने उसका पीछा किया लेकिन वह बाइक छोड़कर फरार हो गया। बाइक की तलाशी ली गई तो बाइक के डिक्की से देसी शराब के 200 एमएल के 5 पाउच मिले जो कुल 2 लीटर बरामद किया गया ।फरार व्यक्ति की पहचान ढंगरहिया निवासी 32 वर्षीय गुड्डू उरांव के रूप में कई गई है ।बतादें बिहार में शराब पूर्णरूपेण बंद है ।शराब बनाने,बेचने,सेवन करने और इसे परिवहन करने पर सख्त मनाही है और यह एक संज्ञेय अपराध है।

ठंड से होनेवाले रोगों का होमियोपैथ में अचूक दवा: डॉ घनश्याम

बेतिया(मोहन सिंह) ।ठंड से होनेवाली बीमारियों का होमियोपैथ में अचूक इलाज है ।होमियोपैथिक दवाओं के नियमित सेवन से ऐसे रोग पूरी तरह ठीक हो जाते है ।यह बातें नगर के सविता होमियो क्लिनिक एवं रिसर्च सेन्टर के निदेशक सह आगेर्नाइजेशन फॉर होमियो मिशन के जिलाध्यक्ष डॉ घनश्याम ने कहीं ।उन्होंने कहा कि ठंड लगने की स्तिथि में मरीज को एकोनाइट 200 की चार बून्द सुबह शाम लगातार तीन दिन तक दिया जाए तो मरीज पूरी तरह स्वस्थ हो जाएगा ।डॉ घनश्याम ने बताया कि ठंड लगने से बुखार, दर्द की स्तिथि की स्तिथि में होम्योपैथी में रस्टक्सअचूक दवा है ।इसकी कुछ बूंद लेने से मरीज को काफी राहत मिलती है ।इसी तरह साइलेसिया,एसीटैनिलिडियम सहित होमियोपैथी में बहुत दवाएं है जो ठंड के कारण होनेवाली बीमारियों के लक्षण एवं प्रकृति जो सही सही समझकर यदि मरीज को दिया जाए तो इसका फायदा निश्चित रूप से मिलता है ।वही डॉ घनश्याम ने बताया कि खांसी,दमा, बीपी,के मरीजों को ठंड से ज्यादा खतरा रहता है जिसको ध्यान में रखकर ऐसे मरीजों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

विश्व सर्वभाषा कवि सम्मेलन में छपरा की बेटी डॉ. ममता मनीष सिन्हा शामिल

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। छपरा की बेटी प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय कवयित्री डॉ. ममता मनीष सिन्हा को प्रसार भारती आकाशवाणी दिल्ली द्वारा आयोजित विश्व के सबसे बड़े सर्वभाषा कवि सम्मेलन में आमंत्रित किया गया है।यह कार्यक्रम 18 दिसंबर से 19 दिसंबर तक आकाशवाणी मुंबई, महाराष्ट्र में आयोजित होगा।डॉ ममता मनीष सिन्हा का मायका श्याम चक, छपरा है। इनकी प्रारम्भिक तथा उच्च शिक्षा राजेंद्र कॉलेजिएट एवं राजेंद्र कॉलेज से हुई है। डॉ. ममता मनीष सिन्हा का चयन संथाली भाषा की अनुवादिका के रूप में हुआ है। उल्लेखनीय है कि 21 भाषाओं के चयनित कवियों द्वारा कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया जाएगा। कार्यक्रम अधिकारी, रामावतार बैरवा ने बताया कि डॉ. ममता मनीष सिन्हा का चयन उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक प्रतिभा और संथाली भाषा पर उनकी गहरी पकड़ को देखते ज्ञातव्य है कि डॉ. ममता हिंदी, भोजपुरी के अलावें संथाली, नागपुरी, खोरठा एवं मैथिली भाषा में भी लिखती हैं। वह न केवल एक प्रतिष्ठित कवयित्री हैं, बल्कि कुशल मंच संचालिका और सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। वह कौशल विकास परियोजना अन्तर्गत गुगन नीटवेयर प्राइवेट लिमिटेड के माध्यम से बिहार और झारखंड की ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रशिक्षण प्रदान करने के क्षेत्र में काम कर रही हैं। इसके अलावा, वह महिलाओं और दिव्यांगजनों की शिक्षा, सुरक्षा और रोजगार जैसे मुद्दों के समाधान हेतु विभिन्न क्षेत्रीय एनजीओ के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं।

डॉ. ममता मनीष सिन्हा ने कहा कि झारखंड और बिहार का विश्व पटल पर प्रतिनिधित्व करना मेरे लिए गर्व की बात है। यह अवसर मेरे दोनों राज्यों के साहित्य और संस्कृति को नई पहचान देगा। पिछले 68 वर्षों से आकाशवाणी द्वारा इस कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है, और डॉ. ममता का इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के लिए चयन बिहार और झारखंड के साहित्य जगत के लिए गौरव का विषय है।

छपरा की बेटी डॉ. ममता पूर्व में भी कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त कर चुकी हैं। उनके इस प्रतिष्ठित सम्मान पर छपरा जिले के साहित्य प्रेमियों में हर्ष और गर्व का माहौल है।

बीपीएल परिवार के लिए छोटे छोटे अनुदान योजना का बड़ा महत्व:गरिमा

बेतिया। समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित कबीर अंत्येष्टि अनुदान योजना के लाभुक परिवारों को अनुदान राशि का चेक समारोह पूर्वक सौंपा गया। महापौर गरिमा देवी सिकारिया के कार्यालय कक्ष में बुलाए गए लाभुकों को महापौर ने संबोधित किया। श्रीमती सिकारिया ने कहा कि इस योजना के तहत गरीबी रेखा से नीचे यानी बीपीएल परिवारों को इस योजना का लाभ दिया जाता है।

उन्होंने बताया कि बीपीएल श्रेणी के परिवारों के किसी भी उम्र के व्यक्ति की मृत्यु होने पर उनके परिवार या आश्रित को अंतिम संस्कार के खर्च के लिए एकमुश्त अनुदान दिया जाता है।

पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन ने पेंशनर्स दिवस पर सरकार से पेंशन को आयकर मुक्त करने की माँग की

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की मासिक बैठक 11 बजे दिन में पराशर कम्प्लेक्स भगवान बाजार में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए उप सचिव डॉ.ए एच अंसारी ने कहा कि 17 दिसम्बर पेंशनभोगियों के लिए एक महत्वपूर्ण दिन है। पेंशनर्स दिवस की सभी पेंशनभोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएँ। डॉ अंसारी ने पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की छपरा शाखा की निरंतर हो रही उपलब्धियों पर खुशी जताई और कहा कि रेलवे बोर्ड के आदेशानुसार क्रानिक डिजिज वाले पेंशनर्स को रेलवे अस्पतालों से तीन माह की एक मुश्त दवा मिलने लगी है। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स की ताकत पेंशनर्स ही हैं। इसलिए सदस्यता बढ़ाने पर जोर दिया। अगर पेंशनर्स की ताकत और एकता रही तो केंद्र सरकार को पेंशन को आयकर से मुक्त करना , एडिशनल पेंशन , आठवें वेतन आयोग गठन , अठारह महीने का मँहगाई राहत एरियर तथा चिकित्सा सुविधा में सुधार आदि हमारी मांगे माननी पड़ेगी। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की उपलब्धियों को क्रमवार चर्चा की। जिन पेंशनर्स का जन्मदिन दिसम्बर माह है , उनको बधाई कार्ड देकर लंबी आयु की कामना दी ।उन्होंने एक तरह की चिकित्सा सुविधा सभी केंद्रीय कर्मचारियों को देने , एक्सग्रेसिया पेंशन को मिनिमम नौ हजार डीए सहित , नोशनल इंक्रीमेंट रेलवे पेंशनर्स का हेल्थ केयर अपग्रेडेशन , फिक्स मेडिकल एलाउंस तीन हजार डीए सहित आदि प्रमुख माँग की चर्चा की और कहा कि अगर हम एकजुट रहे तो केंद्र सरकार को विवश होना पड़ेगा। सभी सदस्यों ने जिनका जन्मदिन था , उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दिए। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन का त्रैमासिक बुलेटिन सभी पेंशनर्स सदस्यों को वितरित किया गया। नये पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण कराई गई। बैठक को संबोधित करते कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने 65 , 70 , 75 वर्ष आयु पर क्रमशः 5 ,10 ,15 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता की माँग केंद्र सरकार से की। जाड़े के मौसम में पेंशनर्स को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की सलाह दी और छपरा शाखा की उपलब्धियों पर खुशी जताई। पेंशनर्स की समस्याएं लिखित में एकत्र किया और रेलवे अस्पताल से रोगग्रस्त पेंशनर्स को उचित इलाज और दवा आपूर्ति की माँग की गई। उन्होंने ने कहा कि अब रेलवे अस्पताल से पेंशनधारियों को तीन माह की दवा इकट्ठे मिल रही है। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की देन है। बैठक को संबोधित करने वालों में मुख्य रुप से डॉ ए एच अंसारी , मिथिलेश कुमार सिंह , ओम प्रकाश सिंह पराशर , के. के. सिंह , मुंद्रिका प्रसाद , राजकुमार श्रीवास्तव , सुरेंद्र सिंह , पी के मांझी , सुधीर श्रीवास्तव , रामानंद महतो , रामनारायण तिवारी आदि हैं।

बसडीला मोड़ से ट्रक पर लदी 1678 लिटर अंग्रेजी शराब बरामद, चालक व धंधेवाज फरार

कोपा ।राष्ट्रीय राज्य मार्ग एन एच 531 छपरा सिवान मेन रोड बसडीला मोड़ के समीप मध निषेध विभाग पटना से गुप्त सूचना के आधार पर कोपा थानाध्यक्ष पिन्टू कुमार ने सिवान से छपरा के तरफ जा रही ट्रक से 1678 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ एक ट्रक को भी पुलिस ने जप्त किया ।थानाध्यक्ष ने बताया कि सोमवार को बीती रात गुप्त सूचना के आधार पर वाहन चेकिंग के दौरान यह सफलता हाथ लगी ।लाइन से दर्जनो ट्रक आ रहा था ।पहचान में नही आया कि किस ट्रक पर शराब लदा है ।पुलिस गाड़ी को देखते ही अंधेरे का फायदा उठा कर ट्रक चालक ट्रक छोड़कर भाग गया ।ट्रक पर अफसर च्वाइस के फूल,हाफ,टूटी अंग्रेजी शराब था ।वाहन मालिक एव चालक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज किया गया ।तथा फरार शराब धंदेवाज को अनुसंधान कर तुंरन्त गिरफ्तार किया जाएगा ।शराब उत्तर प्रदेश से पटना जा रहा था।

सरेआम गोली मारो व दुष्कर्मी को सजा की मांग पर आरा में उबाल, सड़क पर उतरे गुस्साए लोग

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। बिहार के भोजपुर जिले के आरा नगर थाना क्षेत्र में रेप की विभत्स घटना को अंजाम दिया गया है. 9 साल की मासूम बच्ची के साथ दुष्कर्म के बाद उसे पटक-पटकर कर मार डाला गया. आक्रोशित लोग अब दुष्कर्मी को सरेआम गोली मारने की मांग के साथ सड़क पर उतर आए और हंगामा किया.बच्ची आरा की दुष्कर्म के बाद हत्या के बाद फूटा लोगों का गुस्सा.9 साल की बच्ची से रेप के बाद मासूम को पीटकर मार डाला.दुष्कर्म के आरोपी को फांसी देने की मांग कर रहे गुस्साए लोग.

दुष्कर्म के बाद बच्ची की पीट-पीट कर हत्या के मामले को लेकर लोगों का आक्रोश भड़क उठा है. गुस्साए लोगों ने धरहरा के समीप आरा पटना मुख्य मार्ग को जामकर हंगामा किया. घटना के संदर्भ में बताया जा रहा है कि देर रात नगर थाना क्षेत्र के इलाके में अपने घर पर बुलाकर मासूम लड़की की आरोपी ने पीट-पीटकर हत्या कर दी और उसके शव को अपने घर में छुपा दिया. घटना के बाद आक्रोशित लोगों ने आरोपी की जमकर धुनाई कर दी और उसे पुलिस के हवाले कर दिया. वहीं घटना में शामिल आरोपी को सरेआम फांसी देने एवं जल्द से जल्द सजा दिलाने के साथ पीड़ित परिवार को मुआवजे की मांग को लेकर लोगों ने धरहरा में सड़क जाम कर दिया. इसके कारण सैकड़ों गाड़ियों की लंबी कतार लग गई और लोग जमकर हंगामा करते रहे.

आक्रोशित लोगों का कहना है कि जिस तरह से मासूम की दुष्कर्म के बाद निर्मम हत्या की गई है, इस तरह उस आरोपी को भी सरेआम गोली मार दिया जाए तभी इस पीड़ित परिवार को न्याय मिल पाएगा. मौके पर कई थानों की पुलिस और वरीय अधिकारी मौजूद थे और लोगों को समझाते बुझाते रहे. हालांकि, आक्रोशित भीड़ कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थी. इस घटना में घायल आरोपी की पुलिस अभिरक्षा में आरा के सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है.

घटना के बारे में बताया जा रहा है कि देर रात एक 9 वर्षीय बच्ची अपने घर से आटा लेने पास के ही एक दुकान पर गई हुई थी. जिसके बाद नामजद आरोपी ने उसे बहला फुसला कर अपने घर ले गया और जबरन मुंह मे कपड़ा ठूस कर नाबालिग बच्ची के साथ दुष्कर्म किया. बच्ची किसी से बोले नहीं और अपने कुकर्म को छुपाने के लिए अधेड़ आरोपी ने उस बच्ची को पटक पटक कर मार दिया, उसके शव को अपने घर में ही पलंग के नीचे छुपा दिया.बताया जा रहा है कि जब बच्ची वापस घर नहीं लौटी तो परिजनों ने खोजबीन शुरू की. शक के आधार पर परिजनों और मोहल्लेवालों ने नामजद आरोपी के घर की तलाशी ली तो पलंग के नीचे बच्ची मृत अवस्था में पड़ी मिली. इसके बाद मोहल्ले वालों ने नामजद आरोपी की जमकर पिटाई शुरू कर दी. इसी बी किसी ने घटना की सूचना आरा नगर थाना को दी. नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंचकर आरोपी को हिरासत में लिया और सदर अस्पताल में भर्ती कराया. घटना की सूचना जैसे ही आस पास के इलाके में पहुंची वहां अफरातफरी का माहौल हो गया.

आरोपी आरा नगर थाना क्षेत्र अंतर्गत धरहरा हनुमान टोला का बताया जा रहा है. आरोपी को वकील नाम से लोग जानते हैं जो कबाड़ी का गाड़ी चलाता है. जानकारी के अनुसार, आरोपी पहले भी शराब बेचने और पीने के मामले में जेल जा चुका है.

नृत्यांगना आदित्या के निर्देशन में विदेशिया का शास्त्रीय मंचन हुआ

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान के तत्वाधान में आयोजित तीन दिवसीय लोकोत्सव के दूसरे दिन आरा की सुविख्यात कथक नृत्यांगना आदित्या श्रीवास्तव एवं समूह ने भिखारी ठाकुर रचित विदेशिया प्रस्तुत किया किया । स्थानीय बस स्टैंड स्थित भिखारी ठाकुर सांस्कृतिक मंच पर इनकी शिष्या स्नेहा पांडेय, रीतिका कुमारी, सलोनी कुमारी, सिद्धि आनंद व सोमी सोनी ने अपने भाव भंगिमाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया । वही प्यारी सुंदरी की भूमिका में नृत्यांगना स्नेहा पांडेय विरह भाव से दर्शकों को भावुक कर दिया । यह नृत्य संरचना में मंगलाचारण से शुरू हुआ जो विदेशी, प्यारी सुंदरी, परिकिया व बटोही के सभी प्रसंगो को दशार्ता हुआ श्रोताओं के हृदय को तक पहुँचा । पैरो में घुंघरू की झनकार के साथ लोक वाद्यो की अनुगूंज व शास्त्रीय वस्त्र विन्यास एवं कथक नृत्य का अंग संचालन आकर्षक रहा । आरा में इस तरह का प्रयोग एवं प्रस्तुति का यह पहला अवसर था । गुरु आदित्या श्रीवास्तव ने बताया कि नाटक रूपांतरण के अलावा इस तरह की नृत्य संरचना की प्रस्तुति नृत्य कलाकारों को भी भिखारी ठाकुर से अवगत करवाने का माध्यम होगा साथ प्रस्तुति नई पीढी के लिए सुगम होगा । इस प्रस्तुति के पूर्व में कथक गुरु बक्शी विकास ने कहा कि भिखारी ठाकुर ने विदेशिया के माध्यम से केवल सामाजिक कुरीतियों पर ही नही प्रहार किया है बल्कि विदेशिया, प्यारी सुंदरी व बटोही पात्रों के रूप में जीव से ब्रह्म को मिलाने के लिए धर्म के महत्व का भी संदेश दिया है ।

जिला स्वास्थ्य समिति के तत्वाधान में दो दिवसीय एएनएम कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

भोजपुर । जिला स्वास्थ्य समिति के तत्वाधान में दो दिवसीय एएनएम कार्यकताओं का कार्यशाला, प्रशिक्षण दो बैच में चंदवा के एक रिसॉर्ट में आयोजन किया गया है। यह कार्यक्रम 17 18 और 19 20 दिसंबर को चलेगा।इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन जिला अपर मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी डॉक्टर के एन सिन्हा ने किया ।

अपने संबोधन में डॉ सिन्हा ने कहा कि 6 माह के बाद बच्चों को मां का दूध के साथ-साथ बाहर का भी खाना देना जरूरी है ताकि समुचित मात्रा में आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें। डॉ सिन्हा ने कहा कि 2 साल के बाद बच्चों को मां का दूध नहीं देना चाहिए और पूर्ण रूप से बाहर का ही खाना देना है।

इस पोषण के बारे में विशेष रूप से जानकारी राज्य स्वास्थ्य समिति की प्रशिक्षक ,जीएनएम स्कूल की ट्यूटर विनीत विनीता एवं अंजना कुमारी ,परिवार कल्याण कंसीलर दे रही है ।हर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से दो एएनएम को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कार्यक्रम के आयोजन में जिला प्रोग्राम सर्वेक्षक ,प्रेमरंजन मोदी जी तथा जिला प्रोग्राम मैनेजर डॉ रवि जी की विशेष भूमिका है ।कार्यक्रम में सुधीर सिंह और पंकज कुमार भी व्यवस्था में शामिल थे।

शादी का झांसा दे 5 साल तक फौजी ने किया यौन शोषण, दिल्ली से काराकाट पहुंची युवती

प्रातः किरण संवाददाता

काराकाट(रोहतास) । रोहतास के काराकाट थाना क्षेत्र से एक दिल को झकझोर देने वाला मामला प्रकाश में आया है। जहां दिल्ली से आई एक युवती ने अपनी फौजी पति के खिलाफ मामला दर्ज कराने के लिए पिछले कई महीने से भटक व दर-दर की खा रही ठोकरें खा रही है। युवती 11 दिसंबर से ही काराकाट थाना परिसर में स्थित महिला बैरेक में रहकर अपने प्रेमी फौजी पर करवाई करने की थाना प्रभारी से गुहार लगा रही है। लेकिन अब्ला नारी की कोई सुनने वाला नही है। वहीं थाना प्रभारी का मामले में करवाई न करने और थाना परिसर में ही आज छह दिनों से युवती को रखना कई सवाल खड़ा कर रहा है। बरहाल ये जांच करने पर ही पता चल पाएगा की आखिर इस मामले को छह दिनों तक दबाने की मुख्य कारण क्या है। युवती द्वारा 11 दिसंबर को एक आवेदन दिया गया लेकिन अभी तक एफआईआर न होना कही न कही थानाध्यक्ष की कार्यशैली पर सवाल खड़ा करता है। युवती ने थाना क्षेत्र के कांध बहुआरा गांव निवासी रामरेखा गिरी के फौजी पुत्र ऋषिकेश गिरी पर पिछले 5 वर्षो से प्रेम संबंध होने की आरोप लगाया है। बताया की उसकी नाबालिग अवस्था से ही ऋषिकेश के साथ प्रेम प्रसंग चल रहे है । दोनों मंदिर में शादी कर एक साथ रहते थे । इस बीच एक बार प्रेग्नेंट होने पर फौजी पति ने उसकी जबरन गर्भपात भी करा दी। और आज उसे अपने साथ रखने से इंकार कर रहा है। जिसके बाद पीड़ित लड़की काराकाट थाने पहुंच अपने प्रेमी फौजी पति की काली करतूत थानाध्यक्ष से बताई। लेकिन करवाई की नाम पर अभी भी उसे कुछ हासिल नहीं हुआ । युवती ने फौजी पति पर लम्बे समय से शादी का झांसा देकर शारीरीक सम्बंध बनाने तथा उसकी इच्छा के विरूद्ध गर्भपात कराने और 5 वर्ष साथ रहने के बाद अब शादी से इनकार करने के संबंध मे आवेदन दिया है। आवेदन में कहा की पांच वर्ष पहले से मुझसे मोबाईल पर ऋषिकेश लगातार बाच-चित करना शुरू किया । इसी क्रम में मुझे बताया कि मै आर्मी में सिपाही के पद पर जम्मू रौजौरी में काम करता हूँ। मुझसे ऋषिकेश गिरी दोस्ती कर लिया तथा 27 अक्टुबर 2019 को गाजीयाबाद आया तथा मुझे होटल मे बुलाकर नाबालिक अवस्था में ही शारीरीक सम्बंध बनाया । और मुझे गाजीयाबाद शहर मे दो दिन घुमाया और ड्यूटी ज्वाईन करने को कह कर चला गया । इसके बाद मुझे 20 नवम्बर 2019 को मुझसे पुनः मिलने गाजीयाबाद आया और मुझे गिफ्ट में एक मोबाईल फोन दिया । बताया की ऋषिकेश गिरी बोला की यह मोबाइल अपने पास रखना और किसी को कोई बात मत बताना । उसके बाद से ही प्रत्येक रोज बात-चित करता था । ऋषिकेश ने बोला कि अभी तुम नाबालिग हो जब बालिंग होगी तो शादी करेंगे तब जाकर तुम्हे आर्मी का सुख सुविधा मिलेगा । इसी बात की झासा देकर मुझे कभी-कभी घूमने फिरने भी ले जाता था और शारीरिक संबंध बनाता था। मुझे जम्मू काश्मीर, वृन्दावन, ऋषिकेश तथा हरिद्वार जैसे कई स्थानों पर ले गया। मेरे साथ 27 अक्टूबर 2019 से लगभग 5 वर्ष तक शारीरीक सम्बंध बनाता रहा । जब मैं शादी करने की कहने लगी तो टाल-मटोल करने लगा। कुछ समय तक मुझे चंडीगढ़ में प्राईवट डेरा लेकर रखा। मुझे खर्चा के लिए खाता में कुछ पैसा भेजता रहता था। इसी बीच मैं जब गर्भवती हो गई तो मेरे इच्छा के विरूद्ध उसने मेरी जबरन गर्भपात भी करा दिया। युवती ने कहा की फौजी अपने गांव कांध बहुआरा 24 जून 2024 को लेकर आया और शरीरीक सम्बंध बनाया इसके बाद मै शादि के लिए ऋषिकेश गिरी से कहने लगी तो मुझे गाली-गलौज एवं मारपीट करने लगा। तथा अपने गांव से बनारस लेकर मुझे छोड दिया। मैं किसी तरह गाजियाबाद गई। मेरे पिता व सभी परिवार के लोग गाजीयाबाद में रहते है। मैं अपने परिवार से पूर्व में ऋषिकेश के बारे में बताई थी।

संक्षिप्त खबरें

भोजपुर जिला अधिकारी के निर्देश पर आरा शहर में चलाया गया अतिक्रमण अभियान

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भोजपुर जिला अधिकारी के निर्देश पर हटाया गया अतिक्रमण शहर के विभिन्न जगहों पर किए गए अतिक्रमण को नगर निगम के द्वारा हटाया गया सब्जी गोला गांगी सिंडिकेट अवैध अतिक्रमण किए हुए दुकानदारों का भी सामान जप्त किया गया जो रोड सड़क पर ठेला लगाए हुए तो उनका सामान भी नगर निगम के द्वारा जप्त किया गया अतिक्रमण अभियान में नगर निगम कर्मचारी अंचलाधिकारी एवं पुलिस बल के द्वारा सहयोग से यह अतिक्रमण अभियान चलाया गया और नगर आयुक्त ने बताया कि अभियान हमेशा चलेगा जो भी व्यक्ति अतिक्रमण करेंगे उनको उनके ऊपर जुमार्ना भी लगाया जाएगा और सामान को भी जप्त किया जाएगा यह आदेश जिलाधिकारी के निर्देश पर अतिक्रमण अभियान चलाया जा रहा है काफी संख्या में पुलिस बल इस अभियान में थे।

हम पार्टी के जिलाध्यक्ष महेश्वर मिश्रा उर्फ मुन्ना बाबा की अध्यक्षता में किया गया समिक्षा बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

आरा।हिन्दुस्तानी आवाम मोर्चा से० (हम) भोजपुर के जिलाध्यक्ष महेश्वर मिश्रा उर्फ मुन्ना बाबा कि अध्यक्षता में समिक्षा बैठक का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष जनाब शकील हाशमी साहब और प्रदेश उपाध्यक्ष मनौव्वर आलम बैठक में शामिल हुए जिन्होंने मोहम्मद जाबिर उर्फ पप्पू खान को अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ भोजपुर जिलाध्यक्ष मनोनीत किया गया एवं फिरोज अहमद जी को जिला प्रभारी मनोनीत किया गया, जिलाध्यक्ष मुन्ना बाबा ने कहा हम का संगठन पुरे भोजपुर में कार्यरत हैं और आज पप्पू खान जी के हम पार्टी में शामिल होने से पार्टी को और बल मिला है अल्पसंख्यक समुदाय में पार्टी की पकड़ मजबूत होगी और आने वाले चुनाव में एनडीए को और मजबूती मिलेगी। जनाब शकील हाशमी साहब ने कहा आज भोजपुर जिले में मोहम्मद जाबिर उर्फ पप्पू खान जी को अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष मनोनीत करने के बाद अल्पसंख्यक समुदाय को होने वाली असुविधा को ध्यान देना होगा और हम पार्टी ईमानदारी से इसका ध्यान रखेगा। हम अल्पसंख्यक के जिलाध्यक्ष मोहम्मद जाबिर उर्फ पप्पू खान ने कहा कि सभी अल्पसंख्यक समुदायों को एकजुट करने का कार्य करेंगे और आने वाले समय में पार्टी को मजबूत करेंगे।

नेता की दबंगई, हथियार दिखा मारपीट उठा ले जाने की कोशिश का लगा आरोप

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। बिहार के भोजपुर जिले के आरा में एक कथित राजद नेता पर दबंगई का आरोप लगा है। आरोप है कि कथित नेता अशोक सिंह उर्फ रामबाबू सिंह ने अपने कुछ हथियार बंद समर्थकों के साथ रविवार की रात आरा के गौसगंज इलाके में दबंगाई दिखाई। इस पूरी घटना का एक सीसीटीवी फुटेज भी सामने आया है। यहां विजय नगर में रहने वाले सेना के अधिकारी पद से सेवानिवृत्त पवन सिंह उर्फ पिंटू सिंह ने आरोप लगाया है कि रामबाबू सिंह ने हथियार के भय दिखा कर उनके साथ मारपीट की और फिर जबरन उन्हें अपनी गाड़ी में बैठा कर ले जाने का प्रयास किया।

पीड़ित ने इस संबंध में टाउन थाने में शिकायत दर्ज करवा न्याय की गुहार लगाई है। पिंटू सिंह ने अपनी शिकायत में कहा है कि 15-12-2024 को रात करीब सवा दस बजे उनके गांव रामपुर के रहने वाले रामबाबू सिंह अपने बॉडीगार्ड शशि कुमार और रौशन सिंह समेत कुछ अन्य अज्ञात लोगों के साथ उनके घर पहुंचे थे और उनके दरवाजे पर दस्तक दी थी।

पिंटू सिंह का दावा है कि जब उन्होंने घर का दरवाजा खोला तब रामबाबू सिंह के साथ आए उनके समर्थकों ने उन्हें वहीं दबोच लिया और उनके साथ रामबाबू सिंह ने मारपीट शुरू कर दी।

पिंटू सिंह ने आरोप लगाया है कि रात के वक्त रामबाबू सिंह और उनके समर्थक उन्हें जबरन खींच कर अपनी गाड़ी में बैठाने लगे। उनका दावा है कि ऐसा उन्हें जान से मारने की नीयत से किया गया है। हालांकि, अंधेरे का फायदा उठा कर वो किसी तरह वहां से निकल भाग गए। बहरहाल इस मामले में अब पिंटू सिंह के आवेदन पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर लिया है और मामले में आगे की कार्रवाई की जा रही है।

आरा शिवगंज में चित्रांश समिति ने बेसहारा लोगों के बीच बांटे कंबल

प्रातः किरण संवाददाता

आरा (भोजपुर)। चित्रांश समिति के द्वारा बेहद जरूरतमंद और बेसहारा लोगों को सर्दी से बचने हेतु प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी कंबल वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया हैं। शिवगंज दुर्गा मंदिर, बस स्टैंड, मोती टोला, स्टेशन पर असहाय लोगों को कंबल वितरण किया गया। चित्रांश समिति के धर्मनाथ प्रसाद सिन्हा के स्मृति में कंबल वितरण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर चित्रांश समिति के संयोजक डॉ. के एन सिन्हा और तारकेश्वर शरण सिन्हा ने कहा कि चित्रांश समिति हर साल कंबल वितरण का आयोजन करता है क्योंकि, कड़ाके की सर्दी में हमारा दायित्व बनता है कि हम समाज के जरूरतमंदों की सेवा करें ताकि उनको कड़ाके की ठंड में राहत मिल सके, वहीं ,संस्था के सह संयोजक निर्मल कुमार सुधीर ने कहा कि चित्रांश समिति सालों भर कोई ना कोई सार्थक और जनउपयोग कार्य करता है इसके पहले हम लोगों ने चित्रगुप्त पूजा में जरूरतमंद महिलाओं को सिलाई मशीन का वितरण किया गया था। व गर्मी के दिनों मे रिक्शा वालों और ठेला वालों को गर्मी से बचने के लिए तौलिया दिया गया और आज सर्दी से बचने के लिए सैकड़ो लोगों को कंबल वितरण किया जा रहा है, आगे भी सभी अभियान चलता रहेगा। कार्यक्रम के संचालन प्रसिद्ध महिला चिकित्सक डॉक्टर शालिनी सिन्हा और धन्यवाद ज्ञापन डॉक्टर रमेश कुमार सिन्हा ने किया। कंबल वितरण कार्यक्रम में अध्यक्ष डॉ. ब्रजेश कुमार कोशा, अध्यक्ष जमुना प्रसाद, सह सचिव संतोष सहाय, डॉ.राजीव रंजन, डॉ. प्रतीक कुमार, डॉ. बाला जी, डॉ. आर आर कुमार, डॉ. विवेक राज, शंकर सिन्हा, जीतू चंद्रवंशी, महासचिव सत्येंद्र स्नेही, सचिव सूरज कुमार, आशीष कुमार और रणधीर कुमार उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. के एन सिन्हा एवं वीणा देवी समाजसेवी अभिजीत कुमार सहयोग रहा।

स्नातक परीक्षा के दूसरे दिन परीक्षा केंद्रों पर कदाचारमुक्त परीक्षा हुई संपन्न

■ वीर कुंवर सिंह महाविद्यालय व इंदु तपेश्वर महिला कॉलेज परीक्षा केंद्र पर दिखी सख्ती

बिक्रमगंज (रोहतास) संचालित स्नातक परीक्षा के दूसरे दिन भी यूजी 2024-28 स्नातक सेमेस्टर वन की परीक्षा मंगलवार को शहर के चार परीक्षा केंद्रों पर दो पालियों में कदाचारमुक्त संपन्न हुई। ज्ञात हो कि शहर में निर्धारित चार परीक्षा केंद्रों में वीर कुंवर सिंह महाविद्यालय में सबसे अधिक परीक्षार्थियों की संख्या 2944, इंदु तपेश्वर सिंह महिला महाविद्यालय 1343, अंजबित सिंह महाविद्यालय 1104 व पटेल महाविद्यालय में 950 परीक्षार्थियों की सूची शामिल है। वही संचालित परीक्षा के दूसरे दिन भी वीर कुंवर सिंह महाविद्यालय व इंदु तपेश्वर सिंह महिला कॉलेज पर प्रतिनियुक्त प्रवेक्षक सहित केंद्राधीक्षक के नेतृत्व में सघन जांच अभियान चलाया गया है। जिसके तहत परीक्षा केंद्र के अंदर मोबाइल,किताब, गेस पेपर, ब्लूटूथ सहित नकल से जुड़ी अन्य चिट-पुर्जे की गहन जांच सीसीटीवी कैमरे की निगरानी में परीक्षार्थियों से की जा रही है। वही कदाचारमुक्त परीक्षा को लेकर इंदु तपेश्वर सिंह महिला कॉलेज केंद्राधीक्षक डॉ. बिनोद कुमार सिंह एवं प्रवेक्षक अतिबला सिंह सहित वीर कु-वर सिंह महाविद्यालय, धारूपुर केंद्राधीक्षक डॉ. सुरेंद्र कुमार सिंह उर्फ फुलेंदर सिंह एवं प्रवेक्षक डॉ. कन्हैया सिंह पूरे एक्शन मूड में दिख रहें है। दूसरे तरफ देखा जाए तो पटेल महाविद्यालय केंद्राधीक्षक विश्वनाथ सिंह एवं अंजबित सिंह महाविद्यालय केंद्राधीक्षक एस भास्करन भी नकल को लेकर काफी सख्ती करते दिख रहें है। वही संचालित परीक्षा 16 से 21 दिसंबर तक दो पालियों में संचालित होगी। जिसका निर्धारित समय पहली पाली सुबह 9:30 बजे से दोपहर 12:30 बजे जबकि दूसरी पाली दोपहर 1:30 से 4:30 बजे तक है। दूसरी तरफ देखा जाए तो वीर कुंवर सिंह महाविद्यालय परीक्षा केंद्र पर लगभग 20 कमरे व परीक्षा हॉल,ऑटो प्लांट, पर्याप्त आधुनिक शौचालय, वेटिंग हॉल, डीजी जनरेटर, पेयजल नल व कल, महाविद्यालय कैंटीन, प्रसिद्ध मां सरस्वती, पर्याप्त लैब, सेमिनार हॉल, खेलकूद ग्राउंड सहित अनेकों सुविधाओं से सजा वीर कुंवर सिंह महाविद्यालय, धारूपुर शिक्षक प्रतिनिधि डॉ. मनीष रंजन के नेतृत्व में पूरे शाहाबाद प्रक्षेत्र में पठन-पाठन,शिक्षा व परीक्षा केंद्र के रूप में आदर्श महाविद्यालय बन गया है। जो बिहार के लिए भी आइकॉन बनता जा रहा है। जबकि परीक्षा के संबंध भी चार परीक्षा केंद्र के केंद्राधीक्षक ने बताया कि संचालित परीक्षा के अंतिम दिन तक सघन अभियान जारी रहेगी।

जेई ने कराई चार लोगों पर बिजली चोरी की प्राथमिकी

दरियापुर।चोरी से बिजली जलाने के आरोप में जेई ने प्रखंड के विभिन्न गांवों के चार लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है।सभी पर हजारों रुपए का जुमार्ना भी लगाया गया है।बता दें कि बिजली चोरी रोकने के लिए दरियापुर प्रक्षेत्र कनीय विद्युत अभियंता के नेतृत्व में टीम गठित की गई थी।टीम ने कोयला,केवटिया व गरौना में छापेमारी की।जिसमें जिसमें रामविचार सिंह,पूनम देवी,मालती देवी व शिव बच्चन राय चोरी से बिजली जलाते पाए गए।

आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वैलनेस केंद्र बाँक में आयोजित किया गया

प्रातः किरण संवाददाता

अकोढ़ीगोला(रोहतास) । आज दिनांक-17/12/24 को जिला संचारी रोग पदाधिकारी (यक्ष्मा), रोहतास डॉ० राकेश कुमार एवं प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ,अकोढ़ीगोला डॉ० जय कुमार के संयुक्त निर्देश के आलोक में टी०बी० फ्री पंचायत हेतू बैठक अकोढ़ीगोला के अंतर्गत आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वैलनेस केंद्र बाँक में आयोजित किया गया। प्रखंड के वरीय उपचार पर्यवेक्षक अनिश कुमार आजाद ने बताया कि भारत सरकार के द्वारा टी०बी० फ्री पंचायत पहल की शुरूआत की गई है जिसके तहत चिन्हित पंचायत को 100 दिन के विशेष कार्यक्रम के तहत उक्त पंचायत को टी०बी०मुक्त करना है अकोढ़ीगोला प्रखंड के अंतर्गत बाँक, एवं बराडीह पंचायत को टी०बी० मुक्त पंचायत का चयन किया गया है प्रखंड के स्वास्थ्य प्रबंधक मो० मुस्तकीन ने प्रखंड के सभी लोगों से अपील की है कि यदि आप मे टीबी के लक्षण दिखे तो तुरंत सरकारी अस्पताल में निःशुल्क बलगम की जाए करवाए। उक्त बैठक में बाँक के सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी गोलू कुमार, ए०एन०एम० सुमित्रा देवी,प्रमिला देवी, आशा फेसिलटर कुसुम कुमारी, आशा सोनापति, अमिता,रीता, निर्मला, कमला इत्यादि उपस्थित थे।

शौचालय उपयोग के प्रति जागरूकता के लिए नुक्कड़ नाटक का आयोजन

मशरक। शौचालय उपयोग के प्रति लोगों को जागरूक करने को लेकर सोमवार को नगर पंचायत मशरक के तत्वावधान में विभिन्न जगहों पर नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया। इस दौरान नगर पंचायत के अस्पताल चौंक समेत अन्य इलाकों में नुक्कड़ नाटक के माध्यम से शौचालय का उपयोग करने के लाभ, खुले में शौच करने से होने वाली बीमारियों के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। बताया गया कि स्वच्छता उनके जीवन के लिए जरूरी है जिससे उनका परिवार स्वस्थ और निरोग रहता है। इस दौरान लोगों से जिस घर में शौचालय नहीं है, उस घर में बेटी का विवाह नहीं करने की अपील की गई। नाट्य मंडली में चंदेश्वर प्रसाद सिंह,गायक रंजीत राणा,अभय कुमार, कुशेश्वर ठाकुर,रंजीता देवी,ओम प्रकाश सिंह, नागेन्द्र आदि उपस्थित थे।

ऑल इंडिया लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन कटक उड़ीसा में किया जाएगा आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। ऑल इंडिया लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस (आइलाज)का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन 21- 22 दिसंबर कटक उड़ीसा में सफल करो।

अधिवक्ता संगठन का आइलाज ने सिविल कोर्ट आरा में प्रेस कांफ्रेंस आयोजित कर आइलाज के राष्ट्रीय सम्मेलन को सफल करने का आह्वान किय। सम्मेलन के मुख्य अतिथि एक के पटनायक सेवानिवृत जज सुप्रीम कोर्ट और मुख्य वक्ता के चंद्ररु सेवानिवृत जज मद्रास हाई कोर्ट होंगे,

ऑल इंडिया लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस सिविल कोर्ट आरा नया भवन दूसरा तला में एक प्रेस कांफ्रेंस आयोजित किया गया प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए ऑल इंडिया , लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस के राष्ट्रीय परिषद के सदस्य अमित कुमार गुप्ता उर्फ बंटी ने बताया कि ऑल इंडिया लॉड्र्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस का दूसरा राष्ट्रीय सम्मेलन उड़ीसा के कटक में 21 -22 दिसंबर24 को आयोजित है इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि एके पटनायक रिटायर्ड जज सुप्रीम कोर्ट एवं मुख्य वक्ता के चंद्ररू रिटायर जज मद्रास हाई कोर्ट होंगे-- इस सम्मेलन में अधिवक्ता हित सामाजिक न्याय आरक्षण संविधान मानवाधिकार कि दिशा में काम करने वाला अधिवक्ताओं का एक प्रगतिशील संगठन है इस सम्मेलन में देश से 200 प्रतिनिधि शामिल होंगे पूरे देश से 15- 16 राज्यों से प्रतिनिधि इस सम्मेलन में शामिल होंगे बिहार से 15 प्रतिनिधि शामिल होंगे और भोजपुर से दो प्रतिनिधि अमित कुमार गुप्ता उर्फ बंटी और वृंदावन सिंह यादव बतोर प्रतिनिधि शामिल होंगे आइलाज कानूनी पेशावर के प्रगतिशील वर्गों को बीच एक जन संगठन के रूप में स्थापित करना कानूनी पेशवारों के बीच आर्थिक सामाजिक असमानता को दूर करना विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो सामाजिक रूप से उत्प्रेरित समुदाय आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों महिलाओं के प्रथम पीढ़ी के अधिवक्ता से आते हैं अधिवक्ताओं पर हो रहे हमले खतरों के मध्य नजर अधिवक्ता संरक्षण कानून लागू करने तक संघर्ष करते रहना है केंद्र राज्य सरकार और बार काउंसिल से सामाजिक सुरक्षा योजना योजनाओं को सुनिश्चित करना जिसमें नामांकन से 5 वर्ष तक के अधिवक्ताओं के वजीफा सभी अधिवक्ताओं के लिए चिकित्सा बीमा दुर्घटना आकस्मिक मृत्यु हो जाने पर पारिवारिक सदस्य को उचित सहायता मुआवजा राशि 60 वर्ष से अधिक उम्र के , अधिवक्ता को पेंशन योजना शामिल करने के लिए संघर्ष का आह्वान करता है न्यायालय परिसर एसोसिएशन भवन वकालतनामा में अधिवक्ताओं को सम्मान बैठने की जगह आधुनिक समृद्धि लाइब्रेरी स्वच्छ पेयजल पर्याप्त शौचालय इत्यादि व्यवस्था सुनिश्चित करना कानून के छात्रों को मुद्दों को उठाने जिसमें शिक्षा तक पहुंच से छात्रवृत्ति इंटर्नशिप वजीफा सहायता आदि शामिल है इसी तरह कानूनी क्लर्क को कानूनी बिरादरी से जुड़े कर्मचारियों के मुद्दों को भी उठाना इन सब सवालों पर अधिवक्ताओं का संगठन का आइलाज इस सम्मेलन में गंभीरता पूर्वक विचार बहस करेगा इसको पूरा करने के लिए संघर्ष के दिशा में बहस कर संगठन को नए दिशा देने का काम किया जाएगा! प्रेस कॉन्फ्रेंस में शामिल प्रमुख अधिवक्ताओं में ऑल इंडिया , लॉयर्स एसोसिएशन फॉर जस्टिस अक्छअखके राष्ट्रीय परिषद के सदस्य अमित कुमार गुप्ता उर्फ बंटी राज्य संयोजन समिति बिहार के सदस्य कामेश्वर प्रसाद सिंह यादव ज्योति कलश भरत पंडित निर्मल राम शिवजी सिंह यादव राहुल बाबा सिंह ललू कुमार शामिल थे।

डॉ प्रेम कुमार ने किया बोधगया में श्रीलंका के राष्ट्रपति का भव्य स्वागत

प्रातः किरण संवाददाता

बोधगया।बिहार सरकार के सहकारिता सह वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री डॉ. प्रेम कुमार ने आज बोधगया की पवित्र भूमि पर श्रीलंका के राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिशानायके का गर्मजोशी से स्वागत किया है। राष्ट्रपति दिशानायके महाबोधि मंदिर में पूजा-अर्चना करने और बोधगया के ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक महत्व को समझने के लिए आए थे।डॉ. प्रेम कुमार ने बिहार सरकार की ओर से श्रीलंका के राष्ट्रपति को अंगवस्त्र और पुष्पगुच्छ भगवान विष्णु के चरण भेंट कर सम्मानित किया है। इस दौरान उन्होंने बोधगया के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व पर चर्चा की है। डॉ. कुमार ने कहा कि बोधगया पूरी दुनिया में शांति और बौद्ध धर्म का प्रतीक है और श्रीलंका के राष्ट्रपति का यहां आगमन भारत-श्रीलंका के सांस्कृतिक संबंधों को और अधिक सुदृढ़ करेगा। महाबोधि मंदिर में पूजा के दौरान राष्ट्रपति दिशानायके ने भारत और बिहार के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि बोधगया जैसी पवित्र भूमि पर आकर उन्हें अपार शांति और प्रेरणा मिली है, इस मौके पर उपस्थित मंत्री बिहार सरकार डॉक्टर संतोष सुमन रहे हैं।

कर्नाटक के युवाओं ने किया दशरथ मांझी द्वार का भ्रमण

प्रातः किरण संवाददाता

गया।एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आयोजित युवा संगम फेज 5.0 के तहत बिहार राज्य के भ्रमण पर कर्नाटक से आए 50 युवाओं ने दक्षिण बिहार केन्द्रीय विश्वविद्यालय सीयूएसबी के प्राध्यापक समन्वयकों के साथ गया के समीप महत्वपूर्ण स्थलों का दौरा किया गया है।कुलपति प्रो. कामेश्वर नाथ सिंह के संरक्षण में युवा संगम समिति के नॉडल ऑफिसर प्रो. पवन कुमार मिश्रा के नेतृत्व में युवाओं ने ऐतिहासिक स्थलों का भी भ्रमण किया गया है।युवा संगम फेज 5 के तहत कर्नाटक से आए 50 युवाओं ने जब दशरथ मांझी द्वार देखा और उनके कार्य को जाना तो इन युवाओं के दशरथ मांझी की जय के ज्यों से पूरा इलाका गूंज गया है। दशरथ मांझी द्वार का दर्शन करने के बाद इन युवाओं की टीम नालंदा के खंडहरों को भी देखा तथा बिहार की स्वर्णिम प्राचीन विरासत को जान भावविभोर हो गए हैं।आगे युवाओं की टीम ने नव नालंदा महाविहार विश्वविद्यालय का भ्रमण किया तथा वहां शिक्षकों तथा छात्रों के साथ विचार विमर्श में शामिल हुए हैं। आगे युवाओं ने पावापुरी में जल मंदिर का दर्शन किया है। वहां पुजारी ने उन्हें भगवान महावीर के विचार जीने दो और जियो के विचार से अवगत कराया है।विश्वविद्यालय आगमन पर कुलपति प्रो कामेश्वर नाथ सिंह ने कर्नाटक के युवा प्रतिनिधियों का वेलकम किट देकर स्वागत किया गया है। भारत सरकार ने इस कार्यक्रम के जरिए बच्चों को पांच प्रमुख एक्सपोजर देने का लक्ष्य रखा गया है। वो पांच क्षेत्र हैं पर्यटन, परंपरा, प्रगति, परस्पर संपर्क एवं प्रोद्योगिकी कर्नाटक के प्रतिनिधियों का इन्हीं पांच तत्वों पर आधारित भ्रमण है । एक भारत श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम का उद्देश्य राज्य एवं केंद्र शासित प्रदेशों के लोगों के बीच बातचीत को बढ़ाना और आपसी संवाद को बढ़ावा देना है। इन कार्यक्रमों के जरिए भारत सरकार एक दूसरे राज्यों की भाषा सीखने, संस्कृति, परंपराओं और संगीत, पर्यटन और व्यंजन, खेल और सर्वोत्तम प्रथाओं आदि को साझा करने पर जोर दे रही है ताकि सांस्कृतिक संपर्क के जरिए अनेकता में एकता का भाव बलवती हो।

वाहन चेकिंग में कुर्था पुलिस ने तीन दिन में वसूला एक लाख चौतीस हजार

सोमवार की देर रात वाहन चेकिंग में हुई 66 हजार रुपए की वसूली

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) पुलिस अधीक्षक राजेंद्र कुमार भील के निर्देश पर चलाए जा रहे हैं सघन वाहन चेकिंग अभियान के तहत कुर्था थाने की पुलिस ने तीन दिन में एक लाख चौतीस हजार रुपए वाहन चालकों से जुमार्ने की राशि वसूल की उक्त बातों की जानकारी देते हुए कुर्था थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार ने बताया कि लगातार क्षेत्र में घट रही सड़क दुर्घटना बगैर हेलमेट त्रुटि पूर्ण कागजात लिए वाहन चालक सड़कों पर धड़ल्ले से वाहन चलाते नजर आ रहे हैं जिससे आए दिन छोटी बड़ी दुर्घटनाएं हो रही है वही सुरक्षा के दृष्टिकोण से वाहन चालकों को हेलमेट व चार पहिया वाहन चालकों को सीट बेल्ट लगाने की लगातार नसीहत दी जा रही है। बावजूद कई वाहन चालकों पर इसका कोई असर नहीं पड़ता दिख रहा है जिसको लेकर अरवल एसपी राजेंद्र कुमार भील के निर्देश पर थाना क्षेत्र में सघन वाहन चेकिंग अभियान चलाई जा रही है उन्होंने कहा कि 12 दिसंबर को वाहन चेकिंग अभियान के तहत 34000 हजार रुपये जुमार्ना वसूल की गई जबकि 13 तारीख को 6000 रुपये का जुमार्ना की राशि वसूल की गई वहीं 14 दिसंबर को 28000 रुपए जुमार्ना की राशि वसूल की गई जबकि 15 दिसंबर सोमवार की देर रात सघन वाहन चेकिंग अभियान के तहत 66000 जुमार्ना वसूल की गई वहीं थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार ने कहा कि वैसे वाहन चालक जो त्रुटि पूर्ण कागजात और बगैर हेलमेट या फिर बगैर सीट बेल्ट के वाहन चलाते नजर आए तो उन पर जुमार्ना लगाया जाएगा इस मौके पर थानाध्यक्ष के अलाबे पीएसआई स्मिता उपाध्याय,पीएसआई दिलीप कुमार,एसआई तरुण कुमार, समेत कई पुलिसकर्मी शामिल थे।

इफको कम्पनी का डीएपी उर्वरक की रेक लगेगी

प्रातः किरण संवाददाता

गया। गया जिला के किसानों के लिए दिनांक 18 दिसम्बर को इफको कम्पनी का डीएपी उर्वरक की रेक लगेगी।इस रेक गया जिला को लगभग 736.25 मे०टन डी०ए०पी० एवं 232.50 मे०टन ए०पी०एस० की आपूर्ति होगी।गया जिला में किसी भी प्रकार की उर्वरकों की कोई कमी नही है।

उर्वरक की कमी की अफवाहों से किसानों को रहना होगा सावधान।उर्वरक की कालाबाजारी करने वालों सूचना पर तुरंत होगी कार्रवाई गई है।नकली उर्वरक एवं बीज बिक्री के आरोप में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है।उर्वरक विक्रेताओं का नियमित रुप से कराई जा रही है छापामारी एवं लिया जा रहा है उर्वरक का नमूना है।

इफको कम्पनी का 736.25 मे० टन डी०ए०पी० एवं 232.50 मे० टन ए०पी०एस० जिले में आपूर्ति किया जा रहा है। इफको के माध्यम से गया जिला में पैक्स, व्यापार मंडल एवं सहकारी समितियों को उर्वरक की आपूर्ति की जायेगी।

गया जिले सभी प्रखंडों निम्न डी०ए०पी० की आपूर्ति की जायेगी।:- नगर 30.0, मानपुर 30, वजीरगंज 60, खिजरसराय 40, फतेहपुर 30, टनकुप्पा 21, अतरी 20, मोहड़ा 20, नीमचक बथानी 20, बेलागंज 30, टिकारी 50, कोंच 60, गुरारू 40, परैया 30, गुरूआ 40, बोधगया 40, मोहनपुर 30, बाराचट्टी 60, डोभी 25, शेरघाटी 25, आमस 15, बांकेबाजार 15, इमामगंज 20, डुमरिया 20 मे० टन।

श्रीलंकन राष्ट्रपति को महाबोधि मंदिर के बारे में जानकारी दी और डीएम ने मेमटो देकर किया स्वागत

प्रातः किरण संवाददाता

गया। महाबोधि सोसायटी द्वारा श्रीलंका के राष्ट्रपति को मोमेंटो भेंट करते हुए जिलाधिकारी गया डॉ त्यागराजन ने दिए इस मोके पर महाबोधि सोसायटी के अरविंद सिंह उपिस्थति थे।श्रीलंका के राष्ट्रपति को विश्व धरोहर महाबोधि मंदिर के विशेषता को बताते हुए जिला पदाधिकारी गया ने विस्तृत जानकारी दी और मंदिर में पूजा अर्चना किए राष्ट्रपति ने।श्रीलंका के 10वें राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसानायके जी को गया अंतराष्ट्रीय हवाई अड्डा पर स्वागत करते हुए जिला पदाधिकारी गया ड-ॉ० त्यागराजन एसएम, वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती ने उनका ज्ञान की भूमि में स्वागत किया है वही।

तीन फरवरी को आयोजित होगा सामूहिक विवाह

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। सदर प्रखंड सहित ग्राम जम्होर के श्री राम प्रज्ञा मंडल के प्रांगण में दहेज रहित सामूहिक विवाह के आयोजन के निमित एक बैठक की गई। श्री राम प्रज्ञा मंडल के अध्यक्ष नवनीत कुमार की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सदस्यों ने आपसी विचार समन्वय किया एवं वर्ष 2025 के 3 फरवरी को 11 जोड़ों का दहेज रहित निःशुल्क सामूहिक विवाह भव्य एवं दिव्य तरीके से करने का निर्णय लिया गया।कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु एक समिति गठित की गई जिसमें अध्यक्ष नवनीत कुमार, उपाध्यक्ष विक्की अग्रवाल, सचिव अनिल कुमार गुप्ता उर्फ बबलू, उपसचिव प्रवीण अग्रवाल कोषाध्यक्ष दिलेश कुमार सह कोषाध्यक्ष आनंदी कुमार एवं उपेंद्र कुमार गुप्ता को बनाया गया जबकि संयोजक बेनी पासवान सहसंयोजक राम पुकार ओझा अजीत मालाकार बनाए गए। कार्यक्रम समन्वयक संतोष कुमार गुप्ता, मीडिया प्रभारी सुरेश विद्यार्थी, व्यवस्थापक दीपचंद गुप्ता सह व्यवस्थापक अमन गुप्ता, संरक्षक समाजसेवी ऋषि शेखर को बनाया गया। जोर-शोर से तैयारी को मूर्त रूप देने वास्ते सभी सदस्य संकल्पित हुए एवं एक सप्ताह के भीतर तैयारी से संबंधित अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे।चिन्हित जगह पर होर्डिंग लगाई जाएगी औरंगाबाद जिले में दहेज रहित सामूहिक विवाह के प्रचार प्रसार करने एवं आयोजन करने वाली संस्थाओं एवं व्यक्तियों को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही साथ एक साल के भीतर जितने भी व्यक्ति दहेज रहित आदर्श विवाह किए हैं उन्हें भी सम्मानित किया जाएगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिभावान छात्रों का बेहतर प्लेटफार्म दे रहे हैं राजीव सर : डॉ राजेश

कहा: दर्जनों छात्र विभिन्न क्षेत्रों में लहरा रहे हैं सफलता का परचम

प्रातः किरण संवाददाता

किंजर(अरवल)। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का बेहतर प्लेटफार्म दे रहे हैं राजीव सर अब तक उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र के कई प्रतिभावान छात्रों को देश के विभिन्न क्षेत्रों में सफलता का परचम लहराने का अवसर प्रदान किया उक्त बातें मंगलवार को प्रखंड क्षेत्र के किंजर स्थित विद्या संकल्प संस्थान करियर पथ में छात्रों को संबोधित करते हुए जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पैनल अधिवक्ता डॉ राजेश चंद्रा ने कहीं उन्होंने कहा कि जिस तरीके से उक्त कोचिंग में शिक्षकों के आपसी समन्वय है उसे स्पष्ट होता है कि आने वाले दिनों में इन ग्रामीण क्षेत्रों में कई प्रतिभावान छात्र उभर कर देश के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर पायदान हासिल करेंगे वहीं उन्होंने कहा कि अब तक उक्त कोचिंग संस्थान से पढ़कर कई बच्चे सिविल सेवा से लेकर कई क्षेत्रों में अपना बेहतर योगदान दे रहे हैं हालांकि ग्रामीण क्षेत्र के लिए मानो यह कोचिंग संस्थान मील का पत्थर साबित हो रहा है जिसमें आए दिन प्रतिभावान बच्चों की तादाद बढ़ती जा रही है हालांकि उक्त विद्यालय के साथ शिक्षकों का जोड़ी ने ग्रामीण क्षेत्रों में मानो धमाल मचा कर रख दिया है ग्रामीण क्षेत्र में कोचिंग संस्थान के नाम आते ही विद्या संकल्प संस्थान करियर पथ की तस्वीर लोगों के चेहरे पर नजर आने लगती है हालांकि इस संबंध में उन्होंने कहा कि उक्त संस्थान के निदेशक राजीव रंजन सर का बेहतर योगदान रहा है इसके साथ ही उक्त कोचिंग संस्थान फिजिक्स के शिक्षक इंजीनियर एसके वर्मा, के यादव, हिस्ट्री के शिक्षक उपेंद्र कुमार, केमिस्ट्री के शिक्षक विकास कुमार, हिंदी व संस्कृति के शिक्षिका चित्रा ओझा, जोग्रफी के शिक्षक आलोक कुमार, व मैथ रीजनिंग के शिक्षक व संस्था के निदेशक राजीव सर के बेहतर जोड़ी ने बच्चों में मानो कूट-कूट कर प्रतिभा भरने का कार्य कर रहे हैं जिसका प्रतिफल है कि प्रतिवर्ष उक्त कोचिंग संस्थान से कई बच्चे सफलता का परचम लहरा कर विभिन्न संस्थाओं में अपना योगदान दे रहे हैं

शिशु प्रतियोगिता नृत्य निकेतन विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का किया गया आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद में शिशु प्रतियोगिता नृत्य वेतन विद्यालय में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।जिसका उद्घाटन सोनी कुमारी निदेशक, अमरजीत कुमार ,प्राचार्य एवम् वरीय शिक्षक,गोविंद प्रसाद तथा विशेष आमंत्रित अतिथि जयप्रकाश कुमार के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया।तत्पश्चात आधुनिक डिजिटल युग में छात्र/छात्राओं में बौद्धिक एवम् मानसिक क्षमतावर्धन तथा उनके अंदर प्रतियोगितात्मक गुणों के विकास के लिए स्मार्ट भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका विषय पर निबंध प्रतियोगिता प्रारंभ की गई।छात्र/छात्राओं को वरीय और कनीय समूह में भाग लेने का अवसर दिया गया।वरीय समूह में अभिनव कुमार वर्ग दशम,प्रथम , प्रियांशु कुमार वर्ग नवम द्वितीय तथा अंशु कुमारी वर्ग नवम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया जबकि कनीय समूह में निशान कुमार वर्ग अष्टम प्रथम, प्रीतम कुमार वर्ग सप्तम द्वितीय तथा निर्मला कुमारी वर्ग अष्टम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

सभी विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र एवम् पुरस्कार से विद्यालय की निदेशक सोनी कुमारी द्वारा सम्मानित किया गया।इनके साथ ही साथ दोनों समूहों में पांच पांच प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

विशेष अतिथि जयप्रकाश कुमार जी ने विद्यालय परिवार को संबोधित करते हुए कहा कि समय समय पर इस तरह के आयोजन करने से छात्र/ छात्राओं के अंदर नवाचार के साथ प्रतियोगितात्मक गुणों का विकाश होता है। प्राचार्य अमरजीत कुमार ने सभी छात्रों को ऐसे आयोजनों में बढ़ चढ़ कर बेझिझक भाग लेने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि इस तरह की प्रतियोगिताओं से बच्चों की मानसिक और बौद्धिक विकास तो होता ही है साथ ही साथ उनकी कल्पनाशक्ति और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का भी विकास होता है।

वरीय शिक्षक गोविंद प्रसाद ने कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।कार्यक्रम का संचालन वरीय शिक्षक नीरज कुमार सिंह ने इन पंक्तियों मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है। पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है।

भक्ति कालीन कवि रहीम के 68वीं जयंती साहित्य संवाद का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में भक्ति काल के अन्यतम कवि रहीम दास की 468 वीं जयंती समारोह के अवसर पर साहित्य संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्र,महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर साहित्य संवाद करते हुए संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि भक्ति काल में जब हिंदी साहित्य झंझावात के दौर से गुजर रही थी तो ऐसे समय में महाकवि रहीम दास का अवतरण हुआ और उन्होंने सनातनी परंपरा में हिंदी साहित्य को भक्ति पूर्ण उपदेशात्मक रचनाओं के माध्यम से स्थापित करने का कार्य किया था।रहीम दास एक कवि के साथ-साथ कुशल प्रशासक,आश्रयदाता, दानवीर, कूटनीतिज्ञ बहुभाषाविद्,कला मर्मज्ञ व्यक्ति थे।भारतीय सनातन पद्धति के आराधक थे।सभी संप्रदायों के प्रति उनकी अगाध निष्ठा थी। कलम और तलवार में एकरूपता साधने वाले मानव प्रेम के सूत्रधार थे। एक मुसलमान होते हुए भी हिंदू दर्शन के अंतर्मन में बैठकर जो मार्मिक तथ्य अंकित किए हैं वह उनकी विशाल हृदयशीलता को प्रदर्शित करती है।उनका कहना था कि हिंदू सनातन जीवनशैली ही भारतीय जीवन दर्शन का आधार है।उनके काव्यों में महाभारत, गीता,रामायण,पुराण के कथानकों के आधार पर अपनी रचनाओं को धार दिया।

सड़क दुर्घटना में हुए शिक्षक के निधन पर विद्यालय में की गई शोक सभा का आयोजन

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) स्थानीय प्रखंड क्षेत्र के उत्कृष्ट राजकीय कृत मध्य विद्यालय के सहायक शिक्षक मिस्टर आलम के बीते दिनों सड़क दुर्घटना में हुई मौत को लेकर उक्त विद्यालय में शोक सभा का आयोजन किया गया शोक सभा को संबोधित करते हुए विद्यालय के सहायक शिक्षक संतोष कुमार ने कहा कि मिस्टर आलम एक शिक्षक ही नहीं बल्कि बच्चों के लिए एक मार्गदर्शक और अभिभावक भी थे। उनकी आकस्मिक मृत्यु से न केवल उनके परिवार,बल्कि पूरे विद्यालय समुदाय शोकाकुल हैं उनका स्वभाव सरल सौम्य और बच्चों के प्रति बेहद प्रेमपूर्ण था।उनकी कक्षाओं में शिक्षा मात्र एक पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं थी, बल्कि उन्होंने बच्चों को जीवन के मूल्यों, अनुशासन और प्रेम का पाठ पढ़ाया। उनकी मुस्कान और सकारात्मक ऊर्जा बच्चों के चेहरों पर सदा चमक लाती थी। वे हर विद्यार्थी को विशेष मानते और उनकी क्षमता को पहचानकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देते थे। मिस्टर आलम का जाना उन सभी के लिए एक अपूरणीय क्षति है जिनकी जिंदगी उन्होंने अपने स्नेह और मार्गदर्शन से संवारने का प्रयास किया। उनके प्यार और योगदान की यादें हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगी। उनकी शिक्षाएं और उनके व्यक्तित्व की छाप हर विद्यार्थी के जीवन में एक प्रेरणा बनी रहेगी। वहीं उक्त विद्यालय में शिक्षकों ने उनके निधन पर दो मिनट के मौन रखकर मृत शिक्षक को श्रद्धांजलि अर्पित की इस मौके पर विद्यालय के कई शिक्षक शिक्षिका छात्र मौजूद थे।

मृतक शिक्षक के शोकाकुल परिजनों से मिले जिप अध्यक्ष प्रतिनिधि

प्रातः किरण संवाददाता

करपी। प्रखंड अंतर्गत शहर तेलपा ग्राम निवासी मिस्टर आलम जो की कुर्था प्रखंड के बेनीपुर विद्यालय में शिक्षक के पद पर स्थापित थे बीते सोमवार को मोटरसाइकिल दुर्घटना में उनके आकस्मिक मौत हो जाने से पूरे क्षेत्र में गम का माहौल बना हुआ है ।बहुत ही साधारण परिवार में जन्मे मृदुभाषी प्रवृत्ति के इंसान थे मिस्टर आलम के आकस्मिक मौत पर गम में डूबे हुए परिवार से मिलने चर्चित समाजसेवी सह अरवल जिला परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि सुधीर शर्मा शहर तेलपा बाजार पहुंचे। मृत शिक्षक के परिजनों से मिलकर उन्होंने हर संभव सरकारी स्तर से मिलने वाली सुविधा को दिलाने का वादा किया। शिक्षक मिस्टर आलम एक बहुत ही सामान्य परिवार से निकालकर शिक्षा जगत में अपनी पहचान बनाई थी ।उनके पिताजी टेंट हाउस चलाकर अपने परिवार के अन्य सदस्यों का भरण पोषण किया करते थे ।

पिता की मृत्यु कुछ दिन पूर्व आकस्मिक हो जाने के चलते पूरे परिवार की जिम्मेवारी मिस्टर आलम ने अपने अन्य भाइयों के साथ मिलकर उठाया था। मिस्टर आलम की मौत का समाचार सुनने के बाद पूरे क्षेत्र से सैकड़ो लोग मिस्टर आलम के घर पहुंच कर शोक में डूबे हुए परिवारों को ढांढ़स बंधाने का काम किया। उनके शोक में बीते दिन शहर तेलपा बाजार को बंद रखा गया। पीड़ित परिवार से मिलने के बाद जिला अध्यक्ष प्रतिनिधि ने बताया कि सड़क दुर्घटना में वृद्धि होने से समाज को बहुत कीमती जान गवाना पड़ रहा है जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती है।

उन्होंने मिस्टर आलम के बारे में बताया कि वे एक कुशल शिक्षक थे ।पूर्व में हुए उनसे मुलाकात हमेशा यादगार रहेगा। सुधीर शर्मा ने कहा कि गरीबी से निकलकर कैसे व्यक्ति आगे बढ़ता है उनसे एक सबक हमेशा मिला करता था। उपस्थित परिजनों को भी सुधीर शर्मा ने इस संकट की घड़ी में धैर्य रखने की सलाह दी।

नेहरू युवा केंद्र की प्रखंड स्तरीय खेलकूद कार्यक्रम का हुआ समापन

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) नेहरू युवा केंद्र युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के तत्वाधान में हिंदुस्तान शिक्षण संस्थान कुर्था के द्वारा दो दिवसीय प्रखंड स्तरीय खेलकूद कार्यक्रम का समापन समारोह स्थान शहिद जगदेव स्मारक महाविद्यालय के खेल परिसर में संपन्न किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा अधिकारी सागर महेश्वरी के द्वारा किया गया। प्रखंडस्तरीय खेलकूद कार्यक्रम के अंतर्गत फुटबॉल में विजेता शहीद भगत सिंह युवा क्लब मुबारकपुर एवं उपविजेता नेहरू युवा क्लब अलावलपुर एवं कबड्डी महिला, शहीद भगत सिंह युवा क्लब मुबारकपुर, विजेता रही एवं उपविजेता महिला मंडल कुर्था रहा, प्रतियोगिता रिले दौड़ ,पुरुष में नेता चंद्रवंशी नेहरू युवा क्लब बारा प्रथम स्थान रहा, एवं द्वितीय स्थान रितेश कुमार हिंदुस्तान शिक्षण संस्थान कुर्था एवं तीसरा स्थान प्रवीण कुमार,तथा बैडमिंटन पुरुष में राहुल कुमार पांडे प्रथम स्थान रहा एवं दूसरा स्थान हरिओम कुमार एवं तीसरा स्थान अविनाश कुमार, बैडमिंटन महिला में प्रथम स्थान दिव्या भारती दूसरा स्थान रुपाली कुमारी तीसरा स्थान भारती कुमारी , रिले दौड़ महिला में प्रथम स्थान अंजली कुमारी दूसरा स्थान प्रियांशु कुमारी तीसरा स्थान पल्लवी कुमारी का का रहा,कबड्डी महिला में विजेता शहीद भगत सिंह युवा क्लब मुबारकपुर एवं उप विजेता महिला मंडल कुर्था, रहा,प्रतियोगिता का आयोजन, हिंदुस्तान शिक्षण संस्थान के निदेशक वीरेंद्र प्रसाद चंद्रवंशी द्वारा किया गया जिसके बाद सभी विजेताओं का क्रमशः,फुटबॉल विजेताओं को किट बैग एवं बड़ा कप मेडल शील्ड देकर सम्मानित किया गया एवं उप विजेता को भी कप मेडल दिया गया ।

रिले दौड़ में पुरुष एवं महिलाओं को भी मेडल प्रमाण पत्र का देकर सम्मानित किया गया, कबड्डी में भी विजेता एवं उप विजेता खिलाड़ियों को कप मेडल शील्ड एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया इस कार्यक्रम का उद्घाटन प्रखंड विकास पदाधिकारी ब थानाध्यक्ष सुरेंद्र कुमार , जगदेव स्मारक कॉलेज के प्राचार्य शत्रुघ्न प्रसाद, लोजपा नेत्री इंदु,कश्यप, भाजपा मंडल अध्यक्ष सुधीर शर्मा एवं भाजपा महामंत्री रामाशीष दास, सोनू कुमार को सभी मुख्य अतिथियों द्वारा सभी विजेता एवं उपविजेता खिलाड़ियों को कप मेडल शील्ड एवं किट बैग एवं प्रमाण पत्र देकर सभी खिलाड़ियों को सम्मानित किया गया,शत्रुघ्न प्रसाद ने खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए बताया कि खेलकूद से समाज में आपसी भाईचारा कायम होती है, महिला नेत्री इंदु कश्यप ने सभी खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए कहा कि आप लोग सभी युवा हैं आप लोग आपसी भाईचारा कायम रखकर खेल को ऊंचे स्तर पर ले जाए खेलकूद से समाज में हम एक भाईचारा कायम रखते हैं एवं शरीर को स्वस्थ रखते हैं, सरकार द्वारा खिलाड़ियों को जॉब भी दे रही है खिलाड़ियों को अपने ब्लॉक स्तर से जिला स्तर पर जिला स्तर से स्टेट लेबर पर जाने की अपीलखिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए टिप्स दिया गया वही मंच का संचालन हिंदुस्तान शिक्षण संस्थान के निदेशक वीरेंद्र प्रसाद चंद्रवंशी द्वारा किया गया।

अलग-अलग घटनाओं में मारपीट, एक दर्जन घायल , चार सदर अस्पताल छपरा रेफर

मशरक ।मशरक के अलग-अलग गांवों में मारपीट की घटनाओं में एक दर्जन लोगों को घायल हालत में इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया जहां से चिकित्सक डॉ एस के विधार्थी ने प्राथमिक उपचार कर बेहतर इलाज के लिए 4 को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया। पहले में अरना बारोपुर गांव में सुमन देवी उम्र 55 वर्ष पति दारोगा प्रसाद,अनिल कुमार उम्र 34 वर्ष पिता दारोगा प्रसाद मारपीट में घायल हो गए। दूसरे घटना में मशरक नगर पंचायत के दक्षिण टोला गांव में मवेशी के द्वारा पुआल बर्बाद करने के विवाद में मवेशी को मारने का विरोध करने पर स्व देवलाल राय का दो पुत्र 50 वर्षीय पुत्र हरेंद्र राय व 35 वर्षीय सुनील राय, श्यामलाल राय का 35 वर्षीय पुत्र गणेश राय, दिनेश राय का 22 वर्षीय पुत्र धनंजय राय, शम्भू राय का 22 वर्षीय पुत्र विकास कुमार, हरेंद्र राय की 45 वर्षीय पत्नी किरण देवी घायल हो गए। तीसरे मामले में अरना गांव में बदरी राय की 45 वर्षीय पुत्र फुलन देवी घायल हो गयी। वहीं घटना की सूचना मिलने पर पहुंची थाना पुलिस ने जांच पड़ताल की और कानूनी कार्रवाई कर रही है।

इनर व्हील क्लब ऑफ गया सिटी ने महिला हिंसा पर रोक लगाने के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम किया

गया । इनर व्हील क्लब ऑफ गया सिटी ने, महिला हिंसा पर रोक लगाने के लिए एक जागरूकता कार्यक्रम, चित्रगुप्त मध्य विद्यालय में आयोजित किया,जिसका उद्देश्य आजकल आए दिन होने वाले महिलाओं और बच्चियों के खिलाफ हिंसा, उत्पीड़न और अत्याचार को समाप्त करना है यह कार्यक्रम ऑरेंज द वर्ल्ड अभियान है , ऑरेंज रंग सूर्योदय और नई शुरूआत का प्रतीक माना गया है जो इनर व्हील का आशा पूर्ण और एक सकारात्मक प्रयास है इस अवसर पर स्कूल की प्राचार्या ने काफी सहयोग किया और क्लब की सदस्य स्मिता निलेश ने बच्चों को इसकी जानकारी दी,और बताया कि कैसे सावधानी बरतें, विरोध करें और ऐसी स्थिति आने पर आप क्या करेंगे।बच्चों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए स्त्री हिंसा से संबंधित विभिन्न प्रकार के पोस्टर्स स्कूल में लगाए गए हैं । इस कार्यक्रम के समय आपीपी निशा सेठ, पीपी प्रभा , स्मिता निलेश और क्लब की संपादिका प्रीति कुमारी उपस्थित थीं।

सांसद ने संसद में उठाई चतरा रेलमार्ग की मांग

गया।सांसद कालीचरण सिंह द्वारा संसद में चतरा लोकसभा क्षेत्र में रेल सेवाओं के विस्तार की मांग उठाना क्षेत्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आजादी के इतने वर्षों बाद भी चतरा जैसे बड़े क्षेत्रफल वाले क्षेत्र का रेल नेटवर्क से वंचित रहना वास्तव में विचारणीय विषय है।

लोकसभा में नियम-377 के तहत माननीय सांसद ने रेल मंत्री को यह आग्रह किया कि चतरा लोकसभा क्षेत्र में विभिन्न मार्गों पर रेल लाइन का विस्तार आवश्यक है। उन्होंने यह तर्क रखा कि चतरा संसदीय क्षेत्र के नागरिकों का व्यापार, यात्रा, एवं अन्य कार्यों के लिए देश के विभिन्न हिस्सों में आवागमन होता रहता है।ऐसे में रेल सेवाओं का विस्तार नागरिकों के लिए सहूलियत के साथ-साथ विकास का द्वार भी खोलेगा।

सांसद ने यह भी बताया कि चतरा को रेल नेटवर्क से जोड़े जाने पर बिहार दिल्ली और मुंबई के लिए एक वैकल्पिक मार्ग उपलब्ध होगा, जो सैन्य दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण होगा।

विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्य ने विद्यालय का लिया जायजा

प्रातः किरण संवाददात

आलमनगर (मधेपुरा)। टेन प्लस टू विज्या स्मारक प्रोजेक्ट कन्या उच्च विद्यालय आलमनगर में विद्यालय के पुराने भवन जो लगभग दो हजार स्क्वायर फीट में बना हुआ था उससे डेढ़ दर्जन खिड़की एवं आधे दर्जन लकड़ी के दरवाजे तोड़कर एच एम द्वारा अपने घर ले जाने का मामला को लेकर विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्य विनोद अग्रवाल, अंजली भारती विद्यालय पहुंचकर विद्यालय का जायजा लिया और इसे सरासर लुट बताया। विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्य विनोद अग्रवाल एवं अंजली भारती ने बताया कि विद्यालय के प्रधानाध्यापक के द्वारा मनमाने रूप से भवन में लगे दरवाजा और खिड़की उखाड़ने के साथ-साथ मकान की ईट को भी घर ले जाने की मंशा पर नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा के विद्यालय के शिक्षा समिति के द्वारा भवन की नीलामी को लेकर कोई बैठक नहीं किया गया और प्रधानाध्यापक के द्वारा कमेटी को इस बात की जानकारी देने की कोई जरूरत नहीं समझा गया यह साफ दशार्ता है कि विद्यालय के प्रधानाध्यापक मनमाने रूप से लूट के कार्य कर रहे हैं। विद्यालय में निरीक्षण के दौरान विद्यालय शिक्षा समिति के सदस्य विनोद अग्रवाल ने प्रधानाध्यापक प्रवीण राम को इस तरह के कार्य को लेकर जमकर कोसा एवं इसको लेकर कार्रवाई की बात कही। वहीं स्थानीय ग्रामीणों ने नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा कि पुराने भवन के साथ-साथ 2010 के दशक में बने तत्कालीन सांसद दिनेश चंद्र यादव के कोश से लगभग दस लाख की राशि से बने भवन को भी क्षतिग्रस्त बताते हुए उसके भी दरवाजे और खिड़की उखाड़ने के साथ-साथ मकान में लगे ईट को भी उखाड़ने का काम किया जा रहा है जो सरासर गलत है इसका उच्च स्तरीय जांच होना चाहिए कि जिस मकान में 10 से 20 हजार लगाने के बाद वह और सुंदर हो सकता था यहां तक कि उसे मकान में हाल के दिनों में कार्यालय चल रहे थे साथ ही अभी भी उसे मकान में बिजली के मीटर के साथ-साथ कई यंत्र लगे हुए हैं इसके बावजूद भी आचानक कौन सी आपदा का शिकार भवन हो गया कि इसके दरवाजा खिड़की उखाड़ कर इसे हटाने की नोवत आ गया।

विशेष कैम्प का किया गया आयोजन वरित निष्पादन को ले सजग दिखे कर्मी

प्रातः किरण संवाददाता

चौसा (मधेपुरा)। चौसा प्रखंड अंतर्गत रसलपुर धुरिया में मुख्यमंत्री भ्रमण को लेकर ग्राम पंचायत रसलपुर धुरिया के पंचायत सरकार भवन में विशेष कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप के माध्यम से प्रखंड स्तर से आवास, अंचल, बाल विकास परियोजना, खाद एवं उपभोक्ता, कृषि,स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा विभाग, जीविका, श्रम विभाग, पंचायती राज विभाग, पशुपालन विभाग, विद्युत विभाग, मनरेगा विभाग, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान सम्मिलित करते हुए लोगो के शिकायत सुना गया एवं उसका त्वरित निष्पादन के लिए कार्य करते हुए कर्मी दिखे। इस मौके पर अनुमंडल पदाधिकारी एस जेड हसन का दौरा हुआ जिसमें संबंधित स्टॉल का भी निरीक्षण किया गया। उपस्थित सभी कर्मियों को सख्त हिदायत देते हुए कहा कि जिस भी विभाग का कार्य लंबित है।

त्वरित रूप से कार्य का संपादन करना सुनिश्चित किया जाए वहीं जिला कृषि पदाधिकारी, जिला उद्यान पदाधिकारी ,अनुमंडल कृषि पदाधिकारी, जिला कार्यक्रम पदाधिकारी अपने-अपने स्टोर का निरीक्षण किया और कर्मियों को दिशा निर्देश भी दिए।मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी ब्रजेश कुमार दीपक, अंचल अधिकारी शशिकांत यादव, प्रखंड पंचायती राज पदाधिकारी वीरेंद्र कुमार दास, मनरेगा कार्यक्रम प्राधिकारी बिंदु कुमारी, प्रखंड पशुपालन चिकित्सा पदाधिकारी गुलाबचंद, राजस्व कर्मचारी मनीष कुमार, किसान सलाहकार कुंज बिहारी शास्त्री, आईटी सहायक प्रशांत कुमार, पंचायती राज कार्यपालक सहायक वैभव विकास, स्वच्छता प्रखंड सामान्य सीताराम ठाकुर, स्वच्छता पर्यवेक्षक सद्दाम हुसैन, शमशाद अंसारी, संजय कुमार, नफीस आलम, आपूर्ति कार्यपालक सहायक अमर कुमार सहित अन्य कर्मी मौजूद थे।

जागरूकता रैली निकाल कर दिया नशा मुक्ति का संदेश

प्रातः किरण संवाददाता

पुरैनी (मधेपुरा)। पुरैनी मुख्यालय में मंगलवार के दोपहर नशा मुक्ति अभियान के तहत पुरैनी पुलिस ने स्कूली बच्चों के साथ मिलकर थाना परिसर से जागरूकता रैली निकाली। मुख्यालय के विभिन्न जगह भ्रमण कर लोगों को जागरूक किया। जिसका नेतृत्व एस आई राकेश कुमार सिंह ने किया।

रैली पुरैनी थाना से अग्रसेन धर्मशाला होते हुए, मारवाड़ी शिव मंदिर, ग्रामीण बैंक, सेंट्रल बैंक, राय ब्रदर्स दुर्गा मंदिर होते हुए समाज कल्याण चौक सहित मुख्यालय के विभिन्न चौक-चौराहों, गलियों व मुहल्लों का भ्रमण कर लोगों से सभी तरह के नशीले पदार्थो के सेवन से परहेज करने की अपील की गई। जागरूकता रैली के दौरान समाज में जागरूकता लाओ, नशे को दूर भगाओ, मिलजुल कर सब आगे आओ, नशे को दूर भगाओ, जो होगा नशे का आदी, उसके जीवन में होगा बर्बादी, जन-जन का यही संदेश, नशा मुक्त हो हमारा देश, नशा मुक्ति दिवस सब मिलकर मनाएं आदि नारे लगाकर लोगों को जागरूक किया गया।

रैली के दौरान सिपाही रूमा कुमारी, पुष्पा कुमारी, दिलीप सिंह, अजय कुमार, नाथन पासवान, अभिमन्नु कुमार, राजकुमार, कुमोद कुमार सहित विद्यालय के सभी शिक्षक शामिल रहे।

मधेपुरा पहुंचे तेजस्वी यादव ने पत्रकारों से किया प्रेस वार्ता

■ माय बहन सम्मान योजना पर ललन सिंह के ब्यान पर सीएम और पीएम से मांगा हिसाब

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा। कार्यकर्ता संवाद यात्रा के दौरान मधेपुरा पहुंचे तेजस्वी यादव का कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत। वहीं इस दौरान मंगलवार को सर्किट हाउस में नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के द्वारा प्रेस वार्ता आयोजित की गई जहाँ राजद की ओर से माय बहन सम्मान योजना को घोषणा पर जदयू सांसद ललन सिंह के बयान पर पलटवार करते हुए उन्होंने उनसे मुख्यमंत्री के 15 दिन के बिहार यात्रा के खर्च का हिसाब मांगा है। उन्होंने कहा कि इससे पहले ललन सिंह को जवाब देना चाहिए कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के 15 दिनों के लिए बिहार यात्रा पर दो अरब 25 करोड़ 78 लख रुपए का जो खर्च है वह कहां से आ रहा है इसका हिसाब उन्हें जनता को देना चाहिए, वहीं इस दौरान उन्होंने वन नेशन वन इलेक्शन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भाजपा के लोग आरएसएस का कानून देश पर लागू करना चाहते हैं चुनाव आयोग समय पर चुनाव नहीं करा सकते हैं। एक साथ कई राज्यों में चुनाव नहीं हो सकता है एक राज्य में भी एक चरण में चुनाव नहीं संपन्न हो सका है तो पूरे देश में एक साथ चुनाव कैसे संपन्न हो सकता है। अगर खर्च बचाने की बात है तो सबसे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा पिछले 11 सालों में अब तक विज्ञापन पर कितना खर्च किया गया है इसका हिसाब उन्हें जनता को देना चाहिए। आगे उन्होंने कहा कि आज कह रहे हैं वन नेशन वन इलेक्शन फिर कल कहेंगे वन नेशन, वन पार्टी कहेंगे और वन नेशन वन लीडर होगा। इन सबका कोई मतलब नही है बस ये लोग आरएसएस का एजेंडा सेट करना चाहते हैं।

आरोग्य क्लिनिक द्वारा मुफ्त चिकित्सा शिविर का आयोजन

गया कॉच ऊपर बाजार स्थित वृद्धाश्रम में आरोग्य क्लिनिक आशीर्वाद नर्सिंग होम, गया द्वारा मुफ्त चिकित्सा शिविर आयोजित किया गया है। जिसमें काफी संख्या में गरिब परिवारों और गरिब लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और लोगों के चेहरे पर खुशी देखी गई है।इस मौके पर राधाकांत शर्मा, निशिकांत , श्रवण शाण्डिल्य, अजय प्रताप सिंह चेयरमैन एन आई ए एवं वृद्धाश्रम सम्मिलित हुए है।

इनर व्हील क्लब ने ट्रैफिक पुलिस बूथ का निर्माण कराया

गया इनर व्हील क्लब का गया के बैनर तले ट्रैफिक पुलिस बूथ का निर्माण करवाया गया है जो दिघी तलाव के नजदीक स्थित है इसका ओपनिंग एसोसिएशन प्रेसिडेंट सुनीता जैन तथा मंडल प्रेसिडेंट अलोकनंद बक्शी के हाथों प्रेसिडेंट तृप्ति गुप्ता के अध्यक्षता में करवाया गया है । ट्रैफिक पुलिस जो हमारे लिए खड़ी रहती हैं और हमारे यातायात का ध्यान रखती हैं। उनकी भी सुविधा को देखतेरी हुए इनर व्हील क्लब की तरफ से यह भूत का निर्माण करवाया गया है ।जिसमें शामिल वाइस प्रेसिडेंट स्मिता पोद्दार सेक्रेटरी आभा सिंह ,पी आभा सिंह आदि थे।

बराही आनंदपुरा पंचायत के पैक्स अध्यक्ष व प्रबंधक पर राशि गबन करने के आरोप में हुई प्राथमिकी दर्ज

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। प्रखण्ड क्षेत्र के बराही आनंदपुरा पैक्स अध्यक्ष चंदन कुमार एवं प्रबंधक धर्मेंद्र कुमार के विरुद्ध विभागीय निर्देश के आलोक में उदाकिशुनगंज थाना में प्राथमिकी दर्ज किया गया है। प्राथमिकी प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी दीपेश कुमार मोदक द्वारा दर्ज कराया गया है। दर्ज मामले में बताया गया है कि धान खरीद खरीफ विपणन वर्ष खरीद की गयी धान के समतुल्य नहीं 2022-23 में दिनांक 15 फरवरी 2023 के अंतिम प्रतिवेदन के अनुसार बराही आनंदपुरा पैक्स द्वारा कुल 9354.14 क्विंटल धान की खरीद किसानों से की गयी थी, जिसके समतुल्य सीएमआर 6301.80 क्विंटल के विरुद्ध मात्र 3775.80 क्विंटल सीएमआर ही बिहार राज्य खाद्य निगम की आपूर्ति की गयी। अवशेष 2526.00 क्विंटल सीएमआर की आपूर्ति नहीं की गयी है। अवशेष सीएमआर के समतुल्य राशि जमा करने हेतु जिला सहकारिता पदाधिकारी मधेपुरा व प्रखंड सहकारिता पदाधिकारी द्वारा बार-बार मौखिक एवं पत्र के माध्यम से निर्देशित किया गया था। लेकिन अभी तक संबंधित समिति द्वारा राशि जमा नहीं की गयी है। बताया गया कि शाखा प्रबंधक बिहार राज्य सहकारी बैंक लिमिटेड शाखा मधेपुरा के प्रतिवेदन के अनुसार धान अधिप्राप्ति वर्ष 2022-23 में बराही आनंदपुरा पैक्स अध्यक्ष एवं प्रबंधक द्वारा कुल एक करोड़ 37 लाख बत्तीस हजार दो सौ पचास रुपये कैश क्रेडिट ऋण लिया गया था। जिसमें से पैक्स द्वारा मात्र 55 लाख 27 हजार 4 सौ 41 रूपया 35 पैसे मात्र ही बैंक को वापस किया गया है। इस तरह से बराही आनंदपुरा पैक्स अध्यक्ष के द्वारा 82 लाख 4 हजार 8 सौ 8 रूपया 65 पैसा गबन कर लिया गया है।

सहरसा में संचालित केन्द्र एवं राज्य योजनाओं की प्रगति पर निदेशक के कक्ष में समीक्षात्मक बैठक आहूत की गई

पटना। इनिदेशक मत्स्य, विहार, पटना की अध्यक्षता में जिला सहरसा के राज्य एवं केन्द्र प्रायोजित योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक निदेशक, महोदय के कक्ष में आहूत की गई। सर्वप्रथम ठंइङ्गल्लं' ऋश्ॅ१ी२ ॐ५ी'ङ्गस्त्रील्ल३ ढङ्ग१३' (ठऋछ) पर निबंधन संबंधित समीक्षा की गई। निदेशक मत्स्य ने प्रत्येक प्रखंडवार लक्ष्य निर्धारित कर निबंधन करने का निदेश दिया गया। वित्तीय वर्ष 2023-24 एवं 2024-25 के राज्य एवं केन्द्र प्रायोजित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनाओं की समीक्षा की गई। निदेशक मत्स्य, के द्वारा प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत विभिन्न अवयवों की समीक्षा निदेशक मत्स्य, के द्वारा की गई। उक्त जिला को प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजनान्तर्गत जिन अवयव में लक्ष्य के अनुरूप आवेदन अप्राप्त है। निदेशक महोदय के द्वारा निदेश दिया गया कि उक्त जिला अपने क्षेत्रीय प्रभारी (मत्स्य प्रसार पदाधिकारी एवं मत्स्य विकास पदाधिकारी) को शत-प्रतिशत आवेदन सृजित करने का निदेश दिया गया। साथ हीं टक्र ढङ्ग१३' पर लाभुकों की विवरणी उपलब्धि के अनुरूप सभी मत्स्य प्रसार पदाधिकारी एवं मत्स्य विकास पदाधिकारी को अद्यतन करने का निदेश दिया गया । उक्त बैठक में नोडल पदाधिकारी, मत्स्य प्रसार पदाधिकारी, मत्स्य विकास पदाधिकारी एवं जिला मत्स्य पदाधिकारी, सहरसा एवं मत्स्य प्रसार पदाधिकारी, मत्स्य निदेशालय, परियोजना समन्वयक, पी०एम०यू० उपस्थित थे।

सीनेट की बैठक आज, कुलाधिपति को गार्ड ऑफ आनर देंगे एनसीसी कैडेट

■ सीनेट की 25वीं वार्षिक बैठक की तैयारी हुई पूरी

मधेपुरा बीएन मंडल विश्वविद्यालय में 18 दिसंबर यानी आज आयोजित होने वाली सीनेट बैठक की तैयारी पूरी कर ली गई है। इस कड़ी में बैठक में भाग लेने पहुंच रहे राज्यपाल सह कुलाधिपति को गार्ड आफ आनर देने की जिम्मेदारी मेजर गौतम के नेतृत्व में एनसीसी कैडेट को सौंपी गई है। इससे पहले विश्वविद्यालय सीनेट का 25 वां वार्षिक बैठक राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर की अध्यक्षता में विवि प्रशासनिक परिसर अवस्थित प्रेक्षा गृह में आयोजित होगी। बीएनएमयू के इतिहास में यह दूसरा अवसर है जब राज्यपाल सह कुलाधिपति राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर सीनेट के बैठक की अध्यक्षता करने आ रहे हैं। इससे पहले गत वर्ष 18 मार्च 2023 को पहली बार बीएनएमयू आए थे 24 वां सीनेट की अध्यक्षता करने। सीनेट में 10 अरब से अधिक के बजट पर चर्चा के बाद अनुमोदन होना है। बैठक में विश्वविद्यालय बजट का अनुमोदन के अलावे भी कई महत्वपूर्ण निर्णय होंगे।

पूर्व मध्य रेल के एक अधिकारी एवं चार कर्मचारियों सहित भारतीय रेल के 101 रेलकर्मी का अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार के लिए चयन

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर। भारतीय रेल द्वारा 101 कर्मचारियों और अधिकारियों को अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है। चयनित कर्मचारी एवं अधिकारियों को माननीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव 21 दिसम्बर, 2024 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में सम्मानित करेंगे। चयनित अधिकारियों और कर्मचारियों को नवाचार, आय में वृद्धि हेतु उल्लेखनीय प्रयास, उत्पादकता में वृद्धि के लिए समर्पण और आयात पर निर्भरता को कम करने एवं स्वदेशी तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने, रेल परिचालन, सुरक्षा और संरक्षा तथा रेलवे की परिसंपत्तियों के बेहतर संरक्षण हेतु अद्वितीय प्रयास करने के लिए अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार देने का फैसला लिया गया है।

अति विशिष्ट रेल सेवा पुरस्कार हेतु इस वर्ष पूर्व मध्य रेल के 01 अधिकारी एवं 04 कर्मचारियों का चयन किया गया है । धनबाद मंडल के वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री अन्जय तिवारी, सोनपुर मंडल में प्वाइंट्समैन पद पर कार्यरत श्री श्याम सुंदर प्रसाद, डीडीयू में मुख्य वाणिज्य पर्यवेक्षक के पद पर कार्यरत श्री संजीव कुमार, धनबाद मंडल में सीनियर सेक्शन इंजीनियर (ड्राइंग एंड डिजाइन) पद पर कार्यरत श्री कुंज बिहार लाल तथा धनबाद मंडल में लेखा सहायक श्री प्रवीण रंजन को इस प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित होने का गौरव हासिल हुआ है ।

धनबाद मंडल के वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्री अन्जय तिवारी की देश के प्रमुख ऊर्जा संयत्रों को उनकी मांग के अनुरूप कोयला की लोडिंग के लिए रेकों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने, माल लदान में धनबाद मंडल की उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल करने, परिसंपत्तियों के बेहतर रख-रखाव के साथ-साथ ट्रेनों के सुचारू परिचालन में महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

सोनपुर मंडल में प्वाइंट्समैन पद पर कार्यरत श्री श्याम सुंदर प्रसाद अपनी जिम्मेवारियों के प्रति हमेशा सजग रहते हुए संरक्षित रेल परिचालन में अपना अहम योगदान दे रहे हैं । इसी तरह डीडीयू में मुख्य वाणिज्य पर्यवेक्षक पद पर कार्यरत श्री संजीव कुमार ने रेल राजस्व में वृद्धि हेतु वित्त वर्ष 2023-24 में ज्यादा से ज्यादा व्यापारियों को रेल के माध्यम से माल की बुकिंग हेतु प्रोत्साहित किया । धनबाद मंडल में सीनियर सेक्शन इंजीनियर (ड्राइंग एंड डिजाइन) पद पर कार्य करते हुए श्री कुंज बिहार लाल का महुरिया-दुधीनगर, अनपरा रोड-कृष्णशिला आदि रेलखंडों पर छोटे/बड़े रेल पुलों, एलएचएस आदि के ड्राइंग/डिजाइन में अहम भूमिका रही है । धनबाद मंडल में लेखा सहायक पद पर कार्यरत श्री प्रवीण रंजन को भी माननीय रेल मंत्री द्वारा उनके उल्लेखनीय कार्य प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया जाएगा ।

सुशील सिंह जिला कांग्रेस महासचिव मनोनीत

दरभंगा।सुशील कुमार सिंह को दरभंगा जिला कांग्रेस कमिटी के महासचिव पद पर नियुक्त किया गया है। वे शहर के लक्ष्मीसागर छपकी मोहल्ला निवासी रामाधार सिंह के पुत्र हैं। उनकी नियुक्ति से कांग्रेस संगठन को और मजबूती मिलने की उम्मीद है वे कई वर्षों से पार्टी के सक्रिय पदाधिकारी रहें है। श्री सिंह को इस पद पर नियुक्त किए जाने पर आम जनता और कांग्रेस कार्यकताओं ने उन्हें बधाई दी है । उनके नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी को नए दिशा और उत्साह मिल सकता है। लोग उम्मीद करते हैं कि वे अपनी जिम्मेदारी पूरी निष्ठा और समर्पण से निभाएंगे।बधाई देने बालों में अमरेंद्र कुमार अमर, विजय कुमार महासेठ, गुडू यादव, संजय कुमार महतो, डॉ महेश कुमार पासवान, जयराम ठाकुर, राजकुमार यादव, नसीम अहम्मद दारा शामिल है।

कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी द्वारा 14 वीं वर्षगांठ समारोह का किया गया आयोजन

गया ।मंगलवार को कन्या विवाह & विकास सोसाइटी स्तिथ वैरागी रोड निकट हरिजन मंदिर प्रधान कार्यालय गया में संस्था के 14 वीं वर्ष गाँठ का आयोजन किया गया है इस कार्यक्रम का शुभारम्भ संस्था सचिव विकाश कुमार माली, संस्था के संरक्षक उमर नूरानी,सहायक सचिव राजेश कुमार सिन्हा, हासिबुल्लाह अंसा-री, प्रभारी कोषाध्यक्ष संजय सिंह,महिला पदाधिकारी महजबिन साहिबा ने संयुक्त रूप से केक काटकर 14 वीं वर्षगाँठ का जश्न मनाया है ।इस मौके पर प्रेस वार्ता के दौरान संस्था सचिव विकाश कुमार माली ने कहा संस्था विगत 14 वर्ष पूर्व आज कि दिन ही विधायक प्रेम कुमार के द्वारा संस्था का उद्घाटन किया था और उसी दिन से ही संस्था अपने उद्देशेंयों बाल विवाह, दहेज प्रथा, भ्रूण हत्या पर रोक लगाने एवं सामूहिक विवाह के प्रोत्साहन के कार्य को जमीनी स्तर पर अपने संस्था पदाधिकारिओं के साथ मिलकर जमीनी स्तर पर जागरूकता का कार्य करने लगे साथ ही सभी जागरूक हुए 0 वर्ष से 15 वर्ष के कन्याओं के अभिभावक को सदस्य बनाकर निबंधित कन्याओं को बाल विवाह मुक्त एवं दहेज रहित विवाह करने पर विवाह स्थल पर उपहार स्वरुप घरेलु उपयोग में आने वाली वस्तुएँ देकर स सम्मान विदा करने का कार्य किया गया तथा प्रत्येक वर्ष सभी निर्धन बालिका कन्याओं को सामूहिक विवाह का आयोजन कर बाल विवाह बहिष्कार एवं दहेज रहित विवाह के मुहीम को आगे बढ़ाना है।

अग्रसरित करना ह करते हुए शिक्षा कि दिशा अग्रसरित कर इस वर्ष नवंबर माह मे गया जिले के डुमरिया प्रखंड स्तिथ मैगरा मे निः शुल्क विद्यालय का शुभारम्भ मैगरा थाना प्रभारी, जनप्रतिनिधिगण, समाजसेवीगण के समक्ष किया गया और आजतक लगभग 13000 कन्याओं को उनके विवाह स्थल पर एवं हजारों कन्याओं का सामूहिक विवाह कराकर इस मुहीम को आगे बढ़ाया है तथा इस पुनीत कार्य को सफल करने में बिहार,झारखण्ड राज्य के सभी अभिभावकों का भी आभार प्रकट किया और कहा कि सभी अभिभावकों ने संस्था पर बिश्वास कर उनके मुहीम को आगे बढ़ाने में जो सहायता प्रदान कि है वह सराहनीय है और संस्था उनके किए हुए विश्वासो को सदा निभाते हुए हमेशा उनके सहायता के लिए तत्पर रहेगी।और बिहार,झारखण्ड के सभी संस्था पदाधिकारिओं का भी आभार प्रकट किया कि उनके मुहीम को आगे बढ़ाने में जो आपलोगों के द्वारा कार्य किया गया उसे संस्था हमेशा याद रखेगी और उन्होंने यह भी बताया कि संस्था आगामी वर्ष फरवरी माह 2025 में गढ़वा जिले के दानरो नदी छठ घाट में 251 कन्याओं के सामूहिक विवाह का आयोजन करेगीं जिससे कि समाज में बाल विवाह, दहेज प्रथा जैसी कुरीतिओं को समाप्त किया जा सके और साथ ही कन्याओं के वर को रोजगार हेतु सभी वर को टोटो टेम्पो देने का भी कार्य करेंगी तथा संस्था सचिव ने प्रेस वार्ता के दौरान यह भी बताया कि संस्था को बदनाम करने हेतु असामाजिक तत्व के लोग संस्था के गरिमा को ठेस पहुंचाने मे लगे हुए है इसलिए सभी कन्याओं के अविभावक भ्रमित न हों संस्था हमेशा उनके साथ है और संस्था ने जो भी संकल्प को लिया है उसे निष्ठा पूर्वक निभाएगीं इस मौके पर संस्था के पदाधिकारी राजा कुमार, मुस्तकीम कौसर,निशा कुमारी, सादिया हलीमा, हिमांशु, मोहित, मो. शमीम, झून्नू विश्वकर्मा, मंटू प्रसाद राजकुमारी सिन्हा, मालती देवी आदि थे।

विकास माली के फैक्ट्री में हुई चोरी, गढ़वा के सामूहिक विवाह का बन रहा था सामान

गया ।बिहार झारखंड में हजारों असहाय-निर्धन कन्याओं का सामूहिक विवाह करा चुके विकास माली के अलमीरा बनने वाले एक फैक्ट्री में चोरी हो गई। यह फैक्ट्री बिहार के गया जिला के मुफस्सिल थाना के बुधगेरे बाजार में स्थित है। इन दिनों यहां झारखंड के गढ़वा जिला में होने वाले 251 कन्याओं के विवाह के लिए अलमीरा निर्माण का कार्य जोर शोर से चल था। माली ने बताया कि उनका केभीएभी वीकास इंटरप्राइजेज नाम से अलमीरा आदि बनाने की फैक्ट्री है। उनके फैक्ट्ररी में चोरों ने घुसकर लाखों रुपयों के विभिन्न सामानों जैसे पेंटिंग करने की मशीन, पंखा, वायर, कुर्सी आदि सामानों की चोरी कर लिया है। करीब 10 दिन पहले भी चोरी हुई थी जिसकी शिकायत थाने में की गई थी लेकिन पुलिस द्वारा उचित ध्यान नहीं दिया गया इसी बीच फिर चोरी हो गई है। माली ने बताया कि उनकी संस्था कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी की ओर से मार्च महीने में झारखंड के गढ़वा जिला में 251 कन्याओं का सामूहिक विवाह के लिए अलमीरा आदि बनाने काम इस फैक्ट्री में चल रहा है। यहां माल गढ़वा भेजा जा रहा है। ऐसे में चोरी होने से उनको काफी नुकसान हो गया है। उन्होंने बताया कि इस फैक्ट्री को शुरू करने के लिए उन्होंने पीएमजीईपी योजना के तहत 25 लाख का सरकारी लोन भी ले रखा है।

39 छात्रों का प्रतिनिधिमंडल आईआईटी जोधपुर के लिए रवाना

शिबपुर। सरकार के महत्वाकांक्षी सांस्कृतिक और शैक्षिक प्रयास एक भारत श्रेष्ठ भारत युवा संगम कार्यक्रम के पांचवें चरण के तहत पश्चिम बंगाल के विभिन्न उच्च शिक्षा संस्थानों के 39 छात्रों का एक प्रतिनिधिमंडल आईआईटी जोधपुर के लिए रवाना हुआ है। शिक्षाविद् और पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित काजी मासूम अख्तर की मौजूदगी में आईआईईएसटी शिबपुर में एक ओरिएंटेशन सत्र और फ्लैग-ऑफ कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

पश्चिम बंगाल का नोडल संस्थान आईआईईएसटी शिबपुर है, जबकि राजस्थान का नोडल संस्थान आईआईटी जोधपुर है। प्रतिनिधि सदस्य 14 से 18 दिसंबर तक आईआईटी जोधपुर में रहेंगे। इस यात्रा के जरिए दोनों राज्यों के बीच समृद्ध संस्कृति, परंपरा और विचारों के आदान-प्रदान को बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। पर्यटन, परंपरा, प्रगति, प्रौद्योगिकी और आपसी संपर्क को और बढ़ावा देना भी एजेंडे का हिस्सा है। युवा संगम पांच व्यापक क्षेत्रों पर्यटन, परम्परा, प्रगति, परस्पर संपर्क और प्रौद्योगिकी में बहुआयामी प्रदर्शन को बढ़ावा देगा। युवा संगम के पिछले चरणों में भारी उत्साह देखा गया था तथा अंतिम चरण में पंजीकरण 44,000 को पार कर गया था।

अयोध्या कैंट स्टेशन के यार्ड रिमॉडलिंग के कारण ट्रेनों के परिचालन में बदलाव

प्रातः किरण संवाददाता

हाजीपुर। उत्तर रेलवे के लखनऊ मंडल के अयोध्या कैंट स्टेशन के यार्ड रिमॉडलिंग के कारण ट्रेनों के परिचालन में बदलाव किया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार है -

रद्द होने वाली ट्रेनें

1.गाड़ी सं. 04652 अमृतसर-जयनगर हमसफर स्पेशल - 18.12.24 से 05.01.2025 तक

2.गाड़ी सं. 04651 जयनगर-अमृतसर हमसफर स्पेशल - 20.12.24 से 07.01.2025 तक

3.गाड़ी सं. 09465 अहमदाबाद-दरभंगा क्लोन स्पेशल - 20.12.24 से 03.01.2025 तक

4.गाड़ी सं. 09466 दरभंगा-अहमदाबाद क्लोन स्पेशल - 23.12.24 से 06.01.2025 तक

मार्ग परिवर्तन एवं टर्मिनल चेंज - दिनांक 18.12.2024 से 07.01.2025 तक पटना से खुलने वाली गाड़ी सं. 22345 पटना-गोमतीनगर वंदे भारत एक्सप्रेस परिवर्तित मार्ग वाराणसी-सुलतानपुर-लखनऊ के रास्ते चलायी जाएगी तथा यह ट्रेन अपनी यात्रा समाप्ति गोमतीनगर के बजाए 14.30 बजे लखनऊ जं. में करेगी तथा वापसी में गाड़ी सं. 22346 गोमतीनगर-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस गोमतीनगर के बजाए लखनऊ जं. से 15.20 बजे प्रस्थान कर लखनऊ-सुलतानपुर-वाराणसी के रास्ते पटना आएगी ।

परिवर्तित मार्ग से चलायी जाने वाली ट्रेनें

वाराणसी-मॉ बेल्हादेवी धाम प्रतागढ़ जं-रायबरेली-लखनऊ के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें -

1. 18.12.24 से 06.01.25 तक हावड़ा/योगनगरी ऋषिकेश से खुलने वाली गाड़ी सं. 13009/13010 हावड़ा-योगनगरी ऋषिकेश-हावड़ा दून एक्सप्रेस

2. 18.12.24 से 06.01.25 तक धनबाद/फिरोजपुर से खुलने वाली गाड़ी सं. 13307/13308 धनबाद-फिरोजपुर-धनबाद गंगा सतलूज एक्सप्रेस

3. 20.12.24, 27.12.24 एवं 03.01.25 को अमृतसर से खुलने वाली गाड़ी सं. 15934 अमृतसर-न्यू तिनसुकिया एक्सप्रेस

जफराबाद-सुलतानपुर-लखनऊ के रास्ते चलायी जाने वाली ट्रेनें -

1. 19.12.24 से 05.01.25 तक कोटा से खुलने वाली गाड़ी सं. 13238 कोटा-पटना एक्सप्रेस

2. 21.12.24 से 07.01.25 तक पटना जं. से खुलने वाली गाड़ी सं. 13237 पटना-कोटा एक्सप्रेस

3. 18.12.24 से 05.01.25 तक बालुरघाट से खुलने वाली गाड़ी सं. 15743 बालुरघाट-भठिण्डा फरक्का एक्सप्रेस।

एक देश एक चुनाव से होगा बड़ा राजकोषीय बचत: प्रो. विवेक

भागलपुर। एक साथ चुनाव होने से देश को बड़ा राजकोषीय बचत होगा जिससे देश बार-बार चुनावी मोड में ना जाकर जनकल्याण और विकास को ज्यादा से ज्यादा दिशा दे सकेगा। यह बातें मुख्य वक्ता के रूप में प्रो विवेक हिंद सहायक प्राध्यापक राजनीति विज्ञान विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय भागलपुर ने कही, साथ ही उन्होंने इस दिशा में आ रही संवैधानिक कठिनाइयों का भी विस्तार से उल्लेख किया साथ ही इसके विपक्ष में आने वाले तर्क पर भी अपना विचार प्रस्तुत किया। मौका था स्नातकोत्तर गाँधी विचार विभाग, तिलकामाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, में एक राष्ट्र एक चुनाव विषयक संगोष्ठी का। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभाग के अध्यक्ष डॉ अमित रंजन सिंह ने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव वर्तमान समय का डिमांड है। डॉ. उमेश प्रसाद नीरज ने एक राष्ट्र एक चुनाव की खूबियां और खामियों को विस्तार से रखा ।

सशस्त्र सीमा बल ने भारत नेपाल से लगे सीमा की सुरक्षा को लेकर किया चर्चा

पटना।सशस्त्र सीमा बल के रहते कोई घुसपैठ नहीं कर सकता यह दावा रश्ड बिहार रेज के क्ऋनैय्यर हसनैन खान ने किया है इन्होंने बताया है की हाल ही में भारत नेपाल से लगे सीमा की सुरक्षा को लेकर ये नेपाल गए थे और वहाँ नेपाल पुलिस के साथ वहाँ की सुरक्षा एजेंसियों के साथ अहम बैठक की इस बैठक के दौरान भारत नेपाल की सीमा की सुरक्षा और पुख्ता करने को लेकर निर्णय हुआ है ठल खान ने यह भी कहा कि इंडो नेपाल से सटा सबसे बड़ा पोरस बॉर्डर है और इसकी सुरक्षा का जिम्मा रश्ड के पास हैं और इस काम में हम लोग दिन रात लगे है हम लोगो को जो भी इनपुट मिलती है उसका सत्यापन कर हम लोग कार्रवाई करते है इस क्रम में हम लोगो ने इस वर्ष अब तक इंडो नेपाल बॉर्डर से 1555 लोगों को अलग अलग मामलो में गिरफ्तार किया है वही हथियारो की खेप से लेकर 253 किलो मादक पदार्थ जप्त की है वही सबसे बड़ी कामयाबी को हम लोगो को मिली है वो है मानव तस्करी से जुड़ी हमारी टिम ने इंडो नेपाल बॉर्डर से 191 लोगों को मानव तस्कर के चंगुल से रिहा करवाया है और 99 मानव तस्कर को गिरफ्तार किया है ।

नॉर्वे शतरंज में कार्लसन से होगा विश्व चैंपियन गुकेश का सामना

इस तारीख से खेला जाएगा टूर्नामेंट

स्टावेंजर (नॉर्वे), एजेंसी। 18 साल के गुकेश ने इस साल टाटा स्टील मास्टर्स जीता, शतरंज ओलंपियाड में भारत को स्वर्ण दिलाया, कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में चमके और पिछले सप्ताह सिंगापुर में विश्व चैम्पियनशिप खिताब जीता।

सबसे युवा विश्व चैम्पियन गुकेश डोम्माराजू का सामना अगले साल नॉर्वे शतरंज में दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन से होगा। टूर्नामेंट यहां 26 मई से छह जून तक खेला जाएगा। 18 साल के गुकेश ने इस साल टाटा स्टील मास्टर्स जीता, शतरंज ओलंपियाड में भारत को स्वर्ण दिलाया, कैंडिडेट्स टूर्नामेंट में चमके और पिछले सप्ताह सिंगापुर में विश्व चैम्पियनशिप खिताब जीता। गुकेश ने एक विज्ञप्ति में कहा, मैं दुनिया के सबसे मजबूत खिलाड़ियों में से एक के खिलाफ फिर नॉर्वे में भिड़ने को लेकर रोमांचित हूं। आर्मागेडोंस मजेदार होगा। गुकेश पिछले साल यहां तीसरे स्थान पर रहे थे लेकिन इस बार विश्व चैम्पियन के रूप में कार्लसन को उनके घर में चुनौती देंगे। नॉर्वे शतरंज के संस्थापक और टूर्नामेंट निदेशक जेल मेडलैंड ने कहा, यह मुकाबला शानदार होगा। देखना दिलचस्प होगा कि विश्व चैम्पियन का सामना नंबर एक खिलाड़ी से कैसा रहता है। पूरी दुनिया की इस पर नजरें होंगी। नॉर्वे शतरंज में दुनिया के शीर्ष पुरूष और महिला खिलाड़ी छह खिलाड़ियों के दोहरे राउंड रॉबिन प्रारूप में खेलेंगे।

रोहन जेटली फिर बने अध्यक्ष, बीसीसीआई के पूर्व अध्यक्ष की बेटी बनी उपाध्यक्ष

नईदिल्ली, एजेंसी। रोहन जेटली को दिल्ली जिला क्रिकेट संघ का एक और कार्यकाल के लिए अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। उन्होंने डीडीसीए के विभिन्न पदों के लिए चुनावों में भारत के पूर्व खिलाड़ी कीर्ति आजाद को हराया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री दिवंगत अरुण जेटली के बेटे 35 वर्षीय रोहन जेटली ने शीर्ष पद की दौड़ में आजाद के 777 वोटों की तुलना में 1,577 वोट हासिल किए। कुल 2,413 वोट डाले गए और जीतने के लिए 1,207 वोटों की आवश्यकता थी।

2020 में रोहन निर्विरोध डीडीसीए अध्यक्ष चुने गए और एक साल बाद उन्होंने एडवोकेट विकास सिंह को हराया। बीसीसीआई के पूर्व कार्यवाहक अध्यक्ष सीके खन्ना की बेटी शिखा कुमार (1,246 वोट) ने राकेश कुमार बंसल (536) और सुधीर कुमार अग्रवाल (498) को हराकर उपाध्यक्ष पद हासिल किया।

डीडीसीए चुनाव : अन्य पदों के परिणाम

डीडीसीए के अन्य पदों के लिए चुनाव परिणाम की बात करें तो अशोक शर्मा (893) सचिव बने, जबकि हरीश सिंगला (1328) कोषाध्यक्ष पद के लिए चुने गए और अमित ग्रोवर (1189) ने संयुक्त सचिव पद पर जीत हासिल की। ??अन्य लोगों में आनंद वर्मा (985), मंजीत सिंह (1050), नवदीप एम (1034), श्याम शर्मा (1165), तुषार सहगल (926), विकास कत्याल (1054), विक्रम कोहली (939) डायरेक्टर बने।

पीएम मोदी ने एशिया कप जीतने पर दी भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम को बधाई

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम को एशिया कप जीतने पर बधाई दी है। उन्होंने अपने एक्स अकाउंट पर एक पोस्ट भी शेयर किया है।

पीएम मोदी ने एक्स पर एक पोस्ट शेयर करते हुए लिखा, भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम को एशिया कप खिताब जीतने पर बधाई। टीम ने बहुत धैर्य और दृढ़ संकल्प दिखाया। यह सफलता हॉकी के प्रति बढ़ते जुनून को भी दर्शाती है, खासकर युवाओं में। मैं टीम को उनके भविष्य के प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देता हूं। इसके अलावा केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मनसुख मंडाविया ने भी टीम को बधाई दी। उन्होंने एक्स पर फोटो शेयर करते हुए लिखा, चक दे इंडिया! भारतीय हॉकी टीम ने रविवार को महिला जूनियर एशिया कप के फाइनल में चीन को पेनल्टी शूटआउट में 3-2 से हराकर लगातार दूसरी बार खिताब अपने नाम किया। तय समय में 1-1 से बराबरी के बाद खिताबी मुकाबला शूटआउट तक गया, जिसमें गत चैंपियन टीम विजयी रही।

इस अवसर पर हॉकी इंडिया (एचआई) ने टीम को नकद पुरस्कार देने की घोषणा की। एचआई ने एक्स पर लिखा, टीम इंडिया ने जूनियर महिला एशिया कप 2024 के फाइनल में चीन पर रोमांचक पेनल्टी शूटआउट जीतकर शानदार जीत हासिल की। उनके शानदार प्रदर्शन के लिए हॉकी इंडिया ने प्रत्येक खिलाड़ी को 2 लाख रुपये और सहयोगी स्टाफ को 1 लाख रुपये का नकद पुरस्कार देने की घोषणा की है। पेनल्टी शूटआउट में साक्षी राणा, इशिका और सुनीता टोप्पो ने भारत के लिए गोल किए। गोलकीपर निधि ने लिहांग वांग, जिंगी ली और डंडन जूओ के खिलाफ तीन शानदार बचाव किए और सुनिश्चित किया कि भारत अपना खिताब बचाए।

जोश हेजलवुड के लगी चोट, भारत के खिलाफ टेस्ट श्रृंखला से हो सकते हैं बाहर

ब्रिसबेन, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड को तीसरे टेस्ट के दौरान दाहिनी पिंडली में लगी चोट के कारण भारत के खिलाफ बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी के बाकी मैचों से बाहर रहना पड़ सकता है। चोट के कारण हेजलवुड ब्रिसबेन टेस्ट में अब आगे नहीं खेल सकेंगे। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने एक बयान में कहा, 'जोश हेजलवुड की दाहिनी पिंडली में खिंचाव आ गया है जिससे वह भारत के खिलाफ ब्रिसबेन टेस्ट में आगे नहीं खेल पाएंगे। उन्हें टेस्ट श्रृंखला के बाकी मैचों से बाहर रहना पड़ सकता है। 33 साल के हेजलवुड चौथे दिन एक ही ओवर डाल पाए थे जब उन्हें मैदान से जाना पड़ा। उन्होंने मैदान से बाहर जाने से पहले कप्तान पैट कमिंस, स्टीव स्मिथ और फिजियो निक जोनेस से बात की। हेजलवुड बाजू में खिंचाव के कारण एडीलेड में दूसरे टेस्ट से बाहर रहे थे। हेजलवुड की जगह तेज गेंदबाज स्कॉट बोलैंड ने ली जो एडीलेड टेस्ट में आस्ट्रेलियाई एकादश में थे।

इस स्टार भारतीय क्रिकेटर से मिलना चाहती हैं डब्ल्यूपीएल की सबसे महंगी प्लेयर सिमरन शेख

नई दिल्ली, एजेंसी। अनकैप्ड बल्लेबाज सिमरन शेख ने भारत के दिग्गज विराट कोहली से मिलने की इच्छा जताई और भारतीय राष्ट्रीय टीम का प्रतिनिधित्व करने के अपने लक्ष्य को रेखांकित किया। हाल ही में महिला प्रीमियर लीग 2025 की नीलामी में गुजरात जायंट्स द्वारा 1.9 करोड़ रुपए में खरीदे जाने के बाद सिमरन सुर्खियों में आईं।

युवा बल्लेबाज ने खुलासा किया कि विराट उनके पसंदीदा खिलाड़ी हैं और उनका लक्ष्य भारत का प्रतिनिधित्व करना है, जिसके लिए वह हर संभव प्रयास कर रही हैं। सिमरन ने कहा, मेरा सपना एक बार विराट कोहली से मिलना है। मुझे बस भारत की जर्सी चाहिए और इसलिए मैं ये सब प्रयास कर रही हूं। अनकैप्ड बल्लेबाज के लिए दिल्ली कैपिटल्स और गुजरात स्थित फ्रैंचाइजी बोली लगाने की

होड़ में शामिल हुई। उनका बेस प्राइस 5 लाख रुपए था और जायंट्स ने उन्हें 1.9 करोड़ रुपए की भारी भरकम राशि में खरीदा। टूर्नामेंट के पहले सीजन में सिमरन ने गुजरात स्थित फ्रैंचाइजी के लिए खेला और 9 मैचों में हिस्सा लिया।

सिमरन को लगता है कि फ्रैंचाइजी में योगदान देना उनकी जिम्मेदारी है और उन्होंने कहा, मैं जीजी (गुजरात जायंट्स) परिवार का शुक्रिया अदा करती हूं। इतनी बड़ी रकम मिलने के बाद अब उनके लिए प्रदर्शन करना मेरी जिम्मेदारी है। मैं अपने माता-पिता का शुक्रिया अदा करती हूं क्योंकि मेरे समुदाय में ऐसी चीजों के लिए ज़्यादा समर्थन नहीं है, लेकिन उन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया।

नीलामी पर बोलते हुए मुख्य कोच माइकल क्लिंगर ने कहा कि टीम की प्राथमिकता ऐसे खिलाड़ियों को हासिल करना है जो प्लेइंग 11 में प्रभाव डाल सकें और सिमरन टीम के लिए एक मूल्यवान खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा, सिमरन शेख टीम के लिए एक और मूल्यवान खिलाड़ी हैं। वह बहुत ताकत लेकर आती हैं और उनका स्ट्राइक रेट भी शानदार है। महिला क्रिकेट में ऐसी मुट्ठी भर खिलाड़ी ही हैं जो ऐसा कर सकती हैं। मुझे लगता है कि वह टीम में जगह बनाने के लिए भारतीय बल्लेबाजों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा करेंगी, जो कि एक टीम में आप चाहते हैं।

डब्ल्यूपीएल 2025 के लिए गुजरात जायंट्स की टीम: - एशले गार्डनर, बेथ मूनी, दयालन हेमलता, हरलीन देयोल, लौरा वोल्वार्ड्ट, शबनम शकील, तनुजा कंवर, फोएबे लिचफील्ड, मेघना सिंह, काशवी गौतम, प्रिया मिश्रा, मन्नत कश्यप, भारती फुलमाली, सयाली सतघरे, डींड्रा डॉटिन, सिमरन शेख, डेनिएल गिब्सन और प्रकाशिका नाइक।

इंडिया-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट:

8 टेस्ट मैच में फेल... शुभमन गिल पर आकाश चोपड़ा ने खड़ा किया बड़ा सवाल

नईदिल्ली, एजेंसी। चोट के चलते पर्थ टेस्ट से बाहर रहे शुभमन गिल एडिलेड में अच्छी लय में दिखे थे. लेकिन बड़े स्कोर बनाने में नाकाम रहे. पहली पारी में 31 और दूसरी पारी में उनके बल्ले से 28 रन निकले थे. उनका यह फ्लॉप प्रदर्शन गाबा में भी जारी रहा. गाबा में पहली पारी में गिल महज 1 रन बना पाए. इसके बाद भारत के पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने गिल की पोल खोल दी. उन्होंने बताया कि गिल एशिया के बाहर 16 पारियों में 40 से ज्यादा का स्कोर नहीं बना पाए हैं. गिल की नाकामी के बाद आकाश चोपड़ा ने उनकी फॉर्म को लेकर चिंता जाहिर की है. उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, 'हमें शुभमन गिल के बारे में बात करनी होगी. एशिया के बाहर ऐसी 16 पारियां हो गई हैं जहां आप 40 का आंकड़ा पार नहीं कर पाए हैं. आप कई बार सिंगल डिजिट या शुरुआती डबल डिजिट पर आउट हुए हैं. अगर आप टेस्ट में नंबर 3 पर बल्लेबाजी करते हैं और आपका स्कोर ऐसा है तो यह एक समस्या है, और इस पर भी चर्चा की जाएगी'.

8 टेस्ट में 36 है हाई स्कोर - शुभमन गिल को टीम इंडिया के फ्यूचर स्टार के रूप में देखा जाता है और उन्होंने खुद को साबित भी किया है. हालांकि शुभमन गिल पिछले आठ टेस्ट मैचों में एशिया के बाहर शानदार प्रदर्शन नहीं कर पाए हैं. उन्होंने एशिया के बाहर 2020-21 के ऑस्ट्रेलियाई दौरे के बाद आठ टेस्ट खेले हैं. इस दौरान उन्होंने 16 पारियों में सिर्फ 200 रन बनाए. शतक तो दूर की बात है वे हाफ सेंचुरी तक नहीं लगा पाए. उनका हाई स्कोर 36 रन है.

पिछली बार गाबा में खेली थी 91 रनों की पारी - 2021 में टीम इंडिया ने जब ऑस्ट्रेलिया को टेस्ट में पहली बार गाबा मैदान पर हराया था तब जीत के हीरो शुभमन गिल भी थे. ऑस्ट्रेलिया के पहली पारी में 369 रनों के जवाब में टीम इंडिया 336 रनों पर सिमट गई थी. तब गिल ने महज 7 रन बनाए थे. लेकिन दूसरी पारी में उन्होंने अपने बल्ले से टीम इंडिया की जीत की नींव रख दी थी. टीम इंडिया को जीत के लिए 328 रनों का लक्ष्य मिला था तब ऋषभ पंत ने नाबाद 89 रनों की पारी खेली थी. हालांकि पंत से पहले गिल ने 91 रनों का महत्वपूर्ण योगदान दिया था.

न्यूजीलैंड ने 423 रन से जीता हैमिल्टन टेस्ट

रन के अंतर से इंग्लैंड पर सबसे बड़ी जीत, इंग्लिश टीम ने 2-1 से सीरीज जीती

नईदिल्ली, एजेंसी। न्यूजीलैंड ने हैमिल्टन टेस्ट में इंग्लैंड को 423 रन से हरा दिया है। यह कीवियों की इंग्लैंड पर रन के अंतर से सबसे बड़ी जीत है। तीसरे टेस्ट में 658 रन का टारगेट चेज कर रही इंग्लिश टीम 234 रन ही बना सकी। हालांकि, इंग्लैंड ने 3 मैचों की टेस्ट सीरीज 2-1 से जीत ली। टीम ने पहला मैच 8 विकेट और दूसरा मैच 323 रन से जीता था। सेडॉन पार्क में मैच के चौथे दिन मंगलवार को इंग्लैंड ने 18/2 के स्कोर से खेलना शुरू किया था। जैकब बिथेल ने 76 और जो रूट ने 54 रनों की पारियां खेलीं, जबकि गस एटकिंसन ने 43 रन का योगदान दिया।

न्यूजीलैंड के मिचेल सैंटनर ने पहली पारी में 76 रन बनाए और 3 विकेट लिए। उन्होंने दूसरी पारी में 49 रन बनाए और 4 विकेट लिए। इस प्रदर्शन के लिए उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला। इंग्लैंड के ऑलराउंडर हैरी ब्रूक को प्लेयर ऑफ द सीरीज चुना गया।

शनिवार को इंग्लैंड ने टॉस जीतकर पहले बॉलिंग चुनी। पहली पारी में न्यूजीलैंड ने 347 और इंग्लैंड ने 143 रन बनाए। न्यूजीलैंड ने दूसरी पारी 453 रन बनाए और इंग्लैंड 658 रन का टारगेट दिया।

न्यूजीलैंड की संयुक्त रूप से सबसे बड़ी जीत न्यूजीलैंड ने 423 रन से इंग्लैंड को हराया। रन के अंतर से यह टीम की संयुक्त रूप से सबसे बड़ी जीत रही। इससे पहले टीम ने 2018 में क्राइस्टचर्च में श्रीलंका को भी 423 रन से हराया था। इंग्लैंड के खिलाफ यह टीम की सबसे बड़ी जीत है। टिम साउदी का आखिरी टेस्ट मैच न्यूजीलैंड के तेज गेंदबाज टिम साउदी का यह आखिरी टेस्ट मैच रहा। उन्होंने सीरीज शुरू होने से पहले ही टेस्ट क्रिकेट से संन्यास का ऐलान कर दिया था। 35 साल के साउदी ने संन्यास का ऐलान करते हुए कहा था- यदि हमारी टीम डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए क्वालिफाई करती है, तो मैं उपलब्ध रहूंगा। तीसरे दिन न्यूजीलैंड दूसरी पारी में 453 पर ऑलआउट न्यूजीलैंड टीम दूसरी पारी में 453 रन पर ऑलआउट हुई। न्यूजीलैंड के स्टार बैटर केन विलियम्सन ने शतक लगाया। उन्होंने 204 बॉल पर 156 रन बनाए। उनके अलावा विल यंग और डेरिल मिचेल ने 60-60 रन बनाए। मिचेल सैंटनर ने 49 और रचिन रवींद्र ने 44 रन की पारी खेली। टॉम ब्लंडेल 44 रन बनाकर नाबाद रहे। इंग्लैंड के लिए जैकब बेथेल ने सबसे ज्यादा 3 विकेट झटके। बेन स्टोक्स और शोएब बशीर ने 2-2 विकेट लिए। थ्यू पॉट्स, गस एटकिंसन और जो रूट को 1-1 विकेट मिला।

कमेंट्री करते नजर आएंगे रॉबिन उथप्पा, इस टूर्नामेंट में निभाएंगे भूमिका

जोहानिसबर्ग, एजेंसी। भारत के पूर्व क्रिकेटर और 2007 टी20 विश्व कप विजेता रॉबिन उथप्पा 9 जनवरी से शुरू हो रहे बेतवे एसए 20 लीग के तीसरे सत्र में कमेंट्री करेंगे। 9 जनवरी से आठ फरवरी तक चलने वाली इस टी20 लीग का सीधा प्रसारण भारत में वायकॉम 18 के चैनलों और डिजिटल प्लेटफॉर्म स्पोटर्स 18 और जियो सिनेमा पर किया जाएगा। आयोजकों द्वारा जारी विज्ञप्ति के अनुसार उथप्पा के साथ कमेंट्री टीम में महान बल्लेबाज केविन पीटरसन, शॉन पोलाक, स्टुअर्ट ब्रॉड और क्रेस मौरिस भी होंगे। इनके अलावा आक्रामक बल्लेबाज एबी डिविलियर्स और मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर एम एमबांग्वा भी कमेंट्री टीम का हिस्सा होंगे।

इंडिया-ऑस्ट्रेलिया टेस्ट:

बूंद-बूंद से भरा सागर...

● आकाश दीप-बुमराह ने फॉलोऑन बचाया, टीम इंडिया के सीनियर बल्लेबाजों को सीखने की जरूरत

ब्रिस्बेन, एजेंसी। ब्रिस्बेन के गाबा में भारतीय टीम को फॉलोऑन से बचाने वाले जसप्रीत बुमराह और आकाश दीप ने दिखाया कि अगर टिककर खेला जाए तो गाबा की पिच इतनी मुश्किल भी नहीं हैं. दोनों ने सिंगल रन जोड़े और जरूरत पड़ने पर बाउंड्री भी मारी. कुल मिलाकर इससे टीम इंडिया के सीनियर बल्लेबाज खासकर विराट कोहली और रोहित शर्मा को सीखने की जरूरत है. जो दोनों ही इस मुकाबले की पहली पारी में बेहद सस्ते में आउट हो गए. बुमराह और आकाश दीप ने बूंद-बूंद से भरता है सागर की तर्ज पर एक-एक रन जोड़ा. गाबा टेस्ट का चौथा दिन (17 दिसंबर) भारत के पुछल्ले बल्लेबाजों आकाश दीप और जसप्रीत बुमराह के नाम रहा, जिन्होंने फॉलोऑन बचा लिया. स्टम्प के समय भारतीय टीम का स्कोर 252/9 था. भारतीय टीम अभी भी ऑस्ट्रेलिया से 193 रन पीछे है. आकाश दीप (27) और जसप्रीत बुमराह (10) क्रीज पर डटे हुए हैं. दोनों ने अब तक 39 रनों की साझेदारी की है.

भारत को फॉलोऑन बचाने के लिए 246 रन बनाने की जरूरत थी, जिसे आकाश दीप ने चौका जड़कर बचा लिया. जबकि एक समय टीम इंडिया के 213 रनों पर 9 विकेट गिर गए थे. ऑस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 445 रन बनाए थे. अब गाबा टेस्ट के पांचवें दिन का खेल 18 दिसंबर को शुरू होगा, जहां ऑस्ट्रेलिया की टीम को दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने के लिए उतरना ही होगा.

बुमराह और आकाश दीप ने जिस तरह की बल्लेबाजी की उससे उन्होंने टीम इंडिया के ... है. दोनों ने कंगारू टीम के हर गेंदबाज का जमकर सामना किया. आकाश दीप और बुमराह ने डिफेंस से लेकर शॉट्स तक... दोनों ही चीजों का उचित सामंजस्य दिखाया. बुमराह और आकाशदीप ने सिंगल रन लेकर लगातार स्ट्राइक रोटेट की.

विराट कोहली और रोहित गाबा की पहली पारी में भी फ्लॉप - ऑस्ट्रेलिया के 445 रनों के जवाब में भारत की पहली पारी में शुरुआत बेहद खराब रही. दूसरी ही गेंद पर उसने यशस्वी जायसवाल (4 रन) का विकेट गंवा दिया. यशस्वी बाएं हाथ के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क की गेंद पर फ्लिक शॉट खेलने की कोशिश में मिचेल मार्श को कैच थमा बैठे. फिर स्टार्क ने अपने अगले ओवर में शुभमन गिल (1 रन) को भी आउट कर दिया. शुभमन गिल का कैच भी मार्श ने लपका. विराट कोहली से अच्छे खेल की आस थी, लेकिन वह जोश हेजलवुड की गेंद पर विकेटकीपर एलेक्स कैरी के हाथों लपके गए. कोहली ने 16 गेंदों का सामना करते हुए 3 रन बनाए. फिर ऋषभ पंत (9 रन) ने भी टीम का साथ छोड़ दिया. पंत पैट कमिंस की गेंद पर विकेटकीपर कैरी को कैच थमा बैठे. पंत के आउट होने के बाद बारिश आ गई।

संक्षिप्त समाचार

सबरीमला मंदिर में 22 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने किए दर्शन, रेवेन्यू भी बढ़ा

सबरीमला, एजेंसी। केरल के सबरीमला मंदिर में 29 दिनों में 22.67 लाख से अधिक भक्तों ने भगवान अयप्पा के दर्शन किए, जो पिछले साल से 4.5 लाख ज्यादा हैं. त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड के अध्यक्ष पीएस. प्रशांत ने बताया, इस दौरान मंदिर का रेवेन्यू 163.89 करोड़ रुपये से अधिक रहा. जिसमें से लगभग आधा हिस्सा अरावन की बिक्री से आया, जो भगवान अयप्पा के भक्तों को दिया जाने वाला प्रसाद है. पिछले साल की तुलना में अरावन की बिक्री से आय में 15 करोड़ रुपये से अधिक की वृद्धि हुई है. त्रावणकोर देवस्वोम बोर्ड के अध्यक्ष पी एस प्रशांत ने कहा कि, इस साल मंदिर में तीर्थयात्रियों के लिए सुचारू दर्शन के लिए सभी सुविधाओं की व्यवस्था की गई है. साथ ही उन्होंने पुलिस सहित सभी विभागों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने तीर्थयात्रा को सफल बनाने के लिए देवस्वोम बोर्ड के साथ सहयोग किया. त्रावणकोर देवस्वोम के अध्यक्ष पीएस प्रशांत ने बताया कि, सबरीमला मंदिर तक पहुंचने के लिए पुल्लुमेदु और एरुमेली के पारंपरिक वन मार्गों से पैदल लंबी दूरी तय करने वाले तीर्थयात्रियों के लिए जल्द ही दर्शन की विशेष व्यवस्था की जाएगी. उन्होंने बताया कि, वन विभाग के सहयोग से इन मार्गों का उपयोग करने वाले तीर्थयात्रियों को एक विशेष टैग प्रदान किया जाएगा. त्रावणकोर देवस्वोम के अध्यक्ष ने बताया कि, तीर्थयात्री स्वामी अय्यप्पन रोड के माध्यम से पम्पा से मंदिर तक पहुंच सकते हैं, और जो लोग नीलिमाला मार्ग से जाना चाहते हैं, वे भी ऐसा कर सकते हैं. इसके अतिरिक्त, इन तीर्थयात्रियों के पास मरककोट्टम में सरमकुथी मार्ग को दरकिनार करते हुए चंद्रनंदन रोड के माध्यम से मंदिर में प्रवेश करने का विकल्प होगा. उन्होंने यह भी बताया कि नई प्रणाली जल्द ही लागू की जाएगी.

छत्तीसगढ़ के बालोद में ट्रक ने एसयूवी को मारी टक्कर; 6 लोगों की मौत, 7 अन्य घायल

बालोद, एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बालोद जिले में हुई एक भीषण सड़क दुर्घटना में 6 लोगों की मौके पर ही मौत हो गई और 7 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दुर्घटना सोमवार तड़के डोंडी थाना क्षेत्र के अंतर्गत भानुप्रतापपुर-दल्लीराजहरा मार्ग पर चौरापावड़ के पास हुई। घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एएसपी) अशोक जोशी ने सोमवार को हादसे के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भानुप्रतापपुर-दल्लीराजहरा मार्ग पर चौरापावड़ के पास एक ट्रक ने विपरीत दिशा से आ रही एसयूवी कार को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबर्दस्त थी कि हादसे में 6 लोगों की मौत हो गई, जबकि 7 अन्य घायल हो गए। घायल लोगों को राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज ले जाया गया है। हादसे के बाद आरोपी ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुसिस द्वारा उसकी तलाश की जा रही है। भाषा के अनुसार, पुलिस ने बताया कि पीड़ित जिले के गुंडरदेही क्षेत्र के निवासी थे। यह दुर्घटना रविवार देर रात डौंडी थाना क्षेत्र में हुई, जब एक पारिवारिक समारोह में शामिल होकर वापस लौट रहे थे। एक पुलिस अधिकारी ने बताया, वाहन और ट्रक की आमने-सामने की टक्कर हो गई। एसयूवी कार में सवार 13 लोगों में से छह की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि सात अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने बताया कि मृतकों में चार महिलाएं भी शामिल हैं। मृतकों की पहचान- सुमित्रा बाई कुंभकार (50), मनीषा कुंभकार (35), सगुन बाई कुंभकार (50) और इमला बाई (55), दुरपत प्रजापति (30) और एक नाबालिग लड़के जिग्नेश कुंभकार (7) के रूप में हुई है। अधिकारी ने बताया कि पांच महिलाओं और एक बच्चे समेत सात घायलों को स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया, जहां से उन्हें आगे के इलाज के लिए राजनांदगांव जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। उन्होंने बताया कि दुर्घटनावश मौत की रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और आगे की जांच जारी है।

बहन के बाद भाई पर भी भ्रष्टाचार की आंच, पूर्व सीएम के बेटे केटीआर पर फॉर्मूसा-ई रेसिंग मामले में जांच

हैदराबाद, एजेंसी। तेलंगाना में सियासत एक बार फिर गरमा गई है। भारतीय राष्ट्र समिति (बीआरएस) के कार्यकारी अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) के बेटे के.टी. रामा राव (केटीआर) एक बार फिर विवादों में हैं। फॉर्मूसा-ई रेसिंग मामले में 55 करोड़ रुपये के फंड के कथित गबन पर जांच की मांग ने नया तूफान खड़ा कर दिया है। केटीआर पर आरोप है कि उन्होंने बतौर नगर प्रशासन मंत्री यह राशि बिना कैबिनेट की मंजूरी के डायवर्ट की।

हालांकि, केटीआर ने इन आरोपों को खारिज करते हुए इसे कांग्रेस सरकार का ध्यान भटकाने वाला खेल बताया। उन्होंने कहा, मैं किसी भी जांच के लिए तैयार हूं। यह सब कांग्रेस के चुनावी वादों की नाकामी से ध्यान हटाने की कोशिश है। यह बयान तब आया है जब हाल ही में उनकी बहन

और बीआरएस नेता के. कविता भी शराब घोटाले में ईडी की जांच का सामना कर रही हैं।

इंटरव्यू में केटीआर ने स्पष्ट किया कि तेलंगाना की राजनीति में फिलहाल कांग्रेस उनकी पार्टी के लिए मुख्य प्रतिद्वंद्वी है। उन्होंने भाजपा को छोटा प्रतिद्वंद्वी करार देते हुए कहा, बीजेपी का यहां संगठनात्मक ढांचा मजबूत नहीं है। उनके मंत्री तो कांग्रेस के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के सबसे बड़े समर्थक बन गए हैं।

उन्होंने कांग्रेस सरकार पर तीखा हमला करते हुए मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी पर आरोप लगाया कि उन्होंने अमृत योजना के टेंडरों में गड़बड़ी की और अपने रिश्तेदारों को अनुबंध दिए। केटीआर ने इसे पद के लाभ का मामला बताते हुए इसे कर्नाटक और झारखंड के विवादों जैसा बताया। बीआरएस के भीतर उठापटक पर केटीआर ने कहा, हमारे 10 विवादित विधायक पार्टी छोड़ चुके हैं। लेकिन अब यह सिलसिला रुक गया है। हालिया विधानसभा चुनावों में हार पर उन्होंने परसेप्शन मैनेजमेंट और कम्युनिकेशन की कमजोरियों को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने स्वीकार किया कि पार्टी अपने 10 वर्षों के कार्यकाल की उपलब्धियों- जैसे 1.60 लाख युवाओं को रोजगार और सरकारी कर्मचारियों के लिए 73प्रतिशत वेतन वृद्धि को जनता तक सही तरीके से पहुंचाने में नाकाम रही। केसीआर की विधानसभा से गैरमौजूदगी पर केटीआर ने कहा, अभी के लिए हम रेवंत रेड्डी का सामना करने के लिए पर्याप्त हैं। केसीआर समय आने पर जरूर आएंगे। उन्होंने जोर दिया कि ध्यान कांग्रेस के छह चुनावी वादों पर होना चाहिए, जो अभी तक अधूरे हैं।

बेंगलुरू में समस्तीपुर के एक इंजीनियर की मौत, परिजनों

समस्तीपुर, एजेंसी। बिहार के समस्तीपुर जिले के एक इंजीनियर की मौत बेंगलुरू में हुई। परिवार ने मौत पर संदेह जाहिर किया है। इंजीनियर समस्तीपुर शहर के वार्ड 36 मोहल्ला बहादुरपुर के रिटायर्ड रेलकर्मी दिनेश राय का पुत्र रवि कुमार बताया जा रहा है। वह बेंगलुरू की एक निजी कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर था और दो साल से बेंगलुरू में रहकर नौकरी करता था। वह आरएमजेड गैलरिया अपार्टमेंट ऐलहनका में रहता था।

परिवार के लोगों ने इसे आत्महत्या नहीं हत्या करार दिया है। लोगों का कहना था कि अगर रवि ने आत्महत्या की होती तो कोई सुसाइड नोट छोड़ा होता लेकिन उसके कमरे में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। साथ ही उसके साथ रहने वाले 3 लोग भी गायब थे। इस मामले में बेंगलुरू में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। मृतक के चाचा उमेश कुमार ने बताया कि शनिवार सुबह घटना हुई थी लेकिन बेंगलुरू पुलिस ने शनिवार की रात उन्हें जानकारी दी। जिसके बाद परिवार के लोग हवाई यात्रा कर बेंगलुरू पहुंचे। पोस्टमार्टम के बाद उन्हें शव सौंपा गया।

उन्होंने कहा कि उनके भतीजे को कंपनी द्वारा हिसाब करने के लिए बुलाया गया था। वह सॉफ्टवेयर इंजीनियर था और ऑनलाइन एक्जाम सेंटर में काम करता था। उसके साथ अपार्टमेंट में तीन और व्यक्ति भी रहते थे, जो इस घटना के बाद से फरार हैं। वहां पहुंचने के बाद उनसे संपर्क की कोशिश की गई लेकिन वह नहीं आए। उन्होंने शक जाहिर किया कि रवि की हत्या की गई है और इसे आत्महत्या का रूप दिया गया है। अगर रवि ने आत्महत्या की होती तो कोई सुसाइड नोट छोड़ा होता। यह पूरी तरह से हत्या का मामला है।

गुरुग्राम में जेल की रोटी बोटी रेस्तरां पर बवाल; तोड़ी गाड़ियां, धू-धू कर जली कार

गुरुग्राम एजेंसी। गुरुग्राम के सोहना चौक के पास पुराने जेल कॉम्प्लैक्स के पास रविवार को देर रात को एक रेस्तरां संचालकों और लोगों के एक गुट के बीच खाना खाने को लेकर जमकर बवाल हो गया। दोनों पक्षों में मारपीट हुई। इसमें दो सगे भाईयों समेत तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। झगड़े के दौरान पार्किंग में खड़े तीन ऑटो, दो बाइक समेत अन्य वाहनों में तोड़फोड़ की गई। उसके बाद भी विवाद नहीं थमा। सोमवार को सुबह दोबारा से एक गुट ने रेस्टोरेंट जेल की रोटी-बोटी में तोड़फोड़ की। इस दौरान पार्किंग में खड़ी एक कार में आग लग गई।

हालांकि अभी तक यह साफ नहीं हो पाया है कि कार में आग लगी या लगाई गई। गुरुग्राम पुलिस ने बताया कि करीब दो दर्जन लोगों ने सोहना चौक के पास पुराने जेल परिसर में स्थित रेस्तरां में कथित तौर पर बवाल काटा। भीड़ ने कथित तौर पर रेस्तरां संचालक समेत तीन लोगों के साथ मारपीट की और वहां खड़ी कई गाड़ियों में तोड़फोड़ की। पुलिस सूत्रों के अनुसार, जिस जगह पर हमला हुआ, वहां ऐसे लोगों की भीड़ लगी रहती है जो रेस्टोरेंट के सामने खुलेआम शराब पीते और बेचते हैं। इस पर रेस्टोरेंट संचालक ने आपत्ति जताई थी। घटना की सूचना पर रात और सोमवार को सुबह पुलिस मौके पर पहुंची। वहीं दमकल टीम ने कार में लगी आग पर काबू पाया। शिवाजी नगार थाना पुलिस ने मामले में जांच शुरू कर दी है। अभी तक शिकायत नहीं मिलने पर मामला दर्ज नहीं हुआ है।इस्लामपुर के रहने वाले हरीश शर्मा का सोहना चौक के समीप जेल की रोटी बोटी के नाम से रेस्तंरा है। हरीश ने बताया कि रविवार रात रेस्तंरा पर उनका भाई अरुण और दोस्त मोहित थे। आरोप है कि रात 11:30 बजे 20 से ज्यादा लोग आ गए और मारपीट करने लगे। हमलावरों ने रेस्तंरा में तोड़फोड़ की। भीड़ ने दो बाइकों में तोड़फोड़ कर उन्हें क्षतिग्रस्त कर दिया। हमले में हरीश, अरुण और मोहित को चोट आई।

हरीश शर्मा ने आरोप लगाया कि हमलावरों के पास हथियार थे। हमलावरों की भीड़ ने मोहित के सिर पर बोतल मार कर चोट पहुंचाई जबकि अरुण पर चाकू से हमला किया।

हिमाचल में अब सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को नहीं मिलेगी बिजली सब्सिडी, नया आदेश कब से लागू?

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश की सुखविंदर सिंह सुक्खू की सरकार ने एक बड़ा फैसला लिया है। इसके तहत हिमाचल प्रदेश के सरकारी अधिकारियों को नए साल से बिजली पर कोई सब्सिडी नहीं दी जाएगी। यह निर्णय प्रदेश सरकार के वित्तीय सुधारों के हिस्से के रूप में लिया गया है। इससे राज्य की वित्तीय स्थिति को मजबूत किया जा सकेगा। मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में सोमवार को हुई हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड की समीक्षा बैठक में यह फैसला लिया गया।

ग्रेड-1 और ग्रेड-2 अधिकारियों पर लागू: हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बैठक के दौरान ऐलान किया कि 1 जनवरी 2025 से प्रदेश सरकार के ग्रेड-1 और ग्रेड-2 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बिजली सब्सिडी नहीं दी जाएगी। इस निर्णय के पीछे मुख्य कारण प्रदेश सरकार द्वारा विद्युत बोर्ड की वित्तीय स्थिति को सशक्त

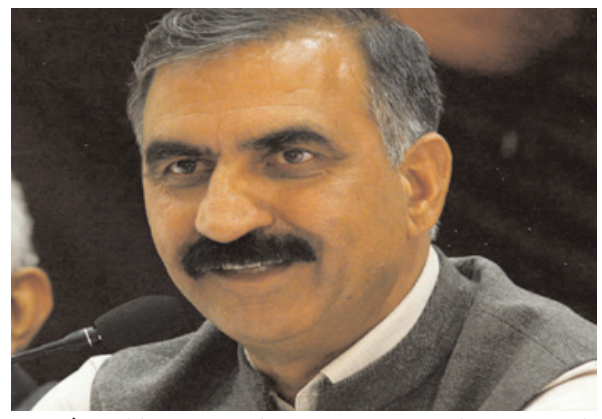

करना है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार विद्युत बोर्ड के सुधार के लिए निरंतर प्रयास कर रही है और यह कदम उसी दिशा में उठाया गया है।

500 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आय: मुख्यमंत्री ने बताया कि सरकार ने हाल ही में उद्योग और व्यावसायिक उपभोक्ताओं के लिए विद्युत दरों में युक्तिकरण किया है जिससे लगभग 500 करोड़ रुपये की वार्षिक अतिरिक्त आय सुनिश्चित हुई है। यह कदम प्रदेश सरकार की वित्तीय स्थिति को मजबूत करने और विद्युत बोर्ड की कार्यप्रणाली में सुधार के उद्देश्य से उठाया गया है।

विद्युत बोर्ड के लिए अतिरिक्त फंड: सीएम सुक्खू ने यह भी घोषणा की कि प्रदेश सरकार विद्युत बोर्ड के लिए 100 करोड़ रुपये का अतिरिक्त कॉरप्स फंड प्रदान करेगी। यह कदम बोर्ड की वित्तीय स्थिति को और भी मजबूत करने के लिए उठाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे बोर्ड के कार्यों में नवोन्मेषी उपायों का समावेश करें ताकि विद्युत सेवा में सुधार और गुणवत्तापूर्ण आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके।

मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने बैठक में अधिकारियों को निर्देश दिए कि वे बोर्ड की कार्यप्रणाली में सुधार के लिए नवोन्मेषी उपायों को लागू करें। इसके साथ हीउन्होंने यह भी कहा कि विद्युत बोर्ड में लाइनमैन और टी-मेट की भर्तियां की जाएंगी। ताकि फील्ड स्टाफ की कमी को दूर किया जा सके। फील्ड स्टाफ की सही तैनाती से विद्युत आपूर्ति सेवा में गुणवत्ता भी सुनिश्चित की जाएगी।

हिमाचल प्रदेश सरकार ने इस साल जुलाई में हुई कैबिनेट बैठक में यह निर्णय लिया था कि राज्य के धनाढ्य उपभोक्ताओं को दी जा रही बिजली सब्सिडी को समाप्त किया जाएगा। इस निर्णय का उद्देश्य राज्य सरकार के वित्तीय संसाधनों का सही उपयोग करना और सब्सिडी का लाभ जरूरतमंद उपभोक्ताओं तक पहुंचाना है।

पाकिस्तान में गृहयुद्ध खतरा ! मुख्यमंत्री बोले- अब हथियार लेकर निकलेंगें सड़कों पर, टेंशन में शहबाज सरकार

पेशावर, एजेंसी। पाकिस्तान में खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर ने इमरान खान की रिहाई न होने पर सशस्त्र विद्रोह की धमकी देकर देश की राजनीति में हलचल मचा दी है। गंडापुर ने कहा है कि अगर पूर्व प्रधानमंत्री और तहरीक-ए-इंसाफ के नेता इमरान खान को जेल से रिहा नहीं किया गया, तो उनकी पार्टी के कार्यकर्ता बंदूकें लेकर सड़कों पर उतरेंगे। गंडापुर के इस बयान के बाद पाकिस्तान में गृहयुद्ध की आशंका और बढ़ गई है। पीटीआइ के बीच बढ़ता टकराव न केवल राजनीतिक अस्थिरता का संकेत देता है, बल्कि देश में कानून-व्यवस्था की स्थिति को और खराब कर सकता है।एबटाबाद में एक सभा को संबोधित करते हुए गंडापुर ने इमरान खान से शांति की अपील बंद करने को कहा। उन्होंने कहा, इमरान खान! अल्लाह के लिए, अब शांति की वकालत मत करो। अगली बार हम हथियारों के साथ निकलेंगे और दिखाएंगे कि कौन भागता है। यह बयान तब आया है जब इमरान खान ने अपनी मांगों के समर्थन में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की घोषणा की है। इमरान खान ने अपनी पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की पांच

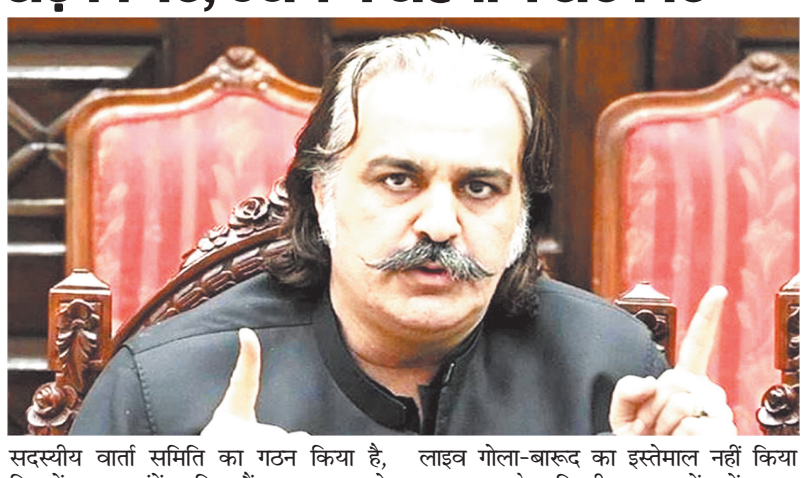

सदस्यीय वार्ता समिति का गठन किया है, जिसमें प्रमुख मांगें शामिल हैं इमरान खान ने चेतावनी दी है कि अगर उनकी मांगें नहीं मानी गईं, तो 16 दिसंबर से व्यापक आंदोलन शुरू किया जाएगा। पिछले महीने इस्लामाबाद में इमरान खान की रिहाई को लेकर हुए पीटीआई प्रदर्शन में कथित तौर पर 12 कार्यकर्ताओं की मौत और 1,000 से अधिक गिरफ्तारियां हुई थीं। हालांकि, सरकार ने इन दावों को खारिज करते हुए कहा कि प्रदर्शनकारियों के खिलाफ लाइव गोला-बारूद का इस्तेमाल नहीं किया गया। इसके विपरीत, झड़पों में चार सुरक्षाकर्मियों की मौत का दावा किया गया। गंडापुर ने पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार को फासीवादी बताते हुए कहा कि यह सरकार संविधान, कानून और नैतिकता का हनन कर रही है। उन्होंने सूचना मंत्री अत्ता तरार और रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ सहित अन्य नेताओं पर तीखा हमला बोला।

ब्राजील के राष्ट्रपति ने तख्तापलट का लगाया आरोप, कहा- देंगे कड़ी सजा

साओ पाउलो, एजेंसी। ब्राजील के राष्ट्रपति लुईस इनासियो लूला डा सिल्वा ब्रेन सर्जरी के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज हो गए हैं. उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया और 2022 में तख्तापलट की कोशिश में शामिल लोगों को कड़ी सजा देने का ऐलान किया है. लूला के डिस्चार्ज होने के तुरंत बाद सिरियो लिबनेस अस्पताल में यह प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित हुई जो पिछले सप्ताह हुई सर्जरी के बाद से उनकी पहली सार्वजनिक उपस्थिति थी. उनकी मेडिकल टीम और प्रथम महिला रोसांगेला डा सिल्वा उनके साथ मौजूद थीं. लूला ने हिरासत में लिए गए रिटायर जनरल वाल्टर ब्रागा नेट्टो का जिक्र करते हुए कहा, मेरा मानना है कि जनरल ब्रागा को निर्दोष होने का पूरा अधिकार है. ब्रागा ने पूर्व राष्ट्रपति जेयर बोल्सोनारो के अधीन रक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया था. जांच में हस्तक्षेप करने के प्रयास के आरोपी ब्रागा नेट्टो को सुप्रीम फेडरल कोर्ट के आदेश के बाद शनिवार को गिरफ्तार कर किया गया. फेडकरल पुलिस के अनुसार, बोल्सोनारो कथित तौर पर 2022 में लूला को राष्ट्रपति पद संभालने से रोकने के लिए तख्तापलट की योजना बना रहे थे. समाचार एजेंसी सिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार लूला ने कहा कि राष्ट्रपति की हत्या की साजिश में उच्च पदस्थ सैन्य अधिकारियों का शामिल होना अस्वीकार्य है. छुट्टी मिलने के बाद लूला गुरुवार तक साओ पाओलो स्थित अपने आवास पर काम करेंगे. उसके बाद उन्हें राजधानी ब्रासीलिया की यात्रा के लिए परमिट प्राप्त करने के लिए सीएटी स्कैन कराना होगा, ताकि वे प्लानाल्टो पैलेस में अपना काम फिर से शुरू कर सकें. 79 वर्षीय लूला ने गंभीर सिरदर्द की शिकायत की थी, जब उनके मस्तिष्क और मेनिन्जियल झिल्ली के बीच हेमेटोमा पाया गया तो उन्हें इमरजेसी सर्जरी के लिए भर्ती किया गया था. डॉक्टरों ने पुष्टि की कि हेमेटोमा से कोई चोट या अन्य बीमारियां नहीं हुई हैं. यह मामला अक्टूबर महीने के अंत में राष्ट्रपति निवास, पैलेसियो डा अलवोराडा में लूला के गिरने से जुड़ा था, जब उनके सिर के पिछले हिस्से में चोट लगी थी और पांच टांके लगे थे, जिसके कारण उन्हें रूस में ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में भाग लेने की अपनी यात्रा को ऐन मौके पर कैंसिल करना पड़ा था. ब्राजील के सामाजिक संचार सचिव पाउलो पिमेंटा ने पुष्टि की है कि डा सिल्वा 2026 में फिर से चुनाव लड़ेंगे।

जेलेंस्की और पुतिन से नरसंहार रुकवाने के लिए बात करेंगे ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को कहा कि वह यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से लगभग तीन साल से चल रहे युद्ध को समाप्त करने के लिए बात करेंगे। ट्रंप के मुताबिक वो इस नरसंहार को रुकवाने की कोशिश करेंगे। जनवरी में ट्रंप के व्हाइट हाउस में प्रवेश से पहले ही दोनों पक्षों में जंग में बढ़त हासिल करने की होड़ लगी है। हालांकि अमेरिका से समर्थन प्राप्त करने वाले देश यूक्रेन को इस बात की भी चिंता है कि उसे क्षेत्र की शांति के बदले कुछ रियायतें देने को मजबूर होना पड़ सकता है।

दरअसल ट्रंप, जो बाइडेन प्रशासन द्वारा मास्को के खिलाफ कीव को प्रदान की गई अरबों डॉलर की सहायता को

लेकर सवाल खड़े करते रहे हैं। दोनों देश के राष्ट्रपतियों से बात कर नरसंहार को रोकने की बात डोनाल्ड ट्रंप ने सोमवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही। ट्रंप ने कहा, हम राष्ट्रपति पुतिन से बात करेंगे साथ ही हम जेलेंस्की और यूक्रेन के प्रतिनिधियों से भी बात करेंगे।

उन्होंने युद्ध का जिक्र करते हुए कहा, हमें इसे रोकना होगा, यह नरसंहार है। टिप्पणी ऐसे समय में की गई है जब रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने यूक्रेन में अपनी सेना के आगे बढ़ते रहने के कदम की सराहना करते हुए कहा था कि ये वर्ष ऐतिहासिक रहा। बता दें कि ट्रंप ने बार-बार दावा किया है कि वह संघर्ष को जल्द से जल्द समाप्त करने पर काम करेंगे। हालांकि उन्होंने यह नहीं बताया कि वह ऐसा कैसे करेंगे।

ज्ञात हो कि ट्रंप ने इस महीने पेरिस में फ्रांसीसी नेता इमैनुएल मैक्रों द्वारा आयोजित एक बैठक में जेलेंस्की से मुलाकात की थी, जिसके बाद यूक्रेनी नेता ने दावा किया था कि कीव एक स्थायी शांति और सुरक्षा गारंटी की मांग कर रहा है। यूक्रेन के मित्र और पड़ोसी देश पोलैंड ने सोमवार को अपील की कि कीव को शांति वार्ता के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। पोलैंड के विदेश मंत्री राडोस्लाव सिकोर्स्की ने कहा कि ऐसा करने के लिए पीड़ित को नहीं बल्कि हमलावर को प्रोत्साहित और मजबूर किया जाना चाहिए।

यूक्रेन युद्ध के एक और शीतकाल में प्रवेश कर रहा है, क्योंकि रूसी हमलों के कारण उसका ऊर्जा ग्रिड पहले ही बुरी तरह प्रभावित हो चुका है। साथ ही ट्रंप ने यह बात ऐसे समय कही, जब रूसी सेनाएं पूर्वी शहर पोक्रोवस्क के प्रवेश द्वार पर पहुंच चुकी हैं। वर्ष के अंत में आयोजित बैठक में शीर्ष सैन्य जनरलों को संबोधित करते हुए पुतिन ने सोमवार को दावा किया कि उनके सैनिकों का इस युद्ध के अग्रिम मोर्चे पर दबदबा कायम है।

कनाडाई पीएम ट्रूडो को झटका, वित्त मंत्री क्रिस्टिया फ्रीलैंड का इस्तीफा

टोरंटो, एजेंसी। कनाडा की वित्त मंत्री क्रिस्टिया फ्रीलैंड ने इस्तीफा दे दिया है. कनाडा के पीएम जस्टिन ट्रूडो की सबसे शक्तिशाली मंत्री थीं. फ्रीलैंड ने सोमवार को घोषणा की कि वह कैबिनेट से इस्तीफा दे रही हैं, क्योंकि ट्रूडो लोकप्रियता में गिरावट से जूझ रहे हैं. ट्रूडो सरकार की सबसे ताकतवर मंत्री फ्रीलैंड के इस्तीफे को तगड़ा झटका माना जा रहा है. फ्रीलैंड, जो उप प्रधानमंत्री भी थीं, ने कहा कि ट्रूडो ने उन्हें शुक्रवार को बताया था कि वह अब उन्हें वित्त मंत्री के रूप में काम करते हुए नहीं देखना चाहते हैं और उन्होंने मुझे कैबिनेट में एक और पद की पेशकश की. फ्रीलैंड ने कहा कि इस प्रस्ताव पर चिंतन करने के बाद मैंने निष्कर्ष निकाला है कि मेरे लिए मंत्रिमंडल से इस्तीफा देना ही एकमात्र ईमानदारी वाला रास्ता है.फ्रीलैंड ने ट्रूडो को एक्स पर पोस्ट किए गए एक पत्र में कहा, पिछले कई हफ्तों से, आप और मैं कनाडा के लिए आगे बढ़ने के सर्वोत्तम रास्ते को लेकर असमंजस में हैं. वहीं स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि फ़्रीलैंड और ट्रूडो अस्थायी कर छूट और अन्य व्यय उपायों के प्रस्ताव पर भिड़ गए थे. वहीं बताया जा रहा है कि फ्रीलैंड के स्थान पर बैंक ऑफ कनाडा के पूर्व गवर्नर मार्क कार्नी को नया वित्त मंत्री बनाया जा सकता है. कार्नी इससे पूर्व पीएम ट्रूडो के आर्थिक सलाहकार के रूप में भी काम कर चुके हैं।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129